

सम्पादक :—

श्री० रामरखसिंह सहगल

‘भविष्य’ का चन्दा

वार्षिक चन्दा ... ६) २०

छः माहों चन्दा ... ५) २०

तिमाहो चन्दा ... ३) २०

एक प्रति का मूल्य ... ४)

Annas Three Per Copy

भविष्य

सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

आध्यात्मिक स्वराज्य हमारा ध्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं, तब तक हमें इसका भय नहीं, कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

तार का पता :—

‘भविष्य’ इलाहाबाद

एक प्रार्थना

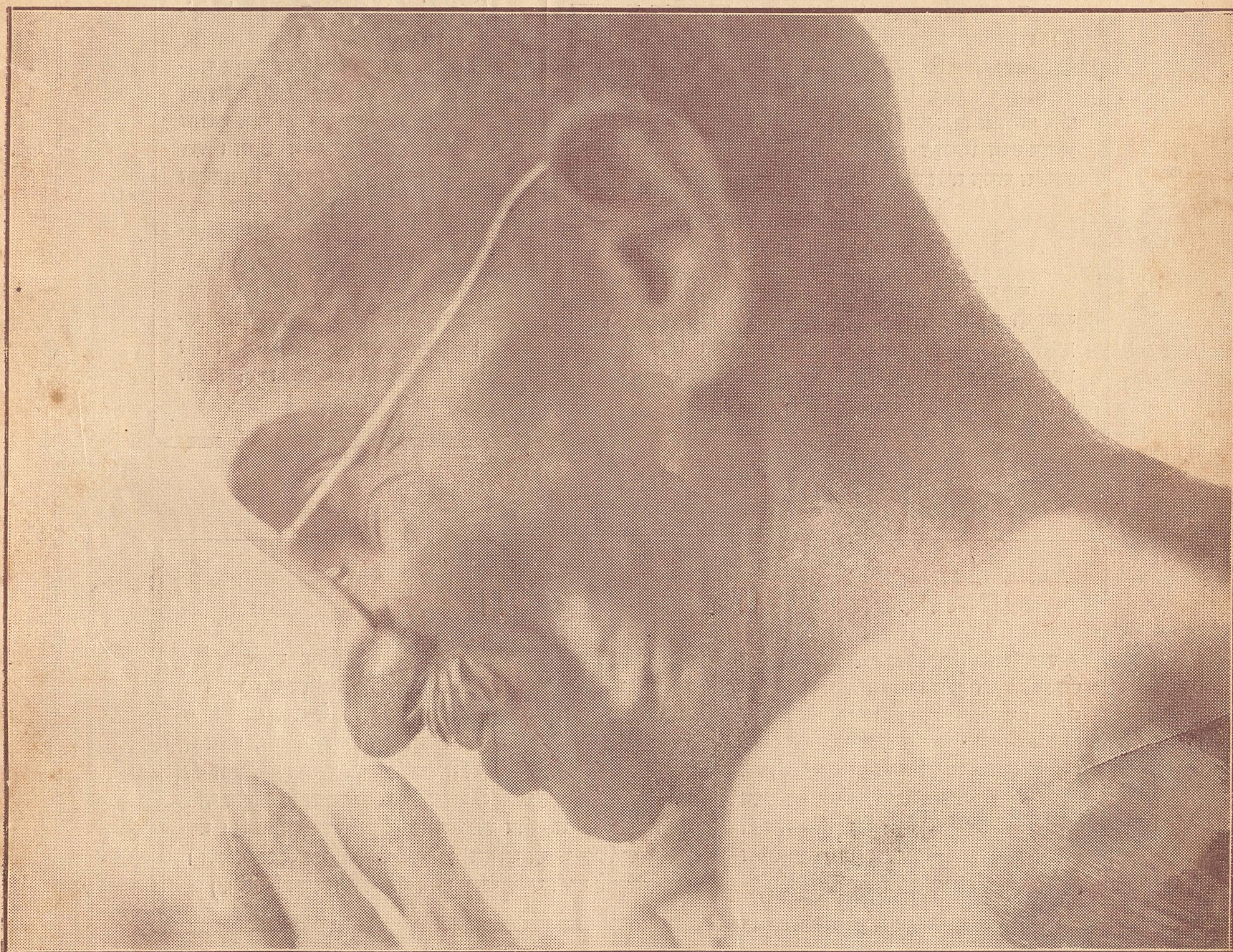
वार्षिक चन्दे अथवा फो कॉपी के मूल्य में कुछ भी नुकताचीनी करने में पहिले मित्रों को ‘भविष्य’ में प्रकाशित अलभ्य सामग्रो और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टि-पात करना चाहिए !

वर्ष १, खण्ड २

इलाहाबाद—बृहस्पतिवार; ५ मार्च, १९३१

संख्या ११, पूर्ण संख्या २३

प्रेम, शान्ति, ऐक्य, नम्रता और समता की सजीव प्रतिमा



नवयुग-नाटक-सूत्रधार तुम,
शान्त क्रान्ति के पूज्य-पिता,
तुममें वज्रों की दृढ़ता है
और कुसुम की कोमलता !
छोटे से तन के भीतर है
छिपा क्षीर-सागर सा मन !
नेता भी हो, परमहंस भी,
वह हंसमुख मोहक आनन !

सब से बड़े, परन्तु बन्धु हो—
तुम सब से छोटे जन के,
मृगपति पावनता कानन के
आश्वासन गिरते मन के।
परहित जीवी, अपनेपन के
रूप, जगत जीवन की आन,
भारत-गत-वैभव प्रमाण गुरु
इस युग के आदर्श प्रधान।

विदेशियों की चरम मुग्धता,
गर्व-नम्रता के अभिमान,
सरस्वती के सर्वश्रेष्ठ तुम—
सुवन, वचन पटुता रसखान !
त्याग-मूर्ति, अनुराग-मूर्ति तुम
नीति-निपुणता सरल सुजान,
सब धन त्यागी, यनिक श्रेष्ठ तुम
भारत भावी-भाग्य विधान।

दुख सहने को, सुख देने को
हुआ तुम्हारा है अवतार,
जग-सेवक बन, जन-सेवित हो
भार-हरण लेकर गुरु भार !
दोषपूर्ण भी पास तुम्हारे
आकर हो जाता निर्दोष,
तुम्हें चरम गौरव कह कर भी
होता नहीं हमें सन्तोष।

विद्याविनोद-ग्रन्थमाला

की
विख्यात पुस्तकें

मानिक-मन्दिर

यह बहुत ही सुन्दर, रोचक, मौलिक, सामाजिक उपन्यास है। इसके पढ़ने से आपको पता लगेगा कि विषय-वासना के भक्त कैसे चञ्चल, अस्थिर-चित्त और मधुर-भाषी होते हैं। अपनी उद्देश्य-पूर्ति के लिए वे कैसे-कैसे जघन्य कार्य तक कर डालते हैं और अन्त में फिर उनकी कैसी दुर्दशा होती है—इसका बहुत ही सुन्दर तथा विस्तृत वर्णन किया गया है। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल तथा मधुर है। मूल्य २॥ स्थायी ग्राहकों से १॥=)

मनोरमा

यह वही उपन्यास है, जिसने एक बार ही समाज में कान्ति मचा दी थी !! बाल और वृद्ध-विवाह से होने वाले भयङ्कर दुष्परिणामों का इसमें नग्न-चित्र खींचा गया है। साथ ही हिन्दू-विधवा का आदर्श जीवन और पतिव्रत-धर्म का बहुत सुन्दर वर्णन है। मूल्य केवल २॥ स्थायी ग्राहकों से १॥=)

नयन के प्रति

हिन्दी-संसार के सुविख्यात तथा 'चाँद'-परिवार के सुपरिचित कवि आनन्दीप्रसाद जी की नौजवान लेखनी का यह सुन्दर चमत्कार है। श्रीवास्तव महोदय की कविताएँ भाव और भाषा की दृष्टि से कितनी सजीव होती हैं—सो हमें बतलाना न होगा। इस पुस्तक में आपने देश की प्रस्तुत हीनावस्था पर अश्रुपात किया है। जिन ओज तथा करुणापूर्ण शब्दों में आपने नयनों को धिकारा और लज्जित किया है, वह देखने ही की चीज़ है—ब्यक्त करने की नहीं। पढ़ते ही तबियत फड़क उठती है। छुपाई-सफ़ाई दर्शनीय ! दो रङ्गों में छपी हुई इस रचना का न्योछावर लागत-मात्र केवल १=) ; स्थायी ग्राहकों से १॥ मात्र !

शुक्र और सोफ़िया

इस पुस्तक में पूर्व और पश्चिम का आदर्श और दोनों की तुलना बड़े मनोहर ढङ्ग से की गई है। यूरोप की विलास-प्रियता और उससे होने वाली अशान्ति का विस्तृत वर्णन किया गया है। शुक्र और सोफ़िया का आदर्श जीवन, उनकी निःस्वार्थ देश-सेवा, दोनों का प्रणय और अन्त में संन्यास लेना ऐसी रोमाञ्चकारी कहानी है कि पढ़ते ही हृदय गद्गद हो जाता है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २॥

गौरी-शङ्कर

आदर्श-भावों से भरा हुआ यह सामाजिक उपन्यास है। शङ्कर के प्रति गौरी का आदर्श-प्रेम सर्वथा प्रशंसनीय है। बालिका गौरी को धूर्तों ने किस प्रकार तङ्ग किया। बेचारी बालिका ने किस प्रकार कष्टों को चीर कर अपना मार्ग साफ़ किया, अन्त में चन्द्रकला नाम की एक वेश्या ने उसकी कैसी सच्ची सहायता की और उसका विवाह अन्त में शङ्कर के साथ कराया। यह सब बातें ऐसी हैं, जिनसे भारतीय स्त्री-समाज का मुखोज्ज्वल होता है। यह उपन्यास निश्चय ही समाज में एक आदर्श उपस्थित करेगा। छुपाई-सफ़ाई सभी बहुत साफ़ और सुन्दर है। मूल्य केवल ३॥

व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

इस संस्था के प्रत्येक शुभचिन्तक और दूरदर्शी पाठक-पाठिकाओं से आशा की जाती है कि यथाशक्ति 'भविष्य' तथा 'चाँद' (हिन्दी अथवा उर्दू-संस्करण) का प्रचार कर, वे संस्था को और भी अधिक सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे !!

भविष्य

पाठकों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस संस्था के प्रकाशन विभाग द्वारा जो भा पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, वे एक मात्र भारतीय परिवारों एवं व्यक्तिगत मङ्गल-कामना को दृष्टि में रख कर प्रकाशित की जाती हैं !!

वर्ष १, खण्ड २

इलाहाबाद—बृहस्पतिवार—५ मार्च, १९३१

संख्या ११, पूरा संख्या २३

श्रीरामरखसिंह सहगल गिरफ्तार

'भविष्य' कार्यालय पर सशस्त्र-पुलिस का धावा
श्री० दुर्गादेवी के लिए मातृ-मन्दिर पर पुलिस का मोर्चा
अचार और पानी के मटकों में बमों की तलाश
'चाँद' कार्यालय तथा मातृ-मन्दिर में क्रान्तिकारियों की खोज
फेड़ खोद कर देखे गए :: 'चाँद' बुकडिपो की तलाशी
संस्था के चारों ओर चौबीसों घण्टे खुफिया पुलिस का पहरा

यों तो इस संस्था पर पुलिस की कृपा सदा से बनी रही है, पर गत २८वीं फरवरी को तो उन्होंने विशेष दया कर दी। केवल 'चाँद' और 'भविष्य' कार्यालय पर ही नहीं, वरन् इलाहाबाद, चौक के 'चाँद' बुक-डिपो, मातृ-मन्दिर और बेबी रोड पर श्री० सहगल जी के एक बङ्गले पर भी उनकी दया-दृष्टि जा पड़ी।

गत तारीख २८ फरवरी को सुबेरे ५ बजे करीब ४०-४२ सशस्त्र पुलिस के सिपाहियों ने 'चाँद' कार्यालय को चारों ओर से घेर लिया। कुछ देर के लिए बाहर वालों को भीतर और भीतर वालों को बाहर जाने की मनाही कर दी गई।

सहगल जी उस समय सुख की नींद सो रहे थे। रात भर के परिश्रम के बाद, केवल कुछ ही घण्टे पहले उन्हें सोने का समय मिला था। अचानक नौकर ने जाकर उन्हें जगाया। साथ ही पुलिस के हथियारबन्द सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब भी उनके सोने के कमरे में आ धमके, और अपनी शुभकामना (तलाशी लेने की) सहगल जी पर प्रकट की। प्रेस बन्द था, वह खोला गया। प्रेस के सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब सोए हुए थे, वे जगाए गए। प्रेस का कोना-कोना छान डाला गया। किन्तु दुःख है कि पुलिस को वहाँ कुछ भी हाथ न लगा। इसके बाद सम्पादकीय विभाग की तलाशी ली गई, पर यहाँ से भी बेचारों को विफल-मनोरथ ही लौटना पड़ा। तदनन्तर सहगल जी के कमरे की तलाशी ज़रा विशेष सावधानी से ली गई। सियाही के डब्बे भी उलट-पलट कर देखे गए। सौभाग्यवश इन्स्पेक्टर साहब की दृष्टि एक कागज़ पर जा पड़ी, जिस पर लिखा था, 'कार्टिज'। बस उनके हर्ष का पारावार नहीं रहा, किन्तु जब उन्हें समझाया गया कि यह 'कार्टिज', बन्दूक की गोली नहीं, बल्कि एक पत्र का नाम है, तो हज़रत के चेहरे का रङ्ग ज़रा फ़ीका पड़ गया।

इसके बाद सहगल जी के रसोई-घर की ओर पुलिस लपकी। वहाँ खाद्य पदार्थ तो कुछ था नहीं, केवल रात के उच्छिष्ट बर्तन रक्खे हुए थे। खैर, इन्हें ख़ूब टटोल कर देख लिया गया। इसके बाद पुलिस बड़े शौक से पाख़ाने की ओर बढ़ी, किन्तु अफ़सोस, वहाँ से भी

निराश ही लौटना पड़ा! प्रेस के सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब के घर भी यही अभिनय किया गया। उनका बक्स खोला गया, एक-एक कर कुल चीज़ें देखी-भाली गई, पर कुछ नहीं मिला। इसी तरह अन्यान्य कई नौकरों के कमरे भी ख़ूब सावधानी से टटोले गए, परन्तु कोई आश्चर्यजनक वस्तु न मिली।

'चाँद' कार्यालय से केवल एक या दो साधारण चिट्ठियाँ पुलिस अपने साथ ले गई है। यह तलाशी



श्री० रामरखसिंह सहगल

प्रायः ११ बजे समाप्त हुई। मातृ-मन्दिर की तलाशी और भी तत्परता तथा सावधानी से ली गई। पुलिस को शायद यह सन्देह था कि श्री० दुर्गादेवी यहाँ छिपी हुई हैं और शायद उसे वहाँ बम होने का भी सन्देह था। इसीलिए यहाँ पानी के घड़े और अचार के मटके भी हाथ डाल कर देखे गए! पेड़ों की जड़ें तक खोद कर बम की तलाश की गई!! पर पुलिस को अन्त में हताश ही होना पड़ा। वहाँ की एक नर्स की कुछ

व्यक्तिगत चिट्ठियाँ ज़ब्त कर ली गई हैं; चिट्ठियाँ तादाद में ८०-९० के लगभग होंगी।

'चाँद' बुक-डिपो में भी पुलिस को कोई मनोवा-न्वित वस्तु नहीं मिल सकी।

बेबी रोड पर सहगल जी के बङ्गले की तलाशी यह जानने के लिए की गई थी, कि कोई अपरिचित व्यक्ति वहाँ ठहरा था या नहीं। अपरिचित व्यक्ति से पुलिस का मतलब शायद किसी क्रान्तिकारी से हो सकता है। यहाँ यह कह देना आवश्यक है कि एक दिन पहले गत २७वीं फरवरी को आज़ाद से पुलिस की मुठभेड़ हुई थी, और कहा जाता है कि उनके दो साथी भाग निकले थे। आश्चर्य नहीं, यह तलाशी उन्हीं लोगों के सम्बन्ध में हुई हो।

* * *

अन्त में गत २री मार्च को १॥ बजे रात्रि में पुलिस फिर सहगल जी के वासस्थान—'चाँद' कार्यालय पर आ धमकी। खुफिया पुलिस के इन्स्पेक्टर मि० भृगुप्रकाश ने सहगल जी को उनकी गिरफ्तारी का वारण्ट दिखाया और १२४-ए धारा के अनुसार उन्हें गिरफ्तार करके उसी समय नैनी-जेल ले गए।

सहगल जी प्रसन्न-बदन थे। वे हँसते-हँसते मोटर पर सवार हुए। उस समय उनके घर की महिलाओं ने उन पर पुष्प-वृष्टि की। उपस्थित कर्मचारियों ने 'वन्दे-मातरम्' और 'इन्क़िल़ाब जिन्दाबाद' के गगन-भेदी नारों के साथ उन्हें विदा किया। थोड़ी देर के लिए 'चाँद' कार्यालय में एक अपूर्व उत्साह फैल गया। देखते-देखते मोटर आँखों से ओझल हो गई।

हमें विश्वस्त-मूत्र से पता लगा है, कि इधर कुछ दिनों से 'चाँद' कार्यालय पर पुलिस की कड़ी निगरानी रहती है। छद्मवेप में पुलिस के चर सदैव इस संस्था के आस-पास चक्कर काटा करते हैं।

सुना गया है कि श्री० सहगल जी नैनी-जेल में 'भारत' के भूतपूर्व सम्पादक और 'ए' क्लास के कैदी पण्डित वेङ्कटेश नारायण तिवारी के साथ रक्खे गए हैं। आपके मुक़द्दमे की पेशी सम्भवतः आगामी ७ मार्च को होगी।

* * *

बम्बई—

—अकोला का २५वीं फरवरी का समाचार है, कि स्वामी अनन्तानन्द शास्त्री और श्री० गोविन्दराव सिन्हे को ११वें ऑर्डिनेन्स के अभियोग में ६-६ माह की कड़ी कैद की सजा दी गई है। कमगाँव ताल्लुका कॉङ्ग्रेस कमिटी के ३ सदस्य इसी ऑर्डिनेन्स के अनुसार गिरफ्तार कर लिए गए हैं। शेरपुर ताल्लुका में भी ६ कार्यकर्ता गिरफ्तार किए गए हैं। इनमें से एक अमृतराव महाजनी को १ साल की कड़ी कैद की सजा दी गई है।

—सूरत का २७वीं फरवरी का समाचार है, कि ६ व्यक्तियों को, जो मर्दुमशुमारी का नम्बर मिटाने के अपराध में गिरफ्तार किए गए थे, ६-६ माह की कड़ी कैद की सजा दी गई है।

—धारवार का २६वीं फरवरी का समाचार है, कि लगानबन्दी आन्दोलन के सम्बन्ध में एक स्वयंसेवक को ५ माह की और दूसरे को ३ माह की कड़ी कैद की सजा दी गई है।

—हवेली ताल्लुका के ५ स्वयंसेवक पिकेटिङ्ग के सम्बन्ध में, तथा अनकोला और कनारा के १३ स्वयंसेवक, गैर-क्रान्ती संस्थाओं के सदस्य होने के अपराध में गिरफ्तार कर लिए गए हैं।

—बम्बई का २६वीं फरवरी का समाचार है, कि वहाँ के सिटी मैजिस्ट्रेट ने सूरत की ८वीं सञ्चालिका श्रीमती विलासवती चन्द्रभान मेहता को क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार २ माह की सादी कैद की सजा दी है।

उसी मैजिस्ट्रेट ने स्थानीय विद्यार्थी-सङ्घ के सेक्रेटरी श्री० मोहनलाल झोकावाला को १८वीं धारा के अनुसार ४ माह की कड़ी कैद की सजा दी है।

—बम्बई का २६वीं फरवरी का समाचार है, कि कुछ अभियुक्तों के अपने चार्जशीट पर हस्ताक्षर करने से इन्कार करने पर, सिटी मैजिस्ट्रेट ने उन्हें १-१ माह की सादी कैद की सजा दी है।

—अकोला का २३वीं फरवरी का समाचार है, कि मुफसिल में व्याख्यान के अपराध में मास्टर त्रिपाड गिरफ्तार कर लिए गए हैं। श्री० सबलराम गवाण्डे को ११७वीं धारा के अभियोग में ६ माह की कड़ी कैद की सजा दी गई है।

—सूरत का २६वीं फरवरी का समाचार है, कि कैसल मैदान में झण्डावन्दन करते समय १०० कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता गिरफ्तार कर लिए गए हैं। इन गिरफ्तार व्यक्तियों में बालक, बालिकाएँ तथा २५ महिलाएँ भी शामिल हैं। वहाँ की नई सञ्चालिका मिस मधुमति चुन्नीलाल भी गिरफ्तार की गई हैं।

—अकोला का २४वीं फरवरी का समाचार है, कि लगानबन्दी आन्दोलन के सम्बन्ध में, कॉङ्ग्रेस बुलेटिन के सम्पादक श्री० नामदेव पटेल को ६ माह की कड़ी कैद की सजा दी गई है।

बलालपुर के श्री० हीरालाल शाह, श्री० पण्डितारी पटेल, श्री० सुन्दर जी और श्री० सखाराम को ६-६ माह की कड़ी कैद की सजा दी गई है।

श्री० किसानराव को, जो जेल में सजा भुगत रहे हैं, ११वें ऑर्डिनेन्स के अनुसार ६ माह की और कड़ी कैद की सजा दी गई है।

श्री० सप्ततराव भुसकन को १४७वीं धारा के अभियोग में ३ माह की सादी कैद की सजा दी गई है।

—अहमदाबाद का २५वीं फरवरी का समाचार है, कि गुजरात विद्यापीठ के अध्यापक श्री० कुमारप्पा को, जिनसे एक साल की नेकचलनी के लिए ५०० रुपए की जमानत माँगी गई थी, जमानत देने से इन्कार करने के कारण १ साल की सादी कैद की सजा दी गई है।



बम्बई में फिर नमक-क्रान्ति भड़किया गया

सत्याग्रह-समिति के सदस्य और सञ्चालक गिरफ्तार

बम्बई का गत २८वीं फरवरी का समाचार है, कि आज प्रातःकाल सात स्थानों में नमक-क्रान्ति भड़किया गया। इसके फल-स्वरूप वहाँ की सत्याग्रह-समिति के सदस्य तथा कुछ अन्य कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता गिरफ्तार कर लिए गए।

एक व्यक्ति को, जो चौपाटी पर, सार्जेंट के सामने राष्ट्रीय नारे लगा रहा था, पीटा गया, जिससे वह घायल हो गया, और अस्पताल भेजा गया।

आजाद मैदान में हजारों मनुष्य नमक-क्रान्ति की अवज्ञा में भाग लेने के लिए एकत्रित हुए थे। लठबन्द पुलिस का एक दल सारा माजरा देख रहा था। नमक बनाने के बर्तनों की रक्षा के लिए देशसेविकाएँ नियुक्त थीं। वे घेरा बना कर खड़ी थीं। पुलिस वाले बलपूर्वक उस घेरे में घुस गए, और नमक बनाने के सामानों को उन्होंने तहस-नहस कर दिया। इसी समय सत्याग्रह समिति के सदस्यगण वहाँ पहुँचे, जो सीधे गिरफ्तार कर लिए गए।

पुलिस ने 'ए' वार्ड कॉङ्ग्रेस कमिटी के सञ्चालक श्री० के० दामोदरदास तथा एक स्वयंसेवक को भी, जो मैदान के दूसरी ओर नमक बना रहे थे, गिरफ्तार कर लिया।

'डी' वार्ड की कॉङ्ग्रेस कमिटी की सञ्चालिका श्रीमती रतनबेन मेहता, जिनके नेतृत्व में, चौपाटी में प्रदर्शन किया गया, दो मन्त्रियों के साथ गिरफ्तार कर ली गईं। इन लोगों के अतिरिक्त कुछ अन्य लोगों को भी पुलिस ने चौपाटी पर गिरफ्तार किया।

माण्डवी और तांबकान्त में भी नमक-क्रान्ति भड़किया गया। भुलेश्वर वार्ड के सञ्चालक गिरफ्तार कर लिए गए।

—कराची का २५वीं फरवरी का समाचार है, कि कराची की सत्याग्रह समिति की ७वीं डिविज़न श्रीमती कस्तूरबाई जीवराज गिरफ्तार कर ली गई हैं।

—कराची का २६वीं फरवरी का समाचार है, कि आज सबेरे तीन व्यक्ति नमक-क्रान्ति भड़काने के अपराध में गिरफ्तार कर लिए गए हैं।

—अहमदाबाद का २६वीं फरवरी का समाचार है, कि वहाँ के अतिरिक्त ज़िला मैजिस्ट्रेट ने श्री० हीरालाल दामोदर और चिमनलाल को ५०-५० रुपए जुर्माने अथवा डेढ़-डेढ़ माह की कड़ी कैद की सजा दी है। कालूपुर वार्ड कमिटी के सेक्रेटरी श्री० भानलाल को भी यही सजा दी गई है।

गोमतीपुर वार्ड कमिटी के दो मन्त्रियों को १-१ माह की अधिक कैद की सजा दी गई है।

—सूरत का २६वीं फरवरी का समाचार है, कि राष्ट्रीय साप्ताहिक 'प्रताप' के रिपोर्टर श्री० नवनीतलाल देसाई से १,००० रुपए का मुचलका माँगा गया। मुचलका देने से इन्कार करने पर उन्हें ६ माह की कड़ी कैद की सजा दी गई है।

श्री० वाघजी भाई एम० पटेल ११वें ऑर्डिनेन्स के अनुसार गिरफ्तार किए गए हैं।

—हलाल का २६वीं फरवरी का समाचार है, कि श्री० छगनलाल दाजीभाई को ३ माह की कड़ी कैद और २५ रुपया जुर्माने अथवा १ माह की अतिरिक्त कैद की सजा दी गई है।

—अहमदाबाद का २८वीं फरवरी का समाचार है कि वहाँ के सिटी मैजिस्ट्रेट ने दो मनुष्यों को अपना नाम नहीं बताने के अभियोग में १०-१० रुपया जुर्माना किया है। जुर्माना नहीं देने पर ३-३ दिन की कड़ी कैद की सजा दी जायगी।

बङ्गाल—

—चाँदपुर का २१वीं फरवरी का समाचार है, कि एक शराब-फ़रोश के शिकायत करने पर पुलिस ने ४ बङ्गाली युवकों को गिरफ्तार कर लिया है। कहा जाता है कि उन्होंने एक शराब के कनस्तर को नष्ट कर डाला था। वे हिरासत में रक्खे गए हैं।

—त्रैरीसाल का २४वीं फरवरी का समाचार है, कि उन ३६ व्यक्तियों में से, जो पिकेटिङ्ग करते समय पुलिस पर आक्रमण करने के अपराध में गिरफ्तार किए गए थे, २१ व्यक्ति छोड़ दिए गए हैं। बाक़ी लोगों को ३ से ८ सप्ताह तक की सजाएँ दी गई हैं।

—गोहाटी का २४वीं फरवरी का समाचार है, कि विदेशी कपड़े की दुकानों पर धरना देते समय वहाँ २१ स्वयंसेवक गिरफ्तार किए गए। इन पर क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार मामला चलाया जायगा।

—मिदनापुर का २५वीं फरवरी का समाचार है, कि दोहस गाँव की श्रीमती उत्तमराय, चौकीदारी टैक्स देने से इन्कार करने के कारण, गिरफ्तार कर ली गई हैं।

प्रेस ऑर्डिनेन्स का शिकार

राजपूत प्रेस कुर्क कर लिया गया

कलकत्ते का २४वीं फरवरी का समाचार है, कि सत्रिय उपकारिणी प्रेस, जो पहले राजपूत प्रेस के नाम से विख्यात था, और जहाँ से 'सत्रिय-संसार' एक साप्ताहिक, बाबू रामलाल सिंह जी के सम्पादकत्व में निकलता था, पुलिस द्वारा कुर्क कर लिया गया। सम्पादक और मैनेजर को पड़्यन्त्र के सम्बन्ध में ६-६ माह की सजा दी गई है। कहा जाता है कि कुर्क करने के पहले प्रोप्राइटर को कोई सूचना नहीं दी गई थी।

—नवगाँव (आसाम) का २५वीं फरवरी का समाचार है, कि कालीवास के श्री० थानूराम भूषा, श्री० युक्तिमठ गोस्वामी, पद्मकान्त शैक तथा अन्य ३ कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता विदेशी वस्त्र की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के अपराध में गिरफ्तार कर लिए गए हैं।

—रानीगञ्ज का २२वीं फरवरी का समाचार है, कि श्री० महादेव धीवर और हिन्दनाथ चटर्जी नामक दो युवक गिरफ्तार कर पुलिस की हिरासत में रक्खे गए हैं। यह नहीं मालूम कि वह किस अभियोग में गिरफ्तार किए गए हैं।

—पबना का २७वीं फरवरी का समाचार है, कि पुलिस ने श्री० रवीन्द्रनाथ चक्रवर्ती को बङ्गाल ऑर्डिनेन्स के अनुसार गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने उनके घर की तलाशी ली, और वह अनेक कागज़-पत्र उठा कर ले गई।

श्री० देवेन्द्रनाथ सेन को १४४वीं धारा के अनुसार एक निषेधाज्ञा की अवज्ञा करने के अपराध में २ सप्ताह की कड़ी कैद की सजा दी गई है।

—नवागञ्ज का २३वीं फरवरी का समाचार है कि श्री० गिरीशचन्द्र साहा, श्री० यतीन्द्रचन्द्र साहा, मन-मोहन सील और गौरविनोद गोस्वामी, भारतीय दण्ड-विधान की १८८वीं धारा के अनुसार गिरफ्तार कर लिए गए हैं।

—रामपुर हाट (बीरभूमि) का २७वीं फरवरी का समाचार है कि मल्हारपुर के राजनैतिक मामले में पाँचों अभियुक्तों को, जिनमें सत्यवाला देवी भी शामिल हैं, ३-३ माह की कड़ी कैद की सजा दी गई है।

बिहार—

छपरा का १८वीं फरवरी का समाचार है, कि श्री० यतीन्द्रनाथ सूर और श्री० जगन्नाथ मिश्र को ६-६ माह की कड़ी कैद की सजा दी गई है। १८ अन्य स्वयंसेवकों में से १२ को ६-६ माह की तथा ६ को ३-३ माह की कड़ी कैद की सजा दी गई है। श्रीमती रत्न देवी को ६ माह की सादी कैद की सजा दी गई है।

—श्रीमती शान्ति देवी और जनकसिन्धो देवी के मामले का फ़ैसला जेल ही की अदालत में किया गया। उन्हें ६-६ माह की सादी कैद की सजा दी गई है।

—मुजफ़्फ़रपुर का १७वीं फरवरी का समाचार है कि वहाँ के नेमनारायण प्रेस से १,००० रुपए की जमानत माँगी जाने पर प्रेस बन्द कर दिया गया है। 'लोक-संग्रह' नामक एक हिन्दी साप्ताहिक वहाँ से निकलता था। वह भी बन्द हो गया है।

—पुरी का १८वीं फरवरी का समाचार है कि वहाँ ३ स्वयंसेवकों को मादक द्रव्यों की दुकानों पर धरना देने के अपराध में ३७६वीं धारा के अनुसार ३० ३० रुपए जुर्माने अथवा १-१ माह की कैद की सजा दी गई है।

—वेतिया का १६ वीं फरवरी का समाचार है कि मछुरगढ़ा के स्वयंसेवक-शिविर के जिन ११ स्वयंसेवकों को पुलिस ने गिरफ्तार किया था, उन्हें ६-६ माह की कड़ी कैद की सजा दी गई है।

—बालासोर का १६वीं फरवरी का समाचार है कि विदेशी कपड़े की दुकानों पर धरना देने के अभियोग में ३ स्वयंसेवकों को २-२ माह की कड़ी कैद की सजा दी गई है।

—तेवरा (मुज़र) का २३वीं फरवरी का समाचार है, कि बागेश्वरीसिंह, रामभजन भागवत, गुरुशशि ब्रह्म-देव, त्रिवेणी ब्रह्मदेव, रामेश्वर रामकृष्ण और रामखेलावन उदित, पिकेटिङ्ग करने के लिए, दहिया नामक स्थान को जाते समय गिरफ्तार कर लिए गए। कहा जाता है कि पुलिस ने उन्हें राष्ट्रीय गान बन्द करने को कहा था। उन्होंने ऐसा करने से इन्कार किया और बराबर गाते ही गए। इस पर वे गिरफ्तार कर लिए गए।

—कटक का २७वीं फरवरी का समाचार है, कि श्रीमती चन्द्रमणि देवी, अपने एक भाषण के सम्बन्ध में गिरफ्तार कर ली गई हैं। वे हाल ही में ६ माह की सजा भुगत कर जेल से लौटी थीं।

—बालीकुड़ा के ६ सत्याग्रहियों को १५-१५ माह की कड़ी कैद की सजा दी गई है।

—छपरे का २७वीं फरवरी का समाचार है, कि श्रीमती सीतादेवी, श्रीमती जगत्श्री देवी तथा ७ अन्य स्वयंसेवकों को ३-३ माह की कैद की सजा दी गई है।

—सीवान में कृष्णअवतार अन्य ३ कार्यकर्ताओं के साथ फिर गिरफ्तार कर लिए गए हैं।

—दरभंगा का २४वीं फरवरी का समाचार है, कि शराब की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के अपराध में वहाँ १३ स्वयंसेवक गिरफ्तार किए गए हैं।

—एकमीघाट के भी दो स्वयंसेवक इसी अभियोग में गिरफ्तार किए गए थे, किन्तु इनमें से एक छोड़ दिया गया।

—मोतिहारी का २८वीं फरवरी का समाचार है, कि केसरिया के श्री० वैजुलाल और श्री० जमुनाप्रसाद को क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट के अनुसार १-१ साल की कड़ी कैद की सजा दी गई है।

—पुरी का २६वीं फरवरी का समाचार है, कि कनास के एक प्रमुख कार्यकर्ता बाबू चक्रपाणि चौधरी ३७६ और ४२६ धाराओं के अनुसार गिरफ्तार किए गए हैं।

युक्त प्रान्त—

कन्नौज में गोली-काण्ड

दो मरे, दो घायल

कन्नौज का २७वीं फरवरी का समाचार है, कि गत २३वीं फरवरी को, वहाँ के एक गाँव में, पुलिस वालों और गाँव वालों के बीच दृङ्गा हो गया। कहा जाता है कि गाँव वालों और कॉन्स्टेबलों में झगड़ा हो गया, जिसके फल-स्वरूप कॉन्स्टेबलों ने गोली चला दी, जिससे १ मरा और ३ घायल हुए। घायलों में से एक जेल अस्पताल में मर गया। एक कॉन्स्टेबल भी घायल हुआ है। दूसरे दिन ८ अन्य व्यक्ति भी गिरफ्तार कर लिए गए हैं।

—कानपुर का २४वीं फरवरी का समाचार है, कि एक व्यापारी विदेशी कपड़े की गाँठों को हटा रहा था। स्वयंसेवकों ने उसे रोका। पुलिस ने उनमें से एक को पीटा। वहाँ एक भीड़ एकत्रित हो गई। इसी समय किसी अज्ञात व्यक्ति ने गाँठों में आग लगा दी, जिसके फल-स्वरूप एक गाँठ जल कर खाक हो गई। अन्य बची हुई गाँठें गोडाउन में भेज दी गईं। दूसरे दिन उनके हटाए जाने का फिर प्रबन्ध किया जाने लगा। स्वयंसेवकों ने फिर पिकेटिङ्ग शुरू कर दी। फलतः १३६ व्यक्ति गिरफ्तार कर लिए गए। गिरफ्तार किए जाने वालों में भूतपूर्व डिप्टी श्री० योग और जनरल सेक्रेटरी श्री० भगवतीप्रसाद आदि प्रमुख कार्यकर्ता भी हैं। बनारस-सेना के ११ बालक, जो गिरफ्तार किए गए थे, पीछे छोड़ दिए गए।

—अलीगढ़ का २५वीं फरवरी का समाचार है, कि शाहगञ्ज और कोडियागञ्ज के २२ कार्यकर्ताओं को क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की १७ 'बी' धारा के अनुसार ६-६ माह की कड़ी कैद और ५० ५० रुपए जुर्माने अथवा ६-६ सप्ताह की अतिरिक्त कैद की सजा दी गई है।

ससनी के भी २० कार्यकर्ता गिरफ्तार कर अलीगढ़ लाए गए हैं।

—गत २६वीं फरवरी का एक स्थानीय समाचार है, कि प्रतापगढ़ गोली-काण्ड के घायलों में से एक व्यक्ति की मृत्यु प्रतापगढ़ सिविल अस्पताल में हो गई। उसका शव स्वराज्य-भवन में लाया गया, और वहाँ से एक जुलूस निकाला गया।

—आज़मगढ़ का २१वीं फरवरी का समाचार है, कि सगरी कॉङ्ग्रेस कमिटी के मन्त्री ठाकुर रामाज्ञा सिंह को दण्ड-विधान की १०८वीं धारा के अनुसार, लगान-बन्दी के लिए उकसाने के अभियोग में ६ माह की सादी कैद की सजा दी गई है।

—मुरादाबाद का २५वीं फरवरी का समाचार है कि पण्डित महीन्द्रनाथ को क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की १७ (१) धारा के अनुसार ६ माह की कड़ी कैद की सजा दी गई है। श्री० चेताराम और श्री० भूखन-शरण को भी यही सजा दी गई है। श्री० भूखनशरण को सजा के अतिरिक्त १०० रुपए का जुर्माना भी किया गया है।

—कानपुर का २५वीं फरवरी का समाचार है, कि कानपुर तहसील के डोमनपुर गाँव में श्री० गङ्गाधर, उकसाव ऑर्डिनेन्स के अभियोग में गिरफ्तार कर लिए गए हैं।

—बनारस का २८वीं फरवरी का समाचार है, कि वहाँ के कलेक्टर तथा ज़िन्ना मैजिस्ट्रेट ने एक आज्ञापत्र निकाल कर लोगों को लाठी, तलवार, छुरा तथा दूसरे प्रकार के हथियार लेकर आम सड़क पर चलने से मना किया है। ७वीं फरवरी तक के लिए जुलूस के लिए भी निषेधाज्ञा निकाली गई है।

मद्रास—

—मद्रास का २७वीं फरवरी का समाचार है, कि पिकेटिङ्ग करते समय १६ स्वयंसेवक गिरफ्तार कर लिए गए। ३ अन्य स्वयंसेवक भी गोडाउन स्ट्रीट पर गिरफ्तार कर लिए गए हैं। कहा जाता है कि ये विदेशी कपड़ों के ढेर में आग लगा रहे थे।

—मद्रास का २६वीं फरवरी का समाचार है, कि कल शहर में ३४ गिरफ्तारियाँ हुईं। ६ अन्य स्वयंसेवक भी पिकेटिङ्ग करते समय गिरफ्तार कर लिए गए।

—मद्रास का २४वीं फरवरी का समाचार है कि, आज १६ स्वयंसेवक रतन बाज़ार गोडाउन स्ट्रीट और देवराज मुदालियर स्ट्रीट पर पिकेटिङ्ग करने गए। ज्यों ही उन्होंने पिकेटिङ्ग आरम्भ किया त्यों ही पुलिस ने आकर उन लोगों को गिरफ्तार कर लिया। अन्य स्थानों से भी १० स्वयंसेवक गिरफ्तार किए गए हैं।

—मद्रास का २५वीं फरवरी का समाचार है कि दण्ड-विधान की २५वीं धारा के अनुसार जॉर्ज टाउन में धरना देने वालों की गिरफ्तारी हो जाने के बाद २५ अन्य स्वयंसेवकों ने धरना जारी रखा। किन्तु ये भी गिरफ्तार कर हिरासत में भेज दिए गए। इसके बाद सन्ध्या-समय ६ महिलाओं ने, जिनमें श्रीनिवास ऐयङ्गर की पुत्री श्रीमती अम्बुजम्मल भी शामिल थीं, रतन बाज़ार के विदेशी कपड़े की दुकानों पर धरना दिया। ये भी गिरफ्तार कर हिरासत में भेज दी गईं। श्रीमती अम्बुजम्मल बाद को छोड़ दी गईं।

—मद्रास का २५वीं फरवरी का समाचार है कि वहाँ की सिटी पुलिस ने ट्रिप्लिकेन और जॉर्ज टाउन में धावा किया और दण्ड-विधान की २५वीं धारा के अनुसार करीब ५० मनुष्यों को गिरफ्तार कर लिया। कहा जाता है कि १०६वीं धारा के अनुसार उन पर मामला चलाया जायगा।

—गयटूर का २२वीं फरवरी का समाचार है, कि वहाँ की कॉङ्ग्रेस कमिटी के अध्यक्ष श्री० सुन्दुरी वेङ्कय्या और सेक्रेटरी श्री० चन्ना वेङ्कटकृष्णा तथा कन्नगुडा चिट्टिया, क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की १७ (१) धारा के अनुसार गिरफ्तार कर लिए गए हैं।

—गयटूर का २६वीं फरवरी का समाचार है, कि १७ सत्याग्रही, जिनमें श्रीमती सनकमना और श्रीमती राजलक्ष्मी नाम की दो महिलाएँ भी हैं, क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार गिरफ्तार कर ली गई हैं।

—गयटूर का २७वीं फरवरी का समाचार है, कि छः स्वयंसेवकों ने, दोपहर के समय पिकेटिङ्ग जारी किया। ४ बजे के समय पुलिस के एक दल ने उन लोगों को गिरफ्तार कर लिया।

लड़कों को बेंत लगाने की सज़ा

देहरादून का २६वीं फरवरी का समाचार है, कि वहाँ के १०वें डिप्टी श्री० सोमेन्द्र मुकुर्जी को ६ माह की कड़ी कैद और १०० रुपए जुर्माने की सजा दी गई है।

भोगपुर में जो ४ लड़के गिरफ्तार किए गए थे, उनमें से प्रत्येक को १५-१५ बेंत लगाए जाने की आज्ञा दी गई है। इनमें से ३ बड़े ही सुकुमार बच्चे हैं।



देश के प्राङ्गण में

बम्बई—

—बम्बई का २७वीं फरवरी का समाचार है, कि लेजिस्लेटिव कौन्सिल में, टैक्स बढ़ाने के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव पर सरकार को मुँह की खानी पड़ी। विपक्ष में २६ वोट अधिक आने के कारण प्रस्ताव अस्वीकृत हो गया।

ज़ब्त खेतों की नीलामी

५००) रुपए का खेत १८) रुपए में नीलाम किया गया

सूरत का २६वीं फरवरी का समाचार है, कि बार-दोली तारलुका के किसानों का वह खेत, जो ज़ब्त कर लिया गया है, बहुत थोड़े दामों पर नीलाम कर दिया गया है। अनाज सहित खेत केवल १८) रुपए बीघे के दर से बेंच डाला गया है। किन्तु वास्तव में केवल खाली खेतों का ही मूल्य ५००) से ७००) बीघा है! अनाज के साथ तो ३००)-४००) रुपए प्रति बीघा दाम और अधिक हो जाता है।

—बम्बई का २६वीं फरवरी का समाचार है, कि एक जलूस श्री० मगनलाल देसाई के नेतृत्व में करादी के आज़ाद मैदान से, समुद्र के किनारे को गया और वहाँ लोगों ने नमक बनाया। पुलिस वहाँ मौजूद थी, किन्तु उसने कुछ ची-चपड़ नहीं की।

११) रुपए के लिए ४०) रुपए का माल ज़ब्त

सर्वेण्ट्स ऑफ़ इण्डिया सोसायटी के श्री० ए० बी० ठक्कर ने सहयोगी 'लीडर' को दोहद से, निम्न-लिखित सूचना दी है :—

गत १३वीं फरवरी को बोरसद के मामलेदार ने ३ बोरे चावल और १ बोरा गोहूँ, जो आनन्द से बोदल को भेजा जा रहा था, ज़ब्त कर लिया है। ये अनाज के बोरे अन्त्यज सेवा-मण्डल के खोले हुए अछूत बालकों के एक बोर्डिंग स्कूल के लिए भेजे जा रहे थे।

मामलेदार ने स्कूल की भूमि के लगान-स्वरूप इन्हें ज़ब्त कर लिया। लगान ११) चाहिए था। किन्तु माल ४०) का ज़ब्त किया गया है। ज़बती की कोई रसीद भी नहीं दी गई है।

विदेशी व्यापार की क्षति

ब्रिटेन को ज़बरदस्त धक्का

बम्बई के मिल-मालिकों की समिति ने विदेशी व्यापार के सम्बन्ध में एक सूचना प्रकाशित की है। इस सूचना के अनुसार १९२६ में यहाँ ५६,५०,००,००० गज कपड़े आए थे, किन्तु १९३० में यह तादाद घट कर २६,७०,००,००० गज हो गई। इस प्रकार २६,८०,००,००० गज की (अर्थात् ४८ प्रतिशत की) घटी हुई।

१९२६ में २,८०,००,००० पौण्ड सूते विदेश से आए थे; किन्तु १९३० में केवल १,६०,००,००० पौण्ड सूते आए।

मैं बमसिंह का बेटा पिस्तौलसिंह हूँ

दिल्ली का २४वीं फरवरी का समाचार है, कि कल जेल के अन्दर एक स्वयंसेवक का मामला पेश हुआ। इस पर धरना देने के सम्बन्ध में १७वीं धारा के अनुसार मामला चल रहा था।

मैजिस्ट्रेट ने उससे पूछा—“तुम्हारा नाम क्या है?” स्वयंसेवक ने अपना नाम पिस्तौलसिंह और अपने बाप का नाम बमसिंह बतलाया।

समझौते के विषय में निराशा

नई दिल्ली का २८वीं फरवरी का समाचार है, कि समझौता होने का रङ्ग-ढङ्ग नहीं देख पड़ता है। लॉर्ड हर्विन की शर्तों से नेताओं को निराशा हो रही है।

कहा जाता है कि पुलिस की ज्यादतियों के विषय में, सरकार अधिक से अधिक, डिपार्टमेंटल जाँच ही कायम करना चाहती है। वह जाँच भी कॉङ्ग्रेसवालों के मामला खड़ा करने पर, केवल विशेष-विशेष घटनाओं के विषय में की जायगी। वायसराय का यह असन्तोष-जनक उत्तर ही शान्ति के मार्ग का रोड़ा बन रहा है। इसी कारण से वायसराय की अन्य शर्तों पर महत्व नहीं दिया जा रहा है। पता चला है, कि सरकार जनता को नमक बनाने की आज्ञा नहीं देना चाहती। पिकेटिंग भी उसी हालत में मज्जूर की गई है, जब वह शान्ति-पूर्वक हो।

मुख्य मतभेद पुलिस की ज्यादतियों की जाँच के विषय में ही है। कॉङ्ग्रेसवाले चाहते हैं कि पुलिस के अत्याचारों की खुली जाँच हो।

पहली मार्च का समाचार है, कि २॥ बजे से लेकर ६ बजे सन्ध्या समय तक महात्मा जी और वायसराय से बातचीत होती रही। कॉङ्ग्रेस की कार्यकारिणी समिति ने एक नया अल्टरनेटिव (Alternative) पेश किया है। कहा जाता है कि उसी पर महात्मा जी की वायसराय से बातचीत हुई। परिस्थिति तो आशाजनक बताई जाती है। समू आदि गोलमेज़ के सदस्यों ने अपनी सारी शक्ति इस ओर लगा दी है।

स्वयंसेवक पकड़ कर जङ्गल में

छोड़ दिए गए

कानपुर का २४वीं फरवरी का समाचार है, कि नान-पारा में कुछ स्वयंसेवक, धरना देते समय गिरफ्तार कर लिए गए। गिरफ्तार कर वे पुलिस स्टेशन पर लाए गए, और वहाँ वे पीटे गए। इसके बाद वे एक जङ्गल में ले जाकर छोड़ दिए गए। बड़ी कठिनाता से लौट कर घर वापस आए।

—लखनऊ का १८वीं फरवरी का समाचार है, कि वर्तमान कोर्टफ्रीस को बढ़ाने के लिए जो बिल सरकार की ओर से कौन्सिल में पेश हुआ था, वह ६६ बोटों द्वारा अस्वीकृत कर दिया गया।

लखनऊ कैम्प जेल में कैदियों की दुर्दशा

पेट भर भोजन भी नहीं दिया जाता

लखनऊ २६वीं फरवरी—लखनऊ कॉङ्ग्रेस कमिटी के अध्यक्ष श्री० मोहनलाल सक्सेना ने निम्न-लिखित वक्तव्य प्रकाशित किया है :—

होम-मेम्बर ने यह विश्वास दिखाया था कि लखनऊ कैम्प जेल के कैदियों की दशा के विषय में जाँच की जायगी, पर कैदियों की दशा इस समय वैसी है जैसी पहले थी। उन्हें पूरा भोजन नहीं मिल रहा है। जेल के नियमों के अनुसार जितना भोजन मिलना चाहिए उतना भी नहीं दिया जा रहा है। इसका कारण यह बताया जाता है कि जेलों के इन्स्पेक्टर जनरल ने यह आज्ञा दे रखी है कि जेलों के लिए आटा नहीं खरीदा जाय। कैदी जितना आटा पीस सकें, उतना ही काम में लाया जाय।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इन्स्पेक्टर जनरल की उक्त आज्ञा साधारण बुद्धि के प्रतिकूल होने के अतिरिक्त जेल के नियमों के भी विरुद्ध है। जेल के नियमानुसार यदि कोई कैदी काम करने से इन्कार करे तो उसे सज़ा दी जा सकती है, किन्तु उसके भोजन में कमी नहीं की जा सकती।

कैम्प जेल में आटा पीसने की ६२ मिलें हैं, जिनमें कुछ खराब हो गई हैं। यदि यह मान भी लिया जाय कि सभी ठीक हैं, तो भी १२५ से अधिक मनुष्य उनमें काम नहीं कर सकते। यदि ये १२५ व्यक्ति, जिन्हें काम दिया जाय, काम करने से इन्कार करें, या अपना काम पूरा न करें, तो उन्हें दण्ड दिया जा सकता है। किन्तु इन्हें और इनके १,७०० अन्य साथियों को जेल के नियमानुसार पूरा भोजन न देने का कोई कारण नहीं है। फलतः इन्स्पेक्टर जनरल की उपर्युक्त आज्ञा का अर्थ कुछ समझ में नहीं आता। इससे तो यही जान पड़ता है कि उनका अभिप्राय राजनैतिक कैदियों को केवल कष्ट देना और उन्हें नीचा दिखाना है। इसका कारण आर्थिक भी नहीं हो सकता। क्योंकि गेहूँ पिसवा कर काम में लाने में, और आटा खरीद कर काम में लाने में, केवल २॥ रुपए रोज का अन्तर पड़ता है।

मैं नहीं चाहता कि राजनैतिक कैदी जेलों में काम करने से इन्कार करें, किन्तु मेरा यह व्यक्तिगत अनुभव है कि जितना काम उन्हें दिया जाता है, उतना करना उनकी शक्ति के बाहर की बात है।

मेरे सुनने में आया है कि सुपरिण्टेंडेंट ने उन बेकाम कपड़ों की एक सूची बनाई है, जो राजनैतिक कैदियों को दिए गए हैं। क्या होम-मेम्बर यह बतलाने की कृपा करेंगे कि ये कैदी कड़ाके की सर्दी में इन फटे-पुराने कपड़ों के साथ क्यों दूर-दूर ज़िलों से इस जेल में भेजे गए थे? सरकार को यदि एक नया जेल बनवाने के लिए ५०,००० रुपए मिल सकते थे, तो कैदियों को कड़ाके की सर्दी से बचाने के लिए भी तो वह कुछ हज़ार रुपए खर्च कर सकती थी? यदि होम मेम्बर कैदियों के वज़न को मिला कर देखेंगे तो उन्हें पता चलेगा कि उनका स्वास्थ्य सुधरने के बजाय कितना खराब हो गया है।

वहाँ की औषधि-व्यवस्था भी सन्तोषजनक नहीं है। मेरे सुनने में आया है कि कुछ राजनैतिक कैदियों पर जेल में अपराध करने के अभियोग में मामला चलाया जायगा।

तहसीलदार की हत्या

फतहपुर का २७वीं फरवरी का समाचार है कि खिजुहा के तहसीलदार मुन्शी अवधविहारीलाल कल सन्ध्या को नोनरा (जहानवाद थाना) में, लोगों को लगान देने के लिए समझाने के लिए गए। जमींदार भी उनके साथ था। कहा जाता है कि गाँव वालों ने तहसीलदार साहब पर हमला किया और उन्हें मार डाला। उनके साथ ३ पुलिस के सिपाही थे। उन्होंने भीड़ पर गोली चलाई। इससे कुछ गाँव वाले भी घायल हुए। एक सिपाही भी घायल हुआ है।

इस सम्बन्ध में ४६ आदमी गिरफ्तार हुए हैं। गाँव पर १४४ दफ्ता लगा दी गई है।

—गत १८वीं फरवरी का एक स्थानीय समाचार है, कि श्री० बेनीप्रसाद अग्रवाल ने स्थानीय म्युनिसिपल बोर्ड के चेयरमैन के पास एक सूचना भेजी है, कि वे निम्न-लिखित विषयों पर प्रस्ताव पेश करना चाहते हैं :—

- (१) पं० मोतीलाल नेहरू का मृत्यु-दिवस (६ठी फरवरी) छुट्टियों की सूची में शामिल कर लिया जाय।
- (२) पण्डित जी की एक प्रस्तर मूर्ति पुरुषोत्तम-दास पार्क में स्थापित की जाय।
- (३) सिटी-रोड का नाम बदल कर "मोती रोड" कर दिया जाय।

यू० पी० सरकार को ६४ लाख का घाटा

लगानबन्दी आन्दोलन का प्रभाव

लखनऊ का १८वीं फरवरी का समाचार है, कि अर्थ-सचिव ने १९३१-३२ का बजट कौन्सिल के सामने पेश करते हुए कहा है, कि १९३०-३१ में प्रान्तीय सरकार को ६४ लाख रुपए का घाटा उठाना पड़ा है। उन्होंने कहा कि अनाज की दर गिर जाने से तथा भद्र-अवज्ञा आन्दोलन के कारण ही सरकार को यह घाटा उठाना पड़ा है।

भारत-सरकार को १४॥ करोड़ रुपए का भयङ्कर घाटा

१४'८२ करोड़ नया कर लगाया जायगा

नई दिल्ली का २८वीं फरवरी का समाचार है, कि अर्थ-सदस्य ने असेम्बली में कहा है, कि इस वर्ष सरकार को १३'५६ लाख रुपए का घाटा हुआ है। आगामी वर्ष के बजट में कमी करने पर भी १४'५१ लाख रुपए की घटी होने की आशा है। इस कमी की पूर्ति के लिए १४'८२ लाख रुपए का नया कर लगाया जायगा।

बङ्गाल सरकार को घाटा

कर-विभाग में लगभग १ करोड़ रुपए की घटी

बङ्गाल की आर्थिक अवस्था पर विचार करते हुए अर्थ-सचिव ने कौन्सिल में कहा है, कि इस प्रान्त का भविष्य अन्धकारपूर्ण है। बजट पेश करते हुए उन्होंने कहा है कि पिछले ६ महीनों में बङ्गाल सरकार को कर-विभाग में करीब १ करोड़ रुपए का घाटा सहना पड़ा है। इस घटी का कारण भद्र-अवज्ञा आन्दोलन और व्यापारिक क्षति बतलाया गया है।

१९२६-३० की अपेक्षा १९३०-३१ से सरकार को इस प्रकार घाटा सहना पड़ा है :—

	रुपए
भूमिकर	१,९४,०००
आबकारी विभाग	३५,०४,०००
जङ्गल-विभाग	४,५३,०००
रजिस्ट्रेशन	४,५१,०००
अन्य टैक्स	१,२५,०००
स्टैम्प	६६,५७,०००

इस प्रकार कर-विभाग में कुल ६३,६०,००० रुपए की क्षति हुई है।

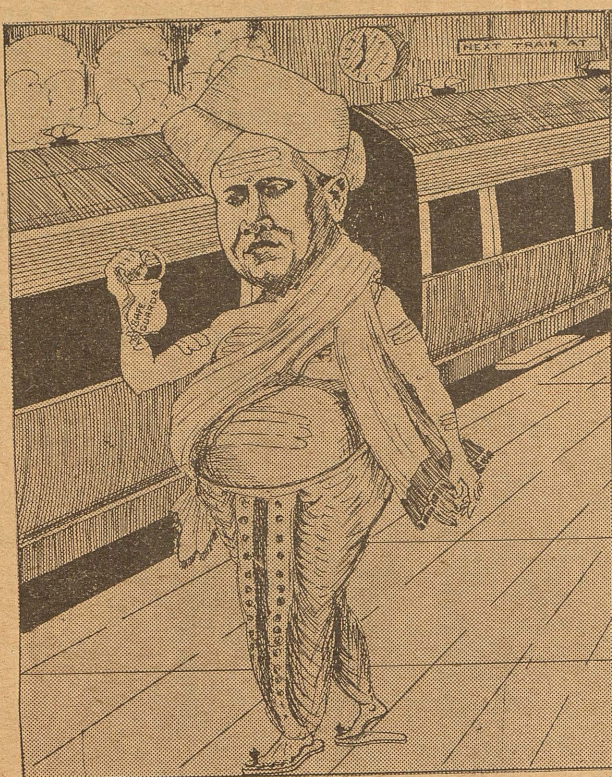
मद्रास—

बङ्गलोर का २४वीं फरवरी का समाचार है, कि सेन्ट जोसेफ कॉलेज के एक एङ्गलो इण्डियन विद्यार्थी ने अपने एक भारतीय सहपाठी पर गाँधी टोपी पहनने के कारण आक्रमण किया था, जिसके फल-स्वरूप उसकी आँखों पर चोट आई थी। खबर है कि उस एङ्गलो इण्डियन विद्यार्थी ने क्षमा माँग ली है। कॉलेज के अधिकारियों ने भी भारतीय विद्यार्थियों के भावों के प्रति सम्मान प्रदर्शित किया है।

मद्रास-सरकार को ५६'३९ लाख का घाटा

आबकारी की आमदनी में ३६ लाख की घटी

मद्रास कौन्सिल में बजट पेश करते हुए अर्थसचिव ने कहा कि इस साल सरकार को ५६.३९ लाख का घाटा सहना पड़ा है। भूमिकर में १६ लाख, आबकारी-विभाग में ३६ लाख और स्टैम्प में १६ लाख की घटी हुई है।



तीर्थ यात्रा का पवित्र प्रसाद !

पुरायपूत लगडन तीर्थ से लौटे श्रीनिवास,—
'सेल्फगार्ड' से भरा कमराडलु लिए, सहित उल्लास !

—मद्रास का २५वीं फरवरी का समाचार है, कि वहाँ के चीफ प्रेजिडेन्सी मैजिस्ट्रेट के एक वारण्ट निकालने पर पुलिस ने, सेण्ट्रल स्टेशन पर 'पेशावर इन्कयरी रिपोर्ट' की कॉपियों से भरे हुए दो बक्सों को जप्त कर लिया।

मध्य प्रान्तीय कौन्सिल में सरकार की हार

सरकार के प्रति असहानुभूति का प्रस्ताव नागपूर का २६वीं फरवरी का समाचार है, कि कृषकों के प्रति सरकार की वर्तमान असहानुभूति के विरोध में एक प्रस्ताव कौन्सिल में पेश किया गया, जो १४ वोट पक्ष में अधिक आने के कारण पास हो गया।

बर्मा कौन्सिल में सरकार की हार

लगान घटाने के सम्बन्ध का बिल पास हो गया रङ्गून का १८वीं फरवरी का समाचार है, कि वहाँ की कौन्सिल में, लगान घटाने के सम्बन्ध में एक बिल पेश किया गया। अर्थसचिव ने इसका विरोध किया, पर तो भी पक्ष में ३४वोट अधिक आने के कारण बिल पास हो गया।

*

*

*

(८वें पृष्ठ का शेषार्श)

—लाहौर २७वीं फरवरी—आज लाहौर के नए पड्यन्त्र का मामला फिर शुरू हुआ। आज मुखबिर इन्द्रपाल से प्रतिवादी दल के वकील ने जिरह किया।

गिरफ्तारी की कहानी

लाला श्यामलाल एडवोकेट के जिरह करने पर इन्द्रपाल ने कहा, वह पुरानी अनारकली में अपने मकान पर गिरफ्तार किया गया था, पुलिस के उच्च-कर्मचारी वहाँ मौजूद थे। गवाह को हथकड़ी दे दी गई, और उसे मोटर में बैठा कर लाहौर फ़ोर्ट में लाया गया। दूसरे दिन से पुलिस, उसे फुसला कर उसका बयान लेने लगी। २८वीं अगस्त को मुखबिर को हथकड़ियाँ पहना दी गईं, और वह अपनी कोठरी से, डी० एस० पी० सैयद अहमदशाह के सामने लाया गया, जिन्होंने उससे १९वीं जून के बम के धड़ाके के सम्बन्ध में पूछा, किन्तु गवाह ने उनसे कुछ नहीं कहा।

यातनाओं का आरम्भ

इसके बाद गवाह ने कहा कि उसे एक हेड कॉन्स्टेबल ने गालियाँ दीं, और तब से उसे यातनाएँ दी जाने लगीं। डी० एस० पी० के सामने ही वह पीटा गया और अनेक प्रकार के कष्ट उसे दिए गए। अन्त में उसके हाथों में हथकड़ियाँ डाल दी गईं, और उसका हाथ चारपाई में बाँध दिया गया। उसे रात भर सोने नहीं दिया गया और अपने किसी सम्बन्धी से भी उसे नहीं मिलने दिया गया। गवाह को एक छोटे कमरे में बन्द कर दिया गया, और वहीं उसे अपने नित्य-कर्म भी करने पड़ते थे। उसे ज़रा हिलने-डोलने भी नहीं दिया जाता था। गवाह को बुझार हो आया। उसके साथ ऐसा व्यवहार ५वीं ६ठी तारीख तक रहा। इसी समय गवाह ने सैयद अहमद शाह से कहा कि यदि उसे माफ़ कर दिया जाय तो वह इज़्जतगवाह बन जायगा।

गवाह ने कहा कि यदि थोड़ा और कष्ट उसे दिया गया होता तो उसकी मृत्यु हो गई होती। सैयद अहमद शाह ने गवाह से कहा था कि गुलाबसिंह मुखबिर हो गया है, और उसने यह कहा है कि उसकी (गवाह की) खी

और बहिन भी पड्यन्त्र में शामिल हैं, और वे बम बनाने में निपुण हैं। सैयद अहमदशाह ने कहा कि यदि गुलाबसिंह ने अपना बयान दिया तो गवाह की खी और बहिन को जेल जाना पड़ेगा। अपनी खी और बहिन को इस बेइज्जती से बचाने के लिए गवाह ने मुखबिर बनना स्वीकार किया।

पुलिस ने गवाह से कहा कि उसका बयान शुद्ध नहीं है, और मैजिस्ट्रेट के सामने बयान देने के एक हफ्ता पहले, गवाह को एक लिखा बयान याद करने के लिए दिया गया। गवाह ने उसे अचरशः याद कर लिया, और वही बयान मैजिस्ट्रेट के सामने दिया। जब कभी वह कुछ भूल जाता था, तो मलिक बरसुरदार अली उसे याद दिला देता था। बयान देते समय दो पुलिस के कर्मचारी गवाह के साथ रहते थे।

—दिल्ली का २६वीं फरवरी का समाचार है, कि वहाँ के ज़िला और सेशनस जज ने दिल्ली पड्यन्त्र के अभियुक्त श्री० धन्वन्तरी, श्री० कपूरचन्द और श्री० वृत्त के ज़मानत सम्बन्धी प्रार्थना-पत्र को नामजूर कर दिया है।

*

*

*

हिंसात्मक क्रान्ति की लहर

इलाहाबाद में क्रान्तिकारियों से पुलिस की भयंकर मुठभेड़

प्रायः बीस मिनिट तक दनादन गोलियाँ चलती रहीं

दो पुलिस कर्मचारी घायल :: इन्स्पेक्टर के जख्मे में गोली

एक क्रान्तिकारी की मृत्यु :: दूसरा विद्यार्थी की साइकिल ले भागा

गत २०वीं फरवरी को १० बजे के लगभग, स्थानीय आल्फ्रेड पार्क में दो क्रान्तिकारियों की, पुलिस वालों के साथ मुठभेड़ हो गई, जिसके फल-स्वरूप विख्यात क्रान्तिकारी पं० चन्द्रशेखर आज़ाद वीरगति को प्राप्त हुए।

कहा जाता है कि आज सवेरे, ख़फ़िया के डिप्टी सुपरिण्टेण्डेंट ठाकुर विशेश्वरसिंह और ख़फ़िया पुलिस के लीगल एडवाइज़र मि० दालचन्द आल्फ्रेड पार्क में घूमने गए। पार्क में उन्होंने एक व्यक्ति को देखा, जिसके चन्द्रशेखर आज़ाद होने का सन्देह उन्हें हुआ। पुलिस कई वर्षों से उसकी तलाश में थी। वह काकोरी षड्यन्त्र और अन्य कई षड्यन्त्रों का अभियुक्त था। उसकी गिरफ्तारी के लिए १,००० रुपए का पुरस्कार घोषित

से होकर निकले। कुछ दूर जाने के बाद साइकिल वाला व्यक्ति फिर लौट आया और ठाकुर दालचन्द के सामने से होकर निकला। सम्भव है कि उनके दिल में कोई सन्देह उत्पन्न हो गया हो, और वे सजग हो गए हों। साइकिल वाला व्यक्ति दालचन्द को देख-भाल कर फिर थानहिल रोड की ओर मुड़ गया। इसी समय, जब कि विशेश्वरसिंह और ठाकुर दालचन्द, इन व्यक्तियों की गति-विधि का निरीक्षण कर रहे थे, सुपरिण्टेण्डेंट मि० नाटबावर दो कॉन्स्टेबलों के साथ पार्क में पहुँचे।

विशेश्वरसिंह और दालचन्द तो वहाँ पर नहीं थे, पर अर्दली ने सुपरिण्टेण्डेंट को उन दोनों व्यक्तियों को दिखलाया, और विशेश्वरसिंह के सन्देह को भी कह

गोली छोड़ते रहे थे। इसी समय जब सुपरिण्टेण्डेंट पिस्तौल में गोली भर रहे थे। 'आज़ाद' ने उनके बाँए बाँह पर गोली मारी, जिससे पिस्तौल हाथ से छूट कर गिर पड़ा। तब वे एक वृत्त की ओट में जा छिपे। 'आज़ाद' भी अपने समीप के एक वृत्त की ओट में रेंग कर चला गया। इसी समय ठाकुर विशेश्वरसिंह १०-६० गज की दूरी पर एक झाड़ी की ओट में पहुँच गए, और उन्होंने 'आज़ाद' की ओर फ़ायर किए। आज़ाद ने एक गोली मारी, जो विशेश्वरसिंह के मुख पर लगी।

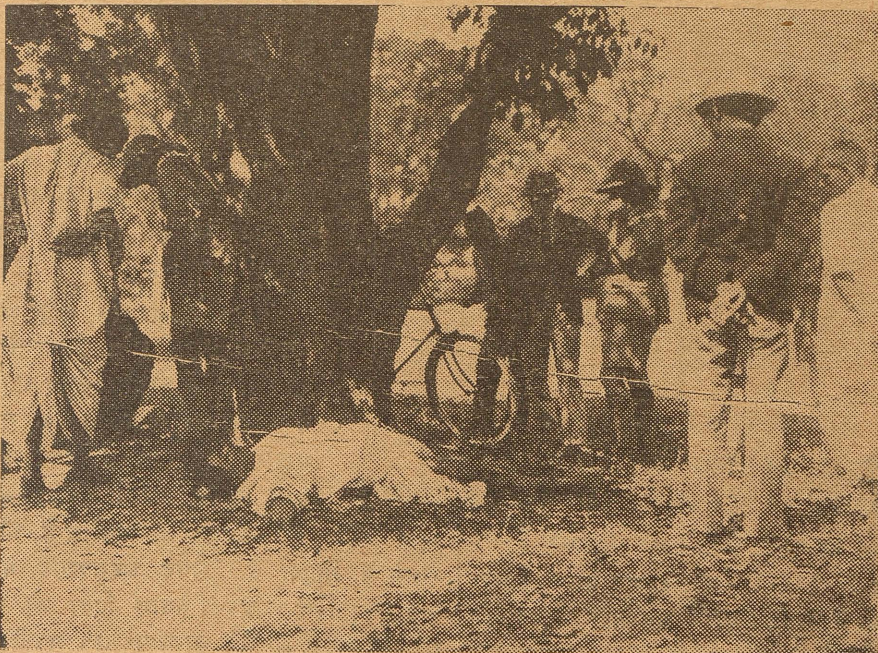
सुपरिण्टेण्डेंट साहब की भुजा पर चोट थी, इस कारण वे गोली नहीं छोड़ सकते थे, किन्तु आज़ाद बराबर गोली दाग रहे थे। अन्त में आज़ाद चित्त लेट गए। कहा जाता है कि गोली चुक जाने के कारण उन्होंने स्वयं गोली मार ली।

इस समय दूर पर एक भीड़ एकत्रित हो गई थी। इसी समय कोई अज्ञात व्यक्ति (पीछे मालूम हुआ कि वह एक कॉन्स्टेबल था) अपनी बन्दूक के साथ वहाँ पहुँचा। सुपरिण्टेण्डेंट साहब को यह सन्देह था कि आज़ाद, शायद पुलिसवालों को धोखा दे रहा है। इस कारण उन्होंने उस अज्ञात व्यक्ति को मृत आज़ाद के ऊपर गोली दागने के लिए कहा। उसने ऐसा ही किया। जब सुपरिण्टेण्डेंट को पक्का विश्वास हो गया कि आज़ाद मर गया है तब वे उसके समीप गए। इस समय तक पुलिस के अन्य व्यक्ति भी घटनास्थल पर पहुँच गए थे। आज़ाद के पास से ४४८ रु० के नोट और कुछ रुपए मिले।

१६ गोलियाँ और २२ ख़ाली कारतूस वहाँ पर पड़े मिले। इस घटना के बाद लाश पोस्टमार्टम के लिए भेज दी गई। जनता के लोगों ने लाश दफ़नाने के लिए सरकार से आज्ञा माँगी। किन्तु लाश नहीं दी गई। कहा जाता है कि लोगों के पूछने पर अधिकारियों ने कहा था कि लाश दारागंज में दफ़नाई जायगी, किन्तु अन्त में दफ़नाई गई वह रसूलाबाद में!

कुछ लोगों का कहना है, कि आज़ाद के साथ एक ही व्यक्ति नहीं, बल्कि दो व्यक्ति थे। पुलिस इनका पीछा बनारस से ही कर रही थी। गोली-काण्ड के समय, आज़ाद के साथ केवल एक ही व्यक्ति था। इस व्यक्ति को आज़ाद ने जान-बूझ कर वहाँ से हटा दिया। उससे कहा कि "मैं तो मौत के मुँह में जाता हूँ, तुम भाग जाओ।"

कहा जाता है कि घटना के समय, एक विद्यार्थी साइकिल पर जा रहा था। एक अपरिचित व्यक्ति ने उसे पिस्तौल दिखा कर कहा कि "साइकिल मुझे दे दो, पुलिस मेरा पीछा कर रही है।" वह लड़का भयभीत होकर उतर गया और वह अपरिचित व्यक्ति साइकिल लेकर चम्पत हो गया।



क्रान्तिकारी युवक का शव। पास खड़े हुए पुलिस के सुपरिण्टेण्डेंट मि० उड तथा अन्यान्य पुलिस कर्मचारी

किया गया था। विशेश्वरसिंह ने अपने सन्देह को दालचन्द पर प्रकट किया। इसके बाद वे लौट गए। ८ बजे के लगभग दालचन्द और एक अर्दली के साथ विशेश्वरसिंह फिर पार्क की ओर चले। उन्होंने पार्क के भीतर दो व्यक्तियों को बैठा पाया। उन दोनों में जो मोटा-तगड़ा युवक था, उसी के 'आज़ाद' होने का सन्देह विशेश्वरसिंह को था। किन्तु वे उसका मुख नहीं देख सकते थे। और समीप जाकर भी देखने का साहस नहीं पड़ता था।

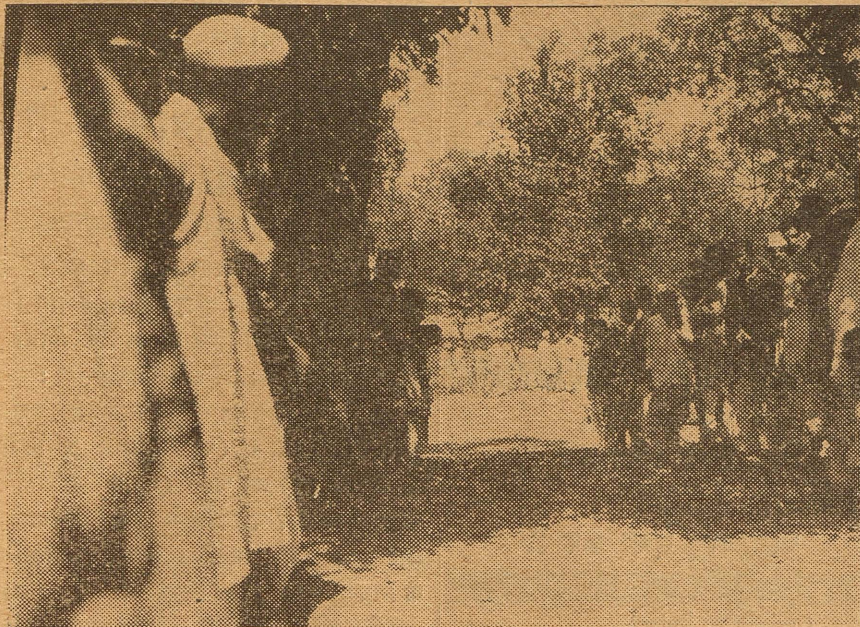
अन्त में जब विशेश्वरसिंह का विश्वास पक्का हो गया तो उसने अपने अर्दली को ख़फ़िया पुलिस के सुपरिण्टेण्डेंट के पास भेजा। इसी समय वे दोनों व्यक्ति थानहिल रोड की ओर चले। उनमें से एक के साथ साइकिल थी। ये दोनों व्यक्ति ठाकुर दालचन्द के सामने

सुनाया। सुपरिण्टेण्डेंट ने अपनी मोटर रोक ली, और करीब दस गज के फ़ासले पर से उन व्यक्तियों से उनके विषय में कुछ पूछा। इस पर दोनों ने पिस्तौल निकाल लिए और फ़ायर शुरू कर दिया। सुपरिण्टेण्डेंट ने उन्हें पिस्तौल निकालते देख कर, उनके फ़ायर करने के पहले ही गोली दाग दी, किन्तु कुछ लोगों का कहना है कि पहले आज़ाद ही ने फ़ायर किया। सुपरिण्टेण्डेंट साहब का कहना है कि उनकी गोली शायद आज़ाद के पैरों में लगी। क्योंकि वह उठ नहीं सकता था। सुपरिण्टेण्डेंट की दूसरी गोली शायद आज़ाद के शरीर पर लगी। उसका साथी फुर्ती के साथ उठ खड़ा हुआ, और गोली दाग कर भाग गया। इस समय तक सुपरिण्टेण्डेंट और दो कॉन्स्टेबल बराबर उन लोगों की ओर

आज़ाद का संक्षिप्त परिचय

स्वर्गीय श्री० चन्द्रशेखर का जन्म काशी के वैजनाथ टोला में हुआ था। उसके पिता का नाम था पं० वैजनाथ। थोड़ी उम्र से ही उस पर अपने देश को आज़ाद करने की धुन सवार हो गई थी। १९२१-२२ में असहयोग आन्दोलन के समय वह अहिं-

कि भगतसिंह और राजगुरु सौण्डर्स को मारेंगे और आज़ाद उनके पार्श्व-रक्त के तौर पर पीछे रहेगा। सौण्डर्स को मार चुकने के बाद जब वह डी० ए० वी० कॉलेज के बोर्डिंग हाउस में जा रहा था, तब चन्नसिंह ने उसका पीछा किया। 'आज़ाद' ने उसे चेतावनी दी, किन्तु इस पर भी जब वह उसे पकड़ने के लिए आगे बढ़ा तो आज़ाद ने उसका काम तमाम कर दिया। इसके बाद से ही पञ्जाब में आज़ाद की खोज होने लगी। आज़ाद,



घटनास्थल का दृश्य। दर्शकों की भीड़।

सावादी स्वयंसेवक थे, गिरफ्तार कर जब वे अदालत में लाए गए, तो मैजिस्ट्रेट ने उनसे पूछा—“तुम्हारा क्या नाम है?” आज़ाद ने अपनी आज़ादी के आवेश में उत्तर दिया—“मेरा नाम 'आज़ाद' है, पिता का नाम 'स्वतन्त्र', निवास स्थान?—जेलघाना—है!” भला मैजिस्ट्रेट एक कोमलमति बालक के मुख से निकली हुई ऐसी बातें कैसे सहन कर सकता था? उसने आज़ाद को १५ बेत लगाए जाने की आज्ञा दी। बेत लगाने के लिए उसका कोमल शरीर बाँधा जाने लगा। परन्तु उसने कहा—“बाँधते क्यों हो? मारो, मैं खड़ा हूँ।” उस दृश्य के देखने वाले काँप गए। क्या सचमुच बेत लगाए जायेंगे? हाँ बात सच थी। सड़ा-सड़ बेत पड़ने लगे और प्रत्येक बार पर आज़ाद के मुख से 'बन्देमातरम्' 'गाँधी जी की जय' आदि नारे निकलने लगे! परन्तु अन्त में वह कोमल बालक मूर्छित होकर गिर पड़ा!! उस समय वह केवल चौदह वर्ष का था। तभी से आप “आज़ाद” के नाम से विख्यात हुए।

इन बेतों का आघात उसके शरीर पर नहीं, वरन् उसकी आत्मा पर लगा और कहा जाता है कि वह उसी दिन से विद्रोही हो गया। इस अमानुषिक दण्ड का उसके मन पर बड़ा ही बुरा प्रभाव पड़ा।

सन् १९२१ का असहयोग आन्दोलन शान्त था, पर कहा जाता है, आपने हिंसात्मक क्रान्ति की शरण ली। यहाँ राजेन्द्रनाथ लाहिरी और शचीन्द्रनाथ बख्शी से उसकी मित्रता हुई। ये तीनों अन्तरङ्ग मित्र हो गए। प्रत्येक कार्य में इन तीनों का साथ रहता था।

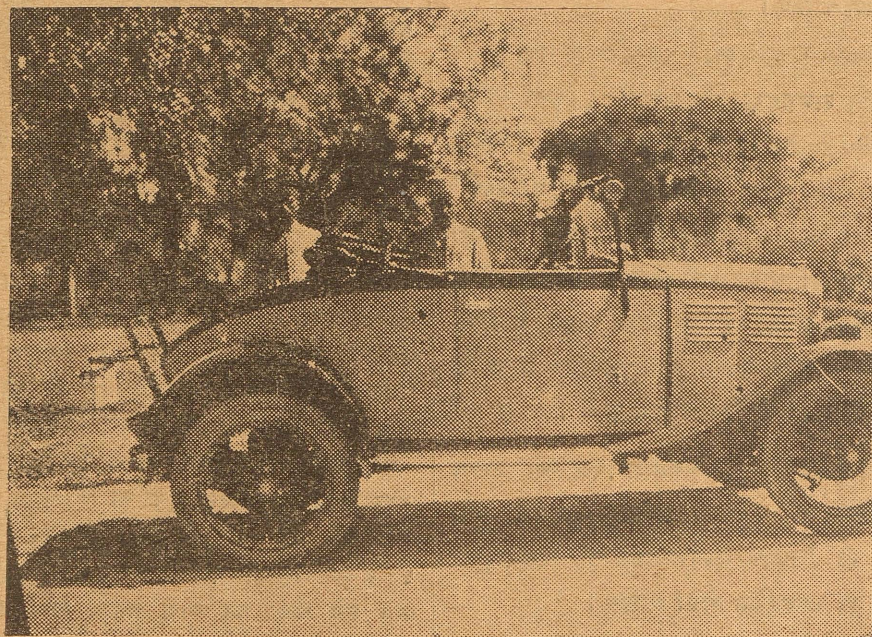
कहा जाता है, कि सन् १९२६ वाले काकोरी षड्यन्त्र केस में 'आज़ाद' का नाम एक प्रमुख षड्यन्त्रकारी के रूप में आया था। किन्तु वह फ़रार था। सारा बनारस छान ढाका गया, किन्तु 'आज़ाद' आज़ाद ही रहा। युक्त प्रान्तीय सरकार ने उसकी गिरफ्तारी के लिए दो हजार रुपयों का इनाम भी घोषित किया।

१५वीं दिसम्बर १९२८ को सौण्डर्स हत्या-काण्ड हुआ। कहा जाता है, कि यह निश्चित किया गया था,

जो इस समय 'पण्डित' जी के नाम से प्रसिद्ध हो गया था, बड़ी सफ़ाई से शायब हो गया।

१९२६ के दिसम्बर मास में, वायसराय की ट्रेन उलट देने का प्रयत्न किया गया। क्रान्ति के इतिहास में पहले-पहल बिना तार के, बम से काम लिया गया। इस सम्बन्ध में आज़ाद, यशपाल और एक फ़रार अभियुक्त का नाम लिया जाता है।

कहा जाता है कि लाहौर के दूसरे षड्यन्त्र में,



मि० नाटवावर की मोटर, जिस पर क्रान्तिकारी युवक ने गोली चलाई थी।

आज़ाद ने सरदार भगतसिंह और श्री० दत्त आदि को छुड़ाने के लिए षड्यन्त्र किया था। साथ ही यह भी कहा जाता है कि बहावलपुर के मकान में धड़ाका हो जाने के कारण, यह षड्यन्त्र सफल नहीं हो सका। उस धड़ाके में एक प्रमुख क्रान्तिकारी श्री० भगवतीचरण की जान भी चली गई।

दिल्ली षड्यन्त्र केस में भी, जो अभी आरम्भ होने को है, 'आज़ाद' का नाम लिया जाता है। पञ्जाब गवर्नमेण्ट ने भी आपकी गिरफ्तारी के लिए ५,००० रु० का इनाम घोषित किया था और कहा जाता है, आपका चित्र प्रत्येक बड़े-बड़े रेलवे स्टेशन पर चिपकाया गया था; पर सरकारी पुलिस के गुर्गे सन् १९२६ से २७वीं फ़रवरी के प्रातःकाल तक पता नहीं लगा सके थे। 'आज़ाद' ने अन्त तक अपनी आज़ाद-प्रियता को निबाहा। उनकी जीवित अवस्था में पुलिस का कोई भी व्यक्ति उनका शरीर स्पर्श नहीं कर सका। कहा जाता है, उनकी मृत्यु के बाद भी पुलिस के उपस्थित अफ़सरों को उनसे भय लगता था। समाचार-पत्रों को पढ़ने से पता चलता है कि मृत्यु के बाद भी केवल सन्देह के वशीभूत होकर पुलिस वालों ने बन्दूक और तमझों के कई बाढ़ उनके शरीर पर दागे थे, तब कहीं वे पास फटक सके।

कुछ लोगों का कहना है कि उनकी मृत्यु के बाद कुछ सरकारी ख़ैरख़्वाहों ने उनके मृतक शरीर को लातों तक से ठुकराया, कुछ लोगों का यह भी कहना है कि एक गोरे दर्शक का कुत्ता स्वर्गीय 'आज़ाद' के लगे हुए घावों में से निकला हुआ रक्त चाट कर अपने मालिक को अपनी वफ़ादारी और समझदारी का परिचय दे रहा था। हमारे एक विशेष सम्वाददाता की यह तो आँखों देखी और कानों-सुनी घटना है कि जब लाश को उठा कर लाँरी में रक्खा जा रहा था तो पुलिस वालों ने बड़ी निर्दयता से मृतक शरीर की टाँगें पकड़ कर घसीटी थीं। कुछ सिपाहियों को लाश मोटी होने की शिकायत थी और इसके लिए कहा जाता है, उनके शरीर को गालियाँ भी दी गई थीं; किन्तु 'आज़ाद' के जीवत की वे कभी-कभी कानों-कानों में प्रशंसा भी करते सुने गए थे। स्वयं सी० आई० डी० के सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० ब्लैन्डन तक ने, जो इस संस्था की तलाशी लेने आए थे, हमसे 'आज़ाद' के जीवत की प्रशंसा की। उनका कहना था कि ऐसे सच्चे निशानेबाज़ उन्होंने बहुत कम देखे हैं; ख़ासकर ऐसी शङ्कामय परिस्थिति में, ख़ासकर जब तीन ओर से उन पर गोलियों की वर्षा हो रही थी। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि यदि पहली गोली उनकी जाँघ में न

लगा गई होती, तो पुलिस का एक भी अफ़सर जीवित न बौटता, क्योंकि मि० नाटवावर का हाथ पहले ही बेकाम हो चुका था, उन्होंने यह भी बतलाया कि 'आज़ाद' विप्लवी दल का कोई प्रतिष्ठित नेता—सम्भवतः कमाण्डर इन-चीफ़ थे। अस्तु—

'भविष्य' के विशेष सम्वाददाता ने आज दोपहर को

भविष्य की नियमावली

१—'भविष्य' प्रत्येक वृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२—किसी पत्रास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व, सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संचित, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३—लेखादि कागज़ के एक तरफ़, हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४—हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक, किन्तु ऐसे ही पत्रों का उत्तर दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५—कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इत्मीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्बाद-दाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो, न छपा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६—लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

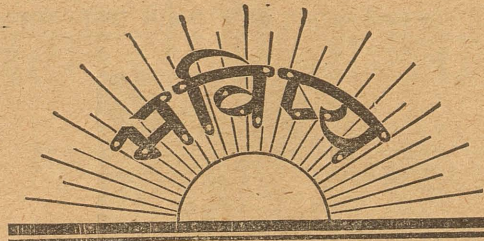
७—समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिए।

८—परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वगैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९—सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०—किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर



५ मार्च, सन् १९३१

काले क़ानून के कारण—

क्या कीजिएगा हाले-दिले—

ज़ार देख कर !

मतलब निकाल लीजिए

अख़बार देख कर !!

(७वें पृष्ठ का शेषार्श)

घटनास्थल का निरीक्षण भी किया था। जिस पेड़ के पीछे स्वर्गीय 'आज़ाद' ने प्राण विसर्जन किए हैं, वह वृक्ष फूलों से लदा था और पेड़ पर कई जगह दर्शकों ने 'आज़ाद-ग़ार्क' आदि लिख दिया है। जिस स्थान पर उनका रक्त गिरा था, कहा जाता है उतनी मिट्टी कॉलेज के विद्यार्थी उठा ले गए हैं।

दशहरा बम केस

सरकारी गवाह का बयान

लाहौर का २६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि बोस्टल जेल में, अब्दुलग़नी के विरुद्ध, दशहरा बम केस, सेशन जज के सामने चल रहा है। आज सरकार की ओर से कई गवाह पेश किए गए।

गुरुदासपुर के पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट के० बी० अब्दुल अज़ीज़, जिन्होंने मामले की तहक़ीक़ात की थी, कहा कि जाँच के समय उन्हें मालूम हुआ कि अभियुक्त अब्दुलग़नी को इस मामले की कुछ बातें मालूम हैं। उन्होंने अब्दुलग़नी को बुलाया। अब्दुलग़नी इस शर्त पर उन बातों को बताने के लिए तैयार हुआ कि, उसके बदले में उसे कुछ ज़मीन दी जाय। गवाह ने कहा—“यह मेरे अधिकार के बाहर है, पर तो भी मैं सरकार से इसकी सिफ़ारिश करूँगा।” इस पर अभियुक्त ने अपना बयान दिया, जिसे डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट सैयद अहमदशाह ने दर्ज कर लिया था।

इसके बाद गवाह ने कहा, इस धड़ाके के कारण १० मनुष्य मरे और ५८ घायल हुए थे। इस बात का पता देने वाले का नाम गवाह नहीं बता सका। गवाह ने कहा कि अब्दुलग़नी के कथनानुसार मुख़बिर मुहम्मद अशरफ़ के घर की तलाशी ली गई, पर वहाँ कोई बम नहीं मिला। यह सच है कि अभियुक्त के कथन के आधार पर ही तलाशियाँ ली गई थीं, किन्तु वास्तव में मुहम्मद अशरफ़ की सूचनानुसार ही बम मिले थे।

पञ्जाब सरकार ने इस घटना के सम्बन्ध में पता बताने वाले को पुरस्कार देने की घोषणा की थी। गवाह ने कहा कि पुरस्कार की रकम उसे याद नहीं है।

सम्पादकीय विचार

अतिरिक्त ज़िला मैजिस्ट्रेट मि० ई० एस० लेवी ने कहा कि मैंने अब्दुलग़नी की अपराध-स्वीकृति दर्ज की थी। उसने स्वेच्छापूर्वक अपना बयान दिया था।

* * *

लाहौर का नया पड़्यन्त्र केस

मुख़बिर पर पुलिस का दबाव

बयानों में अन्तर

लाहौर २६वीं फ़रवरी—आज स्पेशल ट्रिब्यूनल की अदालत में, मुख़बिर इन्द्रपाल का बयान समाप्त होगया। मुख़बिर ने मैजिस्ट्रेट के सामने अपना बयान देते हुए नीचे लिखे स्थानों की सनाइत की :—

(१) वह दूकान, जहाँ से उसने यशपाल के लिए चीज़ें ख़रीदी थीं। (२) श्रीमती दुर्गादेवी (श्रीमती भगवतीचरण) का घर। (३) यूनीवर्सिटी ग्राउण्ड का वह स्थान, जहाँ यशपाल ने मुख़बिर को रिवॉल्वर से मारना चाहा था, क्योंकि मुख़बिर ने क्रान्तिकारी दल के नियमों का उल्लङ्घन किया था। (४) वह स्थान जहाँ मुख़बिर और हंसराज ने, बम फेंकने की परीक्षा की थी। (५) वह स्थान जहाँ दल के सदस्य, भगतसिंह और अन्य अभियुक्तों की लॉरी आने की प्रतीक्षा में, बैठ कर ताश खेले थे। (६) वह स्थान जहाँ चन्द्रशेखर आज़ाद और यशपाल उस दिन ठहरे थे। (७) सुतार मण्डी में नन्दलाल का मकान। (८) फ़रार प्रेमनाथ का मकान। (९) वह स्थान जहाँ यशपाल की बहिन रहती थी। (१०) ग़ाल मण्डी में वह घर जहाँ १९वीं जून १९३० को बम फ़टा था।

मुख़बिर ने अन्य स्थानों की भी सनाइत की। उसने उन स्थानों की भी सनाइत की, जहाँ पुलिस ने झूठी गवाहियाँ दी थीं। उसके बाद उसने कहा कि उसने शहज़ादा, रावलपिण्डी, लायलपुर और दिल्ली के भी अनेक स्थानों की सनाइत की है।

वह चौकीदार, जिसे यशपाल ने दो आने पैसे दिए थे, गवाह को नहीं पहचान सका। पुलिस ने चौकीदार से मुख़बिर को सनाइत करने के लिए कहा, और यह भी कहा, यही पड़्यन्त्र केस में भी गवाह था।

जहाँगीरीलाल, जयप्रकाश, कुन्दनलाल, धरमपाल अमीरचन्द, गुलाबसिंह, अमरकिसिंह, रूपचन्द, दयानत राम, भीमसेन, हरिराम, महाराजकिसन और अभियुक्त बंसीलाल को गवाह जानता था। पुलिस ने उससे धर्मवीर की सनाइत करवाई। उसने धर्मवीर को लाहौर फ़ोर्ट में देखा था।

गवाह ने लाहौर के कई स्थानों को चमा किए जाने के पहले ही सनाइत किया था। अन्य स्थानों को चमा के बाद उसने सनाइत किया।

पब्लिक प्रॉसीक्यूटर रायबहादुर ज्वालाप्रसाद ने कहा कि गवाह ने मैजिस्ट्रेट के सामने जो बयान दिया था, उससे इस बयान में अन्तर है।

लाला शामलाल ने कहा कि गवाह विरोधी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि उसने सारी कहानी कह दी है। मैजिस्ट्रेट के सामने जिस समय उसने बयान दिया था, उस समय वह पुलिस के दबाव में था। इस समय वह उस दबाव से स्वतन्त्र है।

(शेष मैटर ५वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम में देखिए)

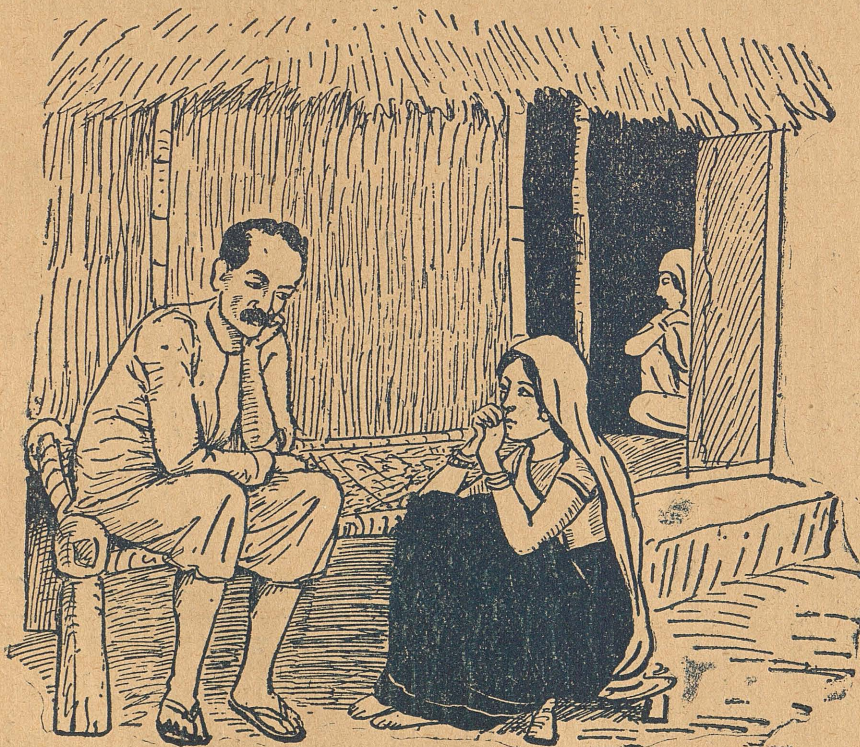
बलिदान

[श्री० रुद्रिदास दक्षियानूम :: चित्रकार,
श्री० परिवर्तनानन्द वर्मा]

निष्ठावर रुद्रियों पर हो, कोई जाता है दुनिया से,
किसी की खाक में मिलती, जवानी देखते जाओ।

वह सौन्दर्य की देवी, कोमलता की मूर्ति,
सद्गुणों की खान और माता-पिता के
प्राणों की प्रत्यक्ष प्रतिमा थी। पिता ने उसे गार्हस्थ्य-
जीवन के उपयुक्त शिक्षा दी थी। उन्हें हिन्दू-समाज
की हृदय-हीनता का ज्ञान न था, उन्हें विश्वास था
कि रूप की अपेक्षा रूप और गुण का विशेष
आदर होगा, और इसी भरोसे पर वे अपनी कन्या
का विवाह किसी धनवान और योग्य वर के साथ
करना चाहते थे।

परन्तु समाज को धनवानों ने उनकी धारणा
को शीघ्र ही भ्रान्त सिद्ध कर दिया। सैकड़ों दर-
वाजों की खाक छान कर वे घर लौट आए और
हताश होकर भोपड़ी के सामने टूटो चारपाई पर



("क्या मेरी श्यामा कुंवारी ही रहेगी ?")

बैठ गए। उनकी समझ में आ गया कि 'सर्वे
गुणाः काञ्चनमाश्रन्ति !'

पत्नी ने आकर पूछा—कहीं कोई पात्र ठीक
हुआ ?

एक दीर्घ-निश्वास के साथ हताश स्वर में
उत्तर मिला—नहीं।

"तब क्या मेरी श्यामा कुंवारी ही रहेगी ?"

"ईश्वर की इच्छा !"

"नहीं, ऐसा न कहा, एक बार और चेष्टा

२

रामनारायण पुलिस के दारोगा थे। खूब रुपए
कमाया था। परन्तु अपने एक मात्र पुत्र को पढ़ा-



(".....पाँच हजार से कम न लूँगा।")

करो। श्यामा सयानी हो गई है। अब इस काम
में देर करना ठीक नहीं है।"

लिखा कर किसी दूसरे रोजगार में लगाना चाहते
थे। उनकी इच्छा उसे विलायत भेज कर बैरिस्टरी
पास कराने की थी, इसलिए उन्होंने उसकी शिक्षा-
दीक्षा का बन्दोबस्त पहले से ही निखालिस अङ्ग-
रेजी ठङ्ग से कर रक्खा था। परन्तु मैट्रिक की
परीक्षा में सात बार बैठ कर भी जब विश्व-विद्या
लयवालों की बेउनवानी के कारण उनका पुत्र
श्यामनारायण पास न हो सका तो बेचारे कुछ
हताश हो गए।

इतने में एक दिन थाने के चौकीदार ने आकर
खबर दी कि दारोगा जो घोड़े पर से गिर कर
मर गए। श्यामनारायण को बड़ा दुःख हुआ।
परन्तु साथ ही उसे इस बात की प्रसन्नता भी हुई
कि कम से कम स्कूल के मास्टर्स से तो पिएड
छूटा।

अब वह निश्चिन्तता-पूर्वक घोड़दौड़ के मैदान
में और अङ्गरेजी होटलों में जाकर पिता का
उपाजित धन सार्थक करने लगा।

श्यामा के पिता को श्यामनारायण का हाल
मालूम था। वे यह भी जानते थे कि उसने दारोगा
जी की सारी कमाई का पूर्णरूपेण सदुपयोग कर
डाला है ! परन्तु कहावत है कि डूबते हुए को
तिनके का सहारा भी काफी होता है। उन्होंने
सोचा, श्यामनारायण कुछ सस्ते में पट जायगा
और सिर पर पत्नी का भार पड़ने पर भविष्य में
कुछ सुधर भी जायगा तो आश्चर्य नहीं।

"अच्छा, कल फिर दो-एक जगह
जाऊँगा।"

श्यामा दरवाजे के पास बैठी हुई ये बातें
सुन रही थी और सोच रही थी, क्या माता-
पिता को इस सङ्कट से बचाने की कोई तद्बीर
नहीं है ?

एक दिन वे श्यामनारायण के पास पहुँचे। इधर श्यामनारायण भी पिता की सम्पत्ति पर पानी फेर कर किसी ऐसे ही शिकार की तलाश में था। श्यामा के पिता के मुँह से सारी बातें सुन कर उसने बड़ी ऐंठ और अकड़ के साथ उत्तर दिया—“आप कहते हैं तो शादी कर लूँगा, परन्तु तिलक-दहेज मिला कर पाँच हजार से कम न लूँगा। आप तो जानते ही हैं कि हम लोग ‘कुलीन’ हैं। यह रिवाजत मैंने खास आपके खयाल से की है।”

३

“क्यों, क्या हुआ?” श्यामा की माँ ने उत्सुकतापूर्वक पूछा।

“पाँच हजार माँगता है।

“पाँच ह...जा...र !!!”

“हाँ, इससे एक कौड़ी भी कम न लेगा।”

“तब क्या होगा?”

“वही, जो मेरे, तुम्हारे और तुम्हारी अभागिनी श्यामा के भाग्य में बदा है।”

“एक काम करोगे?”

“क्या?”

“मेरे गहने लेजा कर बेच लो!”

“अच्छा! परन्तु इससे भी तो पाँच हजार पूरे नहीं हो सकते।”

“तो जगह-जमीन और खेत-बारी भी बेच दो।

माता-पिता को इस तरह पथ का भिखारी बना कर ‘सौभाग्यवती’ होने की अपेक्षा क्या कन्याओं का मर जाना अच्छा नहीं है?”

उसके इस मूक, किन्तु हृदय-वेधी प्रश्न का

थी, इसलिए एक-एक पल पहाड़ हो रहा था। इधर टाल-मटोल में तरह-तरह की कल्पनाएँ होने लगीं। इतनी बड़ी लड़की को कुंवारी रखना धर्मशास्त्र और समाज-शास्त्र के विरुद्ध था। बिरादरी के धर्म-भीरु



(“मेरे गहने ले जाकर बेच लो !”)

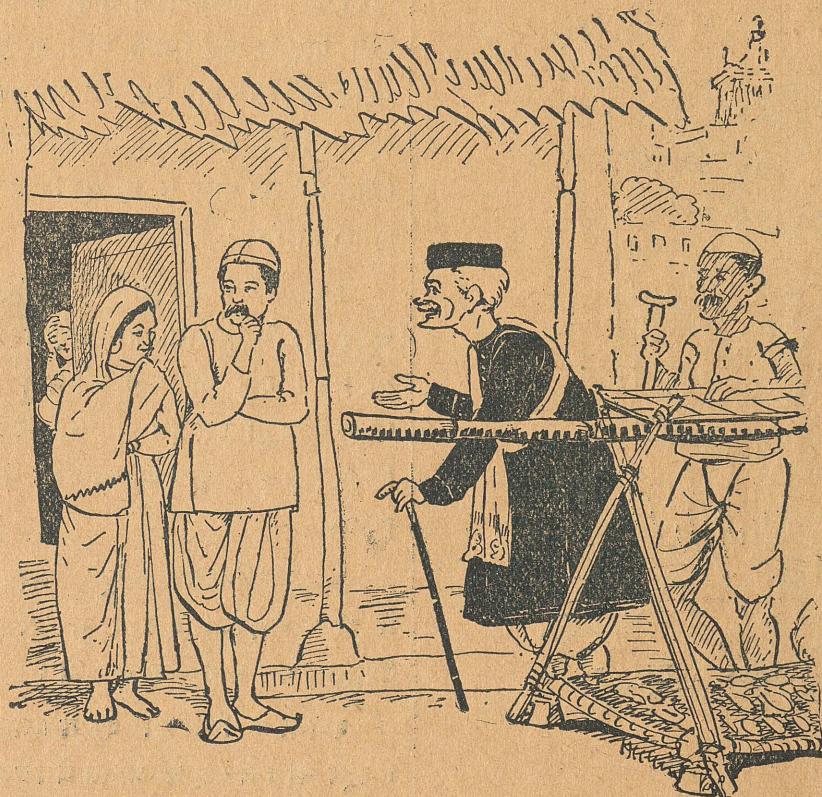
उत्तर कौन दे? समाज। धिक्कार है, उसे। उसको तो चाहिए की आँखें फूट चुकी हैं। वह क्या इन प्रश्नों का उत्तर दे सकती है?

पञ्चों ने निश्चय किया कि श्यामा के पिता का ‘हुक्का-पानी’ बन्द कर देना चाहिए, नहीं तो उनके साथ ही सारे समाज को नरकगामी होना पड़ेगा। एक शास्त्रज्ञ पण्डित ने कहा—अपरिणीता कन्या; जो है सो, यदि पिता के घर में रजस्वला हो जाय, तो मर करके पिता को सपरिवार और सपरिजन अनन्त काल लों नरकवास हो और वहीं ‘रज’ पान करना पड़े। इति मनुर्ब्रवीत। ऐसा मनु का कथन है।

“उफ़! तब तो महापापी है, यह रेवतीनाथ श्यामा का बाप!”—पञ्चों ने एक स्वर से चिल्ला कर कहा—“बस-बस, ऐसे पापी को तुरन्त जाति-च्युत कर देना चाहिए।”

४

घनश्याम खान्दानी रईस थे। ईश्वर ने धन-जन, पुत्र-पौत्र सब कुछ दिया था। कमी थी तो बस, इतनी कि ऐन बुढ़ौती में पाँचवीं पत्नी का देहान्त हो चुका था। इसी से बेचारे बड़े खिन्न रहते थे और अन्तिम जीवन सुख-शान्ति से बिताने के लिए, छठी बार किसी षोड़शो का पाणि-पीड़न कर परलोक की राह साफ कर डालना चाहते थे। इतने में उनके कुल-पुरोहित जी ने आकर श्यामा के पिता का हाल सुनाया और कहा कि इस मौके से कदापि न चूकिए। बस, आज ही जाकर उनसे मिल आइए।



(“.....यह न समझना कि संसार सज्जनों से खाली हो गया है !”)

हम लोग मेहनत-मजूरी करके किसी तरह दिन काट लेंगे।”

श्यामा की आँखों से आँसू की धारा बह रही थी। वह सोचती थी, “क्या मैं मर नहीं सकती?

गहने और जगह-जमीन बेच कर भी पाँच हजार तो क्या दो हजार का भी ठिकाना न लगा। श्यामा के पिता क्रिस्मत ठोक कर बैठ गए। कोई उपाय दिखाई न पड़ता था। कन्या बड़ी हो चुकी

फिर तो मैं खुद जाकर सारा काम ठीक कर लूँगा।

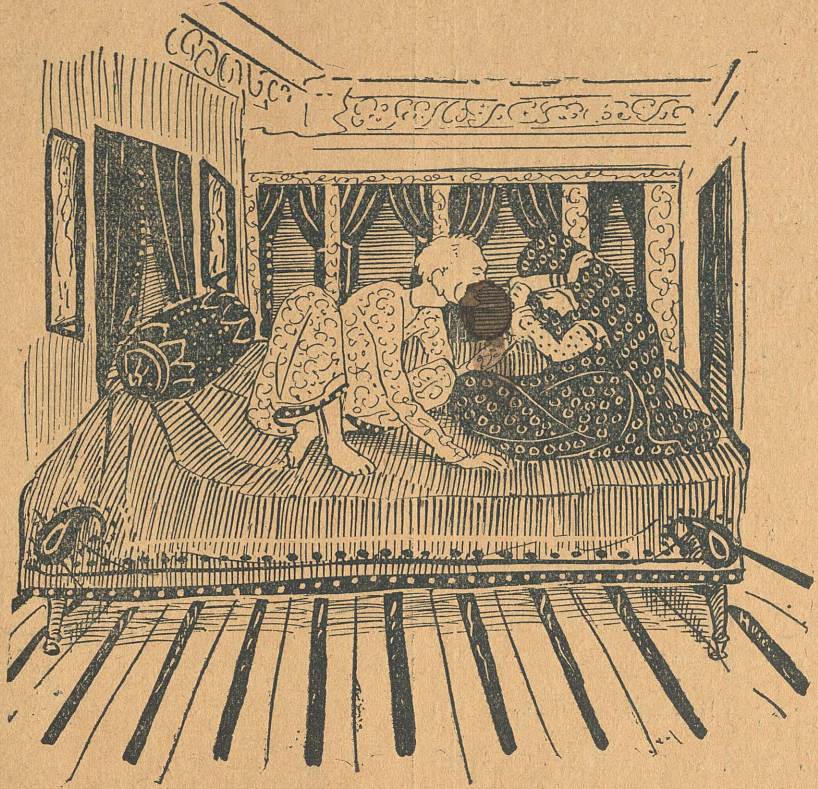
घनश्याम की बाँछें खिल गईं। फौरन डोली पर बैठ कर रेवतीनाथ के घर पहुँचे और दयार्द्र होकर कहने लगे—“मैंने सब सुना है। आप कोई चिन्ता न कीजिए। मैं इस विपत्ति से आपका उद्धार करने को तैयार हूँ। आपका एक पैसा भी खर्च न होगा। आपके लिए मैं दोनों ओर का खर्च अपने ज़िम्मे ले लूँगा। अरे भाई, यह न समझना कि संसार सज्जनों से खाली हो गया है। आप निश्चिन्त होकर घर में बैठिए। मैं अभी जाकर पुरोहित जी को भेजता हूँ। वे आकर सब ठीक-ठाक कर जायेंगे। समझे न ? मेरे रहते आप कदापि जाति-च्युत नहीं हो सकते।”

इसके बाद पुरोहित जी आए। घनश्याम की जन्म-कुण्डली देख कर कहा—“१२० वर्ष की आयु का अनिवार्य योग पड़ा है। मङ्गल दाहिने और वृहस्पति सामने हैं। छठी स्त्री से पाँच पुत्र और तीन कन्याएँ होंगी। आपकी श्यामा से गणना भी अच्छी बनती है। सोच-विचार छोड़ कर आप यह सम्बन्ध स्वीकार कर लीजिए।”

रेवतीनाथ ने दीर्घ-निश्वास के साथ सम्बन्ध स्वीकार कर लिया। उनका कलेजा पत्थर हो चुका था और नेत्र मरुस्थल ! उन्होंने समाज के

५
बड़ी धूमधाम से घनश्याम के साथ श्यामा का विवाह हुआ। घनश्याम ने पानी की तरह रूप बहा दिए। नाच, बाजा, तमाशा—किसी

ठिकाने से हुई थी कि लोग ‘वाह वाह !’ कह उठे थे। मुजरे के लिए कलकत्ते से गौहरजान, आगरे वाली मलका, दिल्ली की जोहरा बाई और बनारस की बड़ी मैना आई थीं।



(घनश्याम का अन्तःपुर)

बात की कमी न रही। पण्डित जी ने शास्त्र-विधि के अनुसार विवाह-कार्य सम्पन्न कराया। इस पुण्य-

परन्तु सुनते हैं, कन्यादान के समय श्यामा की माँ को मूर्च्छा आ गई थी और रेवतीनाथ का हाथ काँप गया था। साथ ही किसी लड़के ने छींक भी दिया था। परन्तु यह कोई विशेष चिन्ता की बात न थी। क्योंकि पण्डित जी ने विघ्न-निवारणार्थ तत्काल ही उच्चस्वर से इस श्लोक का पाठ कर दिया था—

“मङ्गलम् भगवान् विष्णु मङ्गलम् गङ्गध्वज ।
मङ्गलम् पुण्डरीकाक्ष मङ्गलायतनो हरिः ॥”

६

आइए पाठक, जरा घनश्याम के अन्तःपुर की सैर करें। सङ्कोच करने की कोई बात नहीं है, क्योंकि फागुन का महीना है और हिन्दू-समाज-शास्त्र के अनुसार “फागुन भर बाबा देवर लागें !” फलतः थोड़ी देर के लिए आप भी हमारे साथ बूढ़े घनश्याम की ‘भौजाई’ बन जाइएगा, तो कोई बुराई न होगी। इसके अतिरिक्त हम और आप भी तो ‘हिन्दू समाज’ के एक ‘रत्न’ हैं और रत्न का प्रधान गुण है, कठोरता। इसलिए वहाँ का विषम दृश्य देख कर हमारे कठोर हृदयों के सहसा विदीर्ण हो जाने की भी कोई सम्भावना नहीं है। फिर वहाँ कोई नई बात भी तो नहीं है। अपने समाज के धर्म-धुरीणों की कृपा से ऐसे दृश्य तो आप रोज ही देखते हैं !

आज घनश्याम की ‘हनीमून’— सुहाग-रात है, मुरादों की रात और उमङ्गों की घड़ियाँ हैं ! सारा दिन विचित्र उत्सुकता और मधुर कल्पनाओं



(‘पण्डित जी ने शास्त्र-विधि के अनुसार विवाह-कार्य सम्पन्न कराया’)

धधकते हुए अग्नि-कुण्ड में अपनी प्यारी श्यामा को जीते जी झोंक दिया !

और श्यामा ? वह प्रसन्न थी। उसे मनो-वाञ्छित ‘मुक्ति का मार्ग’ दिखाई पड़ चुका था।

कार्य में उन्हें दक्षिणा भी प्रचुर प्राप्त हुई थी। सुनते हैं, इस दक्षिणा की रकम से पण्डितजी की के लिए उन्होंने एक सोने की ‘हँसुली’ बनवा दी है।

बारातियों और बिरादरीवालों ने भी कई दिनों तक खूब आनन्द मनाया। दावत की तैयारी ऐसी

में बीता है, परन्तु बड़ी देर में—अभागा सूर्य मानो डूबने का नाम ही न लेता था। आज उनकी बुढ़ी, उनकी जिन्दगी और उनका हिन्दू होना सार्थक हो रहा है। ज़रा ऊपर के चित्र पर नज़र डालिए। पोपले मुँह पर वासना-मिश्रित हँसी कैसी सुन्दर मालूम होती है। ज़रा गौर से देखिए तो सही, चित्राङ्कित मुख-मुद्रा इस बीसवीं सदी में भी रूढ़ियों की गुलामी करने वाले हिन्दू-नवयुवकों का उपहास तो नहीं कर रही है ?

७

श्यामा ने मुक्ति का मार्ग तो पहिले ही पा लिया था। परन्तु उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा में थी। और घनश्याम जब अपना प्रेमाभिनय समाप्त कर हताश भाव से बाहर चले गए, तो श्यामा भी अवसर पाकर शीघ्र ही पटाक्षेप करने के लिए उठी। उसने दृढ़ हाथों से चारपाई का बन्धन खोला और उसका एक सिरा अपनी गर्दन में तथा दूसरा कमरे की छत की कड़ी में बाँध दिया। इसके बाद ? इसके बाद ??

इसके बाद की घटना नीचे के चित्र में है ! देखो हिन्दुओ, आँखें फाड़ कर देखो, शान्ति की शीतल निश्वास के साथ देखो ! ऐसे ही दृश्य तो तुम्हें प्यारे लगते हैं ? अब तो अवश्य ही तुम्हारा



(“पुलिस सदल-बल जाँच के लिए पहुँचा।”)

की पवित्र गोद में पहुँच चुकी है ! वहाँ न घनश्याम हैं, न ‘मङ्गलम् भगवान् विष्णु’ वाले, सनातन-धर्म के कर्णधार पण्डित जी ! वहाँ न अर्थ है, न अर्थ-लोलुपता। वहाँ न वासना है, न कामुकता। वहाँ न जाति है, न जाति-च्युति का भय !

८

सवेरा होते-होते श्यामा की आत्महत्या का समाचार तड़ित गति से सारे शहर में फैल गया। पुलिस सदल-बल जाँच के लिए पहुँची। घनश्याम का चालान हुआ। पुलिस ने अदालत में यह प्रमाणित करने की चेष्टा की कि घनश्याम के साथ श्यामा का विवाह उसकी सम्पूर्ण अनिच्छा से हुआ था। वह घनश्याम को पतिरूप में देखना भी नहीं चाहती थी। इधर घनश्याम बलपूर्वक उसके साथ अपनी विलास-वासना की तृप्ति करना चाहते थे। बस यही उसकी मृत्यु का कारण है। परन्तु घनश्याम की चाँदी की जूतियों की मार ने क़ानून, न्याय और विचार को एकदम ठण्डा कर दिया था, इसलिए ये तीनों मिल कर भी उनका बाल बाँका नहीं कर सके। अब सुनने में आया है कि बन्दर की गिल्टी लगवा कर वे पुनः जवान बनने की इच्छा से फ़्रान्स जा रहे हैं। फलतः एक और कन्या-भार-ग्रस्त हिन्दू के उद्धार की आशा अभी बाकी है। देखें, अबकी किस सुन्दरी का भाग्यो-दय होता है ?



(मुक्ति का मार्ग)

कलेजा ठण्डा हो गया होगा ! यही तो तुम्हारे समाज की शोभा है ! तुम धन्य हो !!

श्यामा के लिए कोई चिन्ता नहीं, वह इस पाप-तापपूर्ण संसार से बहुत दूर, अनन्त शान्ति

तूफाने-ज़राफ़त

अपनी बीबी तक पराई हो गई !

[नाखुदाए-सखुन हज़रत "नूह" नारवी]

खर्च गो सारी कमाई हो गई,
लाट साहब तक रसाई हो गई !
कौन जाए अब कलब को छोड़ कर,
लेडियों से आशनाई हो गई !
और क्या हमने बिगाड़ा आपका,
की भलाई, यह बुराई हो गई !
हमने यूँ जी खोल कर चन्दे दिए,
मालो-दौलत की सफाई हो गई !
इस तरफ तो बस खुदा ही रहा गया,
उस तरफ सारी खुदाई हो गई !
उस मिसे-शीरीं दहन की गुप्तगू
मुझको अङ्गरेजी मिठाई हो गई !
है नई तालीम का यह इनकिलाब,
अपनी बीबी तक पराई हो गई !
पास 'आया' के जो में आया-गया,
खानसामों से लड़ाई हो गई !
एक सिप्रेट की भी थी कोई बिसात ?
मुझसे उनसे हाथा-पारी हो गई !!
थी जवानी में जो मेडम नान-पाव,
वह चर्चकी में मलाई हो गई !
रेल पर कुर्बान, होटल पर निसार-
बाप दादा की कमाई हो गई !
'नूह' साहब हम कहाँ, गिरजा कहाँ ?
दो घड़ी को जव्ह साईं हो गई !

बाप-दादा की कमाई खूब है !

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

हर तरफ जङ्ग-आजमाई खूब है,
लफ्जों-मानी पर लड़ाई खूब है !
लाट साहब से भी मिल लेता हूँ मैं,
हर जगह मेरी रसाई खूब है !
वाद लड़ने के वह कहते हैं मिलो,
उनके भी दिल की सफाई खूब है !
है यही तौके-गुलामी की सनद !
खूब है, गर्दन की टाई खूब है !
उनके दर से मिलने वाला कुछ नहीं,
यह गदाई भी गदाई खूब है !
खल्क होकर कायले-कुदरत नहीं,
यह खुदा की भी खुदाई खूब है !
हो रही है आजकल सरकस में खर्च,
बाप-दादा की कमाई खूब है !
तज्किरा मिलने-मिलाने का नहीं,
अब तो आपस में लड़ाई खूब है !
हो गया "बिस्मिल" का सर तन से अलग,
तेरे-कातिल में सफाई खूब है !

१—क्रान्ति, २—बन्दना, ३—फकीरी ४—जन्म पाकर ।

**जागीर पहले मिलती थी,
खिदमतगुज़ार को !**

[जनाब "ताज" गोतनवी]

कौन्सिल में मेम्बरी की हवस है चमार को,
पण्डित जी भूलते नहीं कौमी बेकार* को !
नफरत है जेवरों से मिसे-नामदार को,
कर देंगे बाँयकॉट हम अब से सुनार को !
चर्का लगाए और न ताज़ा यह खौफ है,
तसकीन क्या वह देंगे दिले-बेकार को !
कॉलेज में भी रटा किए 'सादी' की गुलसिताँ,
हमने चुने हैं फूल अलग, करके खार को !
नाचें कलब में साया पहिन कर, जनाने-हिन्द !
तहबन्द करके रखें पुराने-इज़ार* को !!
अब "थैङ्क यू" से पेट भरें सब वफाशआर,
जागीर पहले मिलती थी, खिदमतगुज़ार को !
लन्दन के लोग तो करें 'स्मिथ' पे फख्रो-नाज़ !
जिहलत से देखते हैं हम अपने लोहार को !
पावन्दिए जबों से न कुछ अर्ज कर सका,
क्या मुझसे पूछते हो मेरे अख्तियार को !
बायज की गुप्तगू का यहाँ कुछ सिला नहीं,
इनआम मिल रहे हैं, वहाँ 'लेक्चरार' को !
दुनिया के हाल से हैं जो दुनिया में बाखबर,
वह जानते हैं "ताज" हकीकत-निगार को !

* * *

**रेआया के लिए कौड़ी नहीं जिनके
खज़ाने में !**

[जनाब "अहमक" फकूदवी]

यही होगा, यही होता रहा है हर ज़माने में,
कि गूँजी है सदाए-हक हमेशा जेलखाने में !
पछुतर लाख एक बेकार मद में सर्क कर देंगे,
रेआया के लिए कौड़ी नहीं जिनके खज़ाने में !
यह हुलड़ इस क़दर हड़बोंग, इतनी चपकलिश तोबा !
तेरी महफिल में हूँ, या मैं किसी भटियारखाने में ?
रिहाई मिल गई जब, बन गए सर्कार के मुखबिर !
सज़ा पाई थी हमने एक दिन जूते चुराने में !
वहजब आएँकमअजकमइतनीआज़ादीतोमिलजाए !
न हो हड़ताल पर लैसन्स, कोई इस ज़माने में !
जिसे देखो दुआएँ माँगता है जेलखाने की,
जिसे देखो तेरे गेसू का आशिक है ज़माने में !
नई हदबन्दियाँ होने को हैं, आईने-गुलशन में,
कहो बुलबुल से अब अण्डे न रखेआशियाने में
वह मुझको फिर वफादारों की मद में गिनने वालेहैं,
यह कैसा इनकिलाब आने को है यारब ज़माने में!
खुदा जाने मियाँ "अहमक" कहाँ डाल आए हैं डाका,
कि आधी रात से जकड़े हुए बैठे हैं थाने में ॥

* * *

५—आदर ६—इज़ारबन्द

**साए की भी मरम्मत लाज़िम है
कोट सी के !**

[नाखुदाए-सखुन हज़रत "नूह" नारवी]

बदले वह सब तरीक़े यारों ने जिन्दगी के,
शरबत पे खाक डाली, होटल में चाय पी के !
आमाल नेको-सालेह* गो अब नहीं किसी के,
इतना शरफ है क्या कम, बेटे हैं शेख जी के !
दोनों हैं इस्म-फर्जी* जन्नत हो या जहन्नम,
दौरे-जदीद में हम, कायल नहीं किसी के !
वायज के वाज से है, लेक्चर की शान पैदा !
मेम्बर पे हो रहे हैं, औसाफ* मेम्बरी के !
इस्लाह औरतों की मरदों के बाद होगी,
साए की भी मरम्मत लाज़िम है कोट सी के !
सूरज के डूबने से रौशन हुए यह मानी,
मशरिफ* पे अब हैं हमले, मगरिब* की पॉलिसी के !
देरो-हरम की हद से जाकर जो दूर ठहरा,
बँगले पे क्यों न आए लुत्फ उसको जिन्दगी के !
क्या चीज़ है कमेटी, क्या शौ गरोहबन्दी,
ऐ "नूह" इनको जानो सामान दिल्ली के !!
कुत्ते सहा मगर हैं, अङ्गरेज़ की गली के

[जनाब "अहमक" फकूदवी]

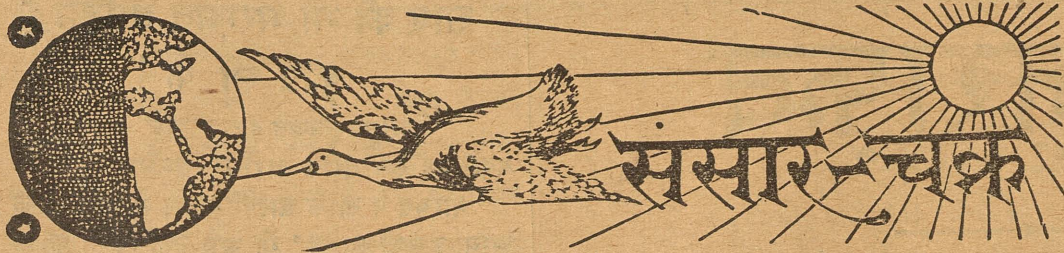
सदमे उठा रहे हैं, तलखीय जिन्दगी के,
जीना अगर यही है, हम क्या करेंगे जो के !
हम 'जो हुज़ूरियों' को, समझें बुरा तो क्योंकर,
कुत्ते सही मगर हैं, अङ्गरेज़ की गली के !!
आशिक पे भी इनायत, दुश्मन से भी लगावट,
होता नहीं यह उनसे, वह हो रहें किसी के !
तुमको बड़ी क़सम है, ऐ ज़ालिमाने-यूरोप,
बाक़ी रहे तरीक़े हरगिज़ न दुश्मनी के !
ईमाँ से हाथ धोया, मज़हब पे लात मारी,
ऐ काश हम न पड़ते फन्दे में नौकरी के !!
बे-दस्तो-पा पर अक्सर चलता है जिनका खज़र,
चर्चे हैं एक जहाँ में, उनकी बहादुरी के !
माशूक जिस तरह से चाहे उसे नचाए,
आशिक को सब तरीक़े आते हैं बन्दगी के !
निकलेगे जेल से हम "अहमक" 'सोराज' लेकर,
बैठे हुए वज़ीफे पढ़ते हैं शान्ती के !!

ख़बर नहीं है किसी थानेदार का

[जनाब "गदा" दरियाबादी]

क्या जाने कोई अबलक़े* 'लैलो-निहार'* को,
चढ़ बैठता है खुद ही पटक कर सवार को !
तारे निशात* हिज़्र* में ढीला न होने पाए,
ऐ जानेमन मिलाओ तो, दिल के सितार को !
सुनता हूँ अक्बद* करने को तैयार हो गई,
अखबार में वह पढ़ के मेरे इश्तेहार को !
शामे-गमे-फिराक़ में हमने भी करके आह,
अञ्जन की तरह दिल से निकाला बुखार को !
नासेह गए हैं आज पशेमाँ,* तो कल ज़रूर—
लाएंगे अपने साथ किसी 'लेक्चरार' को !
होती है उनके कूचे में हर रोज़ लूट-मार,
अब तक ख़बर नहीं यह किसी थानेदार को !
नाहक तुम्हें है दिरहमो दीनार* की तलाश,
परखो "गदा" तुम अपने दिले-दागदार को !

७—अच्छे, ८—ढकोसले, ९—प्रशंसा, १०—पूर्व, ११—पश्चिम
१२—घोड़ा, १३—रात-दिन, १४—आनन्द, १५—विरह,
१६—शादी १७—ज़ुज़ा १८—रूपया ।



रूस का स्वाधीनता-संग्राम

[श्री० नवजादिकलाल जी श्रीवास्तव]

(शेषांश)

परन्तु अत्याचार निष्फल नहीं गया। जार-शाही के दिन पूरे हो चले थे। अत्याचारों से कुचली हुई, प्राणहीन जाति में भी मानो अलक्ष्य भाव से विप्लव का बीज पड़ गया। रूस के युवक यूरोप के वालटेयर, स्पेन्सर, डार्विन, मिल, कोमत्, रूसो तथा अन्यान्य क्रान्तिवादी लेखकों का साहित्य बड़े चाव से पढ़ने लगे। दीमित्री डान्सकोई, आइवन, पोयारस्की और कोजा मेनिन की जीवन-गाथाएँ भी पढ़ी जाने लगीं। इसके कुछ दिन बाद ही ऋषि टॉल्स्टाय आदि रशियन साहित्यिकों की लेखनियाँ भी उन्हें कोंच-कोंच कर जगाने लगीं। प्रजा के हाहाकार ने भीषण रूप धारण करना आरम्भ कर दिया और अन्त में सब से पहले विद्यार्थियों ने विप्लव का झण्डा बुलन्द किया। इसके बाद अन्यान्य श्रेणी के नवयुवकों ने साथ दिया। 'निहिलिज्म' और 'अनारकिज्म' का आविर्भाव हुआ। सन् १८६२ में 'विप्लव-समिति की घोषणा' नाम का एक इशत-हार निकला कि—“रूस की प्रजा को जारवंश के रक्त से अपने पापों का प्रायश्चित्त करना पड़ेगा।” यह इशतहार मानो रूस की अनुपम भीषण क्रान्ति का मङ्गलाचरण था।

जार ने भी बिना विलम्ब प्रचण्ड दमन आरम्भ कर दिया। सैकड़ों स्कूल, कॉलेज, सण्डे स्कूल और अखबार बन्द कर दिए गए। कितने ही भले आदमियों को निर्वासन दण्ड-प्रदान किया गया। परन्तु आन्दोलन नहीं रुका। उत्पीड़ित जाति का क्रोध उजालामुखी से निकली हुई 'तर-लामि' की भयङ्कर धारा की तरह बह चला था। उसे रोकने की शक्ति किस में थी? अवशिष्ट स्कूलों, कॉलेजों, कारखानों और कुओं में भी राज-शक्ति को संयत करने के सम्बन्ध में तक वितर्क होने लगा। साथ ही जार के जासूस भी चक्र मारने लगे। नतीजा वही हुआ, जो होना चाहिए। फिर निर्वासन, कारादण्ड और मृत्युदण्ड का बाजार गर्म हो उठा। प्रजा काँप उठी, चारों ओर 'त्राहि-त्राहि' मच गई, परन्तु विप्लव का दमन न हो सका। बम और रिवाल्वर द्वारा, सुविधा और सुयोग के अनुसार, राजपुरुषों की हत्याएँ तथा रेलगाड़ियों और सरकारी ऑफिसों को उड़ा देने के षडयन्त्र होने लगे। सैकड़ों युवक देवी स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर जीवनोत्सर्ग करने लगे, हजारों साईबेरिया में प्रकाशहीन, निर्जन बनों में जाति के दुर्भाग्य का प्रायश्चित्त करने चले गए।

सन् १८६६ ईस्वी में मास्को की गुप्त समिति का कैरा कोजफ नाम के एक युवक ने जार को पिस्तौल का निशाना बनाया। परन्तु लक्ष्य भ्रष्ट हो जाने के कारण उमका प्राण बच गया। कैरा कोजफ को फाँसी की सजा दी गई और समस्त देश के विद्यार्थियों पर कड़ी नजर रखी जाने लगी। जासूसों की काफी भरमार कर दी गई। अत्याचार की मात्रा भी खूब बढ़ा दी गई। परन्तु कोई फल न हुआ। विप्लव दिन दूनी और रात चोगुनी गति से अग्रसर होने लगा।

सन् १८७९ में एक बार फिर जार को मार डालने की चेष्टा की गई, परन्तु सफलता न मिल सकी। क्योंकि उसके जीवन के दिन अभी पूरे नहीं हुए थे। अन्त में सन् १८८१ में एक नवयुवक ने उसे मार डाला।

इसके बाद अन्तिम बार जार निकोलस रूस का भाग्य-विधाता बना। उसने सोचा, दमन की मात्रा अच्छी तरह बढ़ाई नहीं गई थी इसीसे विप्लव-पन्थियों के मन बड़े हुए हैं। इसलिए एक बार समस्त बल-बूता लगा कर उन्हें कुचल डालना चाहिए। उसके अनुचरों और मन्त्रियों ने भी इस राय की तार्ज की। फिर एक बार महा भयङ्कर दमन आरम्भ हुआ। ऐसे-ऐसे अमानुषिक अत्याचार हुए कि जिनका वर्णन नहीं हो सकता। स्त्रियों तक का अपमान होने लगा। रूसी सेना हिसक पशु की तरह देशवासियों का रक्त बहाने लगी। समस्त रूस में हाहाकार मच गया। साथ ही जार निकोलस को थोड़ी सी सफलता भी प्राप्त हो गई। उसके अत्याचार से निहिलिस्टों का नाश हो गया।

परन्तु किसी दल विशेष के नाश से विप्लव का अन्त नहीं होता। 'निहिलिज्म' के अवसान के साथ ही 'सोशल डिमोक्रेट' दल की सृष्टि हुई। इन्होंने निश्चय किया कि अब की श्रमिकों द्वारा विप्लव की आग भड़का दी जानी चाहिए। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए "श्रमिक-मुक्ति-समिति" नाम की एक गुप्त समिति की स्थापना हुई। श्रमिकों को उनकी वास्तविक परिस्थिति का ज्ञान कराया जाने लगा। इसी समय 'विप्लववादी' सोशलिस्टों का भी आविर्भाव हुआ। ये रिवाल्वर, बम और हत्या के भयङ्कर पक्षपाती थे। उन्होंने भीषण रक्तपात आरम्भ किया। विप्लव आन्दोलन तीव्र गति से चलने लगा।

इसी समय इतिहास-प्रसिद्ध रूस-जापान युद्ध

छिड़ा और रूस को बुरी तरह हार खानी पड़ी। इस पराजय में सब से अधिक क्षति रूसी मजदूरों की हुई थी। इसलिए वे बेतरह खलबला उठे और सरकार के प्रति खुलमखुला असन्तोष प्रकट करने के लिए एक दिन सारे देश में श्रमिक हड़ताल मनाई गई और श्रमिकों के एक बड़े भारी दल ने निश्चय किया कि जार निकोलस से इस बात की कैफियत तलब की जाय की उन्होंने क्यों इतना बड़ा युद्ध ठाना था और अब हमारे लिए क्या करना चाहते हैं? वह वृहत्तर श्रमिक-दल जार के महल की ओर अग्रसर हुआ। वह सम्राट के सामने अपना दुःख रोने जा रहा था। परन्तु सम्राट की सेना ने गोलियों से उसका स्वागत किया। हजारों श्रमिक सरे-राह हताहत होकर समस्त दुःख-शोक से विमुक्त हो गए।

यह घटना मानो जारशाही के निश्चित पतन की पूर्व सूचना थी। उसने सारे देश में धधकी हुई विप्लव का भीषण आग्न को प्रचुर ईंधन प्रदान किया। जो अब तक राजनीतिक व्यापार से तटस्थ रहना चाहते थे, उन्होंने भी श्रमिकों से सहानुभूति प्रकट की। विप्लव ने रुद्र मूर्ति धारण की। सरकारी अफसरों तथा सरकार के पृष्ठ-पोषकों की खूब खबर ली जाने लगा। प्रतिहिंसा के भाव ने श्रमिकों को पागल बना दिया था। इस विप्लव का नेतृत्व 'केप्रस्टलेव्ह' नाम के एक वीर ने ग्रहण किया था। वह सरकारी कर्मचारियों का यमराज था।

अन्त में इस भयङ्कर उत्पात से जार भी घबरा उठा। उसने शासन में सुधार करने की इच्छा से 'डूमा' नाम की एक प्रतिनिधि-सभा का सङ्गठन किया। परन्तु वास्तव में 'डूमा' की सृष्टि रूसियों को धोका देने की इच्छा से की गई थी। सम्राट ने शासन सम्बन्धी सारा अधिकार अपने हाथ में रक्खा था। जार की इस मूर्खता ने जले पर नमक का काम किया। अब लोगों को मालूम हुआ कि 'डूमा' महज 'धोखे की टट्टी' है तो वे और भी असन्तुष्ट हो गए।

जार की आयु के दिन पूरे हो चले थे। सन् १९१५ में, यूरोपियन महासमर आरम्भ होने पर, विप्लववादियों ने सदा के लिए जारशाही का अन्त कर डाला। जार निकोलस सपरिवार मार डाला गया। विप्लववादियों ने उसके कुत्ते तक को जीवित न छोड़ा। उसके साथ ही और भी कितनी ही हत्याएँ हुईं। विप्लववाद ने विजय प्राप्त की। परन्तु इससे कृषकों और श्रमिकों का कोई विशेष उपकार न हुआ। इस महाकाण्ड में उन्होंने जितना रक्त बहाया उसका प्रतिफल उन्हें कुछ भा प्राप्त न हुआ। इसलिए जारशाही का अन्त हो जाने पर भी रूसी प्रजा के असन्तोष का अन्त न हो सका।

रूस के इस अन्तिम महान विप्लव में एक अद्भुतकर्मा महापुरुष शामिल था। वह रूस का त्राता और कृषकों तथा श्रमजीवियों का परम-बन्धु था। उम्का आदरणीय नाम था, निकोली लेनिन। उसकी अपार महिमा का वर्णन जड़ लेखनी द्वारा नहीं हो सकता। एक शब्द में वह अवतार था—मूर्तिमान विप्लव था। उसके उच्च आदर्शवाद की कहानी बड़ी लम्बी-चोड़ी है।

उसके विप्लवमय जीवन की रोचक कथा जिन्हें पढ़नी हो, उन्हें सन् १८७० से लेकर १९२४ तक का रूस का इतिहास पढ़ना चाहिए। हम तो यहाँ सूत्र रूप में उसके कार्यों का थोड़ा सा परिचय मात्र प्रदान करेंगे।

रूस में विप्लव की आँधी चल रही थी। हिंसा, हत्या और पड़्यन्त्र सीमा पर पहुँच रहा था। चारों ओर निरानन्द का साम्राज्य फैला हुआ था। उसी समय (सन् १८७०) में, एक छोटे से गाँव में संसार के इस अद्वितीय महापुरुष ने जन्म लिया था। उसका पिता किसान था। परन्तु पढ़-लिख कर 'स्कूल-इन्स्पेक्टर' बन गया था। उसकी इच्छा थी बुद्धि में विश्राम करने की, इसलिए उसने लेनिन को पढ़ा लिखा कर वकील बनाया। परन्तु लेनिन अपने बड़े भाई अलेक्जेंडर आइलिच विलनफ की मदद से विप्लवपन्थियों विशेषतः विप्लवादी छात्रों से परिचित हो चुका था। उसने कानून की पुस्तकें समेट कर रख दीं और सोचने लगा कि क्या यही जीवन का लक्ष्य है। हिन्दुस्तान के वकीलों की तरह देशवासियों के झगड़े में सहायक बन कर माल पैदा करना? इतने में, एक दिन सुना कि बड़े भाई को फाँसी की सजा हो गई! उस समय वह केवल अठारह वर्ष का बालक था। उसके कोमल हृदय पर इस घटना का गहरा प्रभाव पड़ा, साथ ही उसे जीवन का लक्ष्य भी मिल गया। वह फौरन् विप्लव की धधकती आग में कूद पड़ा।

उसने तत्कालीन विप्लवपन्थियों की कार्य-प्रणाली तो पसन्द की, परन्तु उनके उद्देश्यों से सहमत न हो सका। इसलिए अपने पूर्ववर्तियों के प्रति श्रद्धा प्रकाश करते हुए उनके उद्देश्यों का विरोध करने लगा। छात्रावासों के सिवा कारखानों और खेतों को भी उसने अपना कार्य-क्षेत्र बनाया 'श्रमिक-सङ्घ' स्थापित किया, अखबार निकाला और 'कुलोदोले' (!) में घूम-घूम कर मौखिक प्रचार करने लगा। उसके युक्तिपूर्ण अर्थ-नैतिक प्रबन्ध और राष्ट्रीय समस्या की नई व्याख्या पढ़ कर प्रजातन्त्रवादी नेता चञ्चल हो उठे और अपने मतवाद को इस नई आफत से बचाने की चेष्टा करने लगे। परन्तु उसके विचारों की बिजली चमक चुकी थी। 'हड़ताल की मार' से पूँजीवाद की कमर में दर्द पैदा होने लग गया था। इसी समय उसने 'जुर्माना' नाम की एक पुस्तिका लिखी। उन दिनों रूस के मजदूरों पर ज़रा-ज़रा सी बात के लिए जुर्माने हुआ करते थे। श्रमिक घबराए हुए थे। इसलिए उस पुस्तिका में लिखे अर्थनैतिक विचारों का मजदूरों पर काफी प्रभाव पड़ा। उन्होंने इस अन्याय के प्रतिकार के लिए 'हड़ताल' का आश्रय लिया।

परन्तु बहुत परिश्रम करने पर भी लेनिन के अनुगामियों की संख्या मुष्टिमेय की परिधि को पार न कर सकी। इसलिए जिस तरह महात्मा गाँधी ने केवल सोलह साथियों को लेकर दक्षिण अफ्रिका में महान सत्याग्रह संग्राम छेड़ दिया था, उसी तरह महात्मा लेनिन ने भी अपने अल्प-संख्यक साथियों को लेकर कार्यारम्भ कर दिया। वह निराश होना नहीं जानता था, उसे अपने आत्मबल पर अटल विश्वास था।

खैर, इसी समय पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर के कैद कर लिया और दीर्घ काल के बाद जब वह छूट कर लौटा तो उस समय रूस की हालत अच्छी न थी। पुलिस के अत्याचारों के कारण लेनिन-जैसे देशभक्त का एक क्षण भी रूस में ठहरना मुश्किल था। इसलिए जेलखाने से छूटते ही उसने यूरोप की यात्रा कर दी। परन्तु थोड़े दिनों के बाद उसे मालूम हो गया कि देश की सेवा देश में रह कर जितनी अच्छी हो सकती है, उतनी विदेश में रह कर नहीं हो सकती, इसलिए वह गुप्त रूप से फिर रूस में आकर रहने लगा। और अपने सिद्धान्तों का प्रचार करने लगा। परन्तु शीघ्र ही पुलिस ने उसे फिर पकड़ा और अबकी वह आजन्म के लिए साइबेरिया भेजा गया।

उस समय स्वीटजरलैण्ड यूरोपियन राजविद्रोहियों का प्रधान आश्रय-स्थल था। इसलिए साइबेरिया पहुँचते ही लेनिन ने वहाँ से भाग कर स्वीटजरलैण्ड चले जाने का प्रयत्न आरम्भ कर दिया और एक दिन मौक़ा पाते ही निकल पड़ा।

स्वीटजरलैण्ड पहुँच कर लेनिन ने अन्तर्जातीय मजदूर-सङ्घ से सम्बन्ध स्थापित किया और दिन-रात उसी की रचना और प्रचार में व्यस्त रहने लगा। परन्तु इसके साथ ही रूस के आन्दोलन की प्रगति पर भी उसकी तीक्ष्ण दृष्टि थी। समय-समय पर वह गुप्त रूप से वहाँ अपने सिद्धान्तों का प्रचार भी करता रहा। इसके बाद, सन् १९०१ में, उसने 'इस्क्रा' (चिनगारी) नाम का एक अखबार निकाला और उसकी हज़ारों प्रतियाँ रूस के श्रमिकों और किसानों में वितरित होने लगीं। वास्तव में इस पत्र के सहारे लेनिन ने रूस के किसानों और मजदूरों में नवजीवन का सञ्चार कर दिया। उसके अलकान्त परिश्रम की सफलता उसे प्रत्यक्ष रूप से दृष्टि-गोचर होने लगी। परन्तु इसके साथ ही उसके सिद्धान्त के विरोध ने भी प्रबल रूप धारण किया। प्रतिद्वन्द्वी नेताओं ने अपना सारा बल लगा कर उसे हीन, ढोंगी और बकवादी प्रतिवादित करने की चेष्टा की। यहाँ तक कि उसके व्यक्तित्व और चरित्र पर भी खूब आक्रमण हुए। परन्तु साथ ही लेनिन की आग उगलने वाली लेखनी भी चुप न थी। उसने अकेले ही अपने तीक्ष्ण शब्द-बाणों द्वारा सारे प्रतिद्वन्द्वियों को जर्जरित कर दिया। उन्होंने उसे चरित्र-हीन बताया तो लेनिन ने भी उन्हें धनतन्त्रवादी, प्रभुत्वकामी, सुविधावादी और नरखादक आदि विशेषणों से विभूषित करना आरम्भ किया। उस समय रूस में 'सोशल रिमोल्यूशरी' दल का बड़ा जोर था। वे कुछ लोगों को उत्तेजित कर एक विद्रोह करा देने का मौक़ा देख रहे थे। लेनिन ने इसका विरोध आरम्भ किया। उसने लोगों को समझाया कि यह विद्रोह व्यर्थ होगा। बात भी वही हुई। राजशक्ति ने अल्प प्रायस द्वारा ही विद्रोहियों को कुचल डाला।

इस समय रूस के राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं में दो दल हो गए थे,—(१) 'मानशेविक' (बहु-संख्यक) और (२) 'बोलशेविक' (अल्प-संख्यक)। लेनिन इसी दूसरे दल का आविष्कारक, अनुयायी और पृष्ठपोषक था। सन् १९०३ में गुप्त रूप से बोलशेविक कॉङ्ग्रेस का अधिवेशन हुआ।

रूस के कितने ही प्रतिभाशाली नेता इससे पहले ही लेनिन के पक्षपाती हो गए थे। परन्तु लेनिन का कठोर आदर्शवाद उन्हें सह्य न था। इसलिए कुछ दिनों के बाद वे अलग होकर फिर 'मानशेविकों' में जा मिले। फिर वही सुविधावाद और राज-विधान-मङ्गत अर्थनैतिक आन्दोलन आदि की बातें होने लगीं। यहाँ तक अन्त में उसके अन्तरङ्ग मित्रों ने भी उसका साथ छोड़ दिया। परन्तु लेनिन अपने सिद्धान्तों पर पर्वत की तरह अचल-अटल भाव से डटा था। उसने साथियों से कहा—“पर-वाह नहीं, तुम मुझे छोड़ कर चले जाओ। मैं अकेला ही अपन उद्देश्य की पूर्ति के लिए काफी हूँ।” साथियों ने कहा—“हमारे हट जाने पर लेनिन मुर्दा है! उस की बात कोई नहीं सुनेगा।” लेनिन न दृढ़ स्वर से उत्तर दिया—“सब के अन्त में जो हँसता है, उसी को हँसी सार्थक होती है। देखा जाय, देश किस का आराज सुनता है?”

शीघ्र ही मानशेविकों की परिस्थिति डार्वॉडोल हो गई। कभी वह एक क्रदम आगे बढ़ते और कभी दो क्रदम पीछे हट जाते। इस समय लेनिन का 'इस्क्रा' अखबार उन्हीं मानशेविकों के अधि-कार में था। जो एक दिन आग उगलता था, वह अब बर्फ बन गया था। इसलिए लेनिन ने 'यूपी-रिग्ड' (Yperiod) नाम का एक दूसरा अखबार निकाला। देश-त्यागी रूसियों तथा विदेशस्थ रूसी छात्रों की दी हुई भीख के भरोसे यह पत्र चलने लगा। यह था तो छोटे ही आकर-प्रकार का, परन्तु बड़े-बड़े दिग्गजों को विचलित कर दिया। लेनिन के प्रतिद्वन्द्वी प्रधान नेताओं का प्रभाव खाक में मिल गया।

सन् १९०५ में जब सारे रूस में बोलशेविकों की तूती बोलने लगी तो 'सोशल डिमाक्रेट' दल वाले लेनिन और उसके अनुयायियों पर सख्त नाराज़ हो गए। बड़े जोर-शोर से बोलशेविकों का विरोध आरम्भ हुआ। सन् १९०५ में 'सोशल डिमाक्रेटिक लेबर-पाटी' का तीसरा अधिवेशन हुआ तो लेनिन भी गुप्त रूप से उसमें शामिल हुआ। उसने मान-शेविकों को समझाने की चेष्टा की। परन्तु कोई फल न हुआ। उसके एक पुत्र ने समझौता कर लेने की सलाह दी। परन्तु अपने उच्च आदर्श को बिगाड़ कर वह समझौते के लिए राजी नहीं हुआ।

सन् १९०५ में फिर विद्रोह हुआ और राज-शक्ति द्वारा कुचल डाला गया। परन्तु अन्त में मानशेविकों ने बड़े विनाश-कलाप के बाद स्वोत्कार किया कि श्रमिक बोलशेविकों के हाथों में हैं और देश में अब मानशेविकों का नेतृत्व नहीं रहा।

विद्रोह व्यर्थ होने पर लेनिन को कोई चिन्ता नहीं हुई। वरन् वह इस घटना से प्रसन्न हुआ और भाव भयङ्कर क्रान्ति की तैयारी करने लगा। इसा समय मौक़ा देख कर उसने गुप्त रूप से 'सोवियट सङ्घ' की स्थापना भी कर डाली। जार-शाही की नजर बचा कर उसके कई गुप्त अधिवेशन हुए। कुछ लोग 'सावियट' का अर्थ श्रमिकों के अभाव, अभियोगों को दूर करने वाली संस्था समझे बैठे थे। परन्तु लेनिन उसे एक महान राष्ट्रीय संस्था समझता था। इस समय लेनिन को फिर रूस छोड़ना पड़ा। क्योंकि पुलिस का मालूम हो गया था कि वह यहीं है। फलतः प्रचार का कार्य अपने अनुयायियों को सौंप कर

वह फिर यूरोप चला गया। इसके सिवा सन् १९०३ के विद्रोह की व्यर्थता के कारण रूस में कुछ अवसाद भी आ गया था। ज़ार के अत्याचारों से पुराने दल के लोग तितर-बितर हो गए थे। केवल थोड़े से बोलशेविक स्वतन्त्रता का महामन्त्र जपते-जपते सुअवसर की प्रतीक्षा करने लगे। लेनिन अपने मतवाद के अनुसार अर्थनैतिक प्रबन्ध और पुस्तिकाएँ लिखने लगा और सैकड़ों नवयुवक साथी उसके मत के प्रचार में लगे। इधर ज़ार की सरकार ने भी निर्मम भाव से स्वतन्त्रतावादियों को कुचलना आरम्भ कर दिया था। हत्या, निर्वासन और कारादण्ड की धूम सी मच गई थी। इस तरह प्रायः पाँच वर्ष बीत गए।

सन् १९१०-११ में फिर आशा के कुछ चिन्ह दिखाई पड़े। लेना की सोने की खानों में काम करने वाले मजदूरों ने हड़ताल कर दी थी। इससे नाराज होकर सरकार ने उन पर गोली चलाने की आज्ञा दी। कितने ही मजदूर मार डाले गए। इसीलिए एक बार फिर मजदूर जाग उठे। लेनिन भी सुयोग पाकर पेट्रोग्राड के निकट गैलीलिया नाम के स्थान में आकर रहने लगा। बोलशेविक धीरे-धीरे शक्ति सञ्चय करने लगे। प्रचार-कार्य के लिए 'प्रविदा' नाम का एक पत्र भी निकलने लगा। लेनिन का साम्यवाद धीरे-धीरे रूस की रंगों में प्रवेश करने लगा। सन् १९१३ में पेट्रोग्राड की एक महती श्रमिक सभा ने बहु-सम्मति से लेनिन का 'बोलशेविकवाद' स्वीकार कर लिया। उस समय लेनिन बीमार था। पेट्रोग्राड से सैकड़ों कोस की दूरी पर रोग-शय्या पर पड़ा हुआ जब उसने यह शुभ-सम्बाद सुना तो उसकी आँखों से आनन्द के आँसू बहने लगे। इस घटना के कुछ दिन बाद ही समस्त रूस के श्रमिकों ने निर्वासित और लाञ्छित लेनिन का नेतृत्व स्वीकार कर लिया।

यूरोपीय महासमर के समय लेनिन अपने कुछ विश्वासी अनुयायियों के साथ गैलीलिया के एक छोटे से गाँव में था। उसे आशा थी कि समस्त संसार के श्रमिक नेता इस महासमर को गृह-विवाद के रूप में परिणत कर। राष्ट्र की बागडोर धनवानों के हाथों से छीन लेंगे। उसने मजदूरों को सलाह दी कि वे इस युद्ध में सहायता न दें। परन्तु किसी ने उसकी बातों पर ध्यान न दिया। यहाँ तक कि खास रूस के श्रमिक नेता भी उसके शत्रु बन गए। उसके एक सहकर्मी ने यहाँ तक कह डाला कि "तुम महा अनर्थ कर रहे हो। श्रमिकों को गृह-कलह की सलाह देकर उनका सत्यानाश कर डालना चाहते हो। इस समय अगर तुम रूस में होते तो तुम्हें इसका कटु फल चखना पड़ता।" लेनिन ने शान्त भाव से उत्तर दिया—“तुम्हें मानव-जाति के भविष्य का ज्ञान नहीं है। इसीसे ऐसी बातें कर रहे हो।”

अन्त में महासमर समाप्त हुआ। अर्थनैतिक सङ्कट के कारण चारों ओर दरिद्रता फैल गई। यह लेनिन के लिए शुभ अवसर था। उसने फौरन तीसरे अन्तर्जातिक सङ्घ की प्रतिष्ठा की। जर्मनी, इटली तथा अन्यान्य स्थानों के बहुत से समाजतन्त्रवादी नेता इस सङ्घ में शामिल हुए। निश्चय हुआ कि समस्त यूरोप में अन्तर्जातिक विप्लव कराया जाय। लेनिन के सहकर्मियों की समझ में आ

गया कि यह महावज्र एक दिन साम्राज्यवाद और प्रजातन्त्रवाद आदि को चूर्ण-विचूर्ण करके दम लेगा। इसलिए वे भी सहमत हो गए।

लेनिन अब तक स्वीटज़रलैण्ड में था। परन्तु सन् १९१७ में वह फिर रूस लौट आया। महा-युद्ध के कारण उस समय रूस की अवस्था अत्यन्त शोचनीय हो गई थी। दरिद्रता सीमा पार कर गई थी और लोग भूखों मर रहे थे। अवसर देख कर 'मानशेविक' और 'सोशल-डीमोक्रैट' दल वालों ने विद्रोह आरम्भ कर दिया। ज़ारशाही का पतन हुआ और देश का शासन-सूत्र प्रजातन्त्रवादियों के हाथों में चला गया। लेनिन बड़ी गम्भीरता से परिस्थिति का अध्ययन कर रहा था। उसकी इच्छा थी कि अवसर मिलते ही देश का शासन-सूत्र श्रमिकों के हाथों में दे दिया जाय। उसने अपने अन्यान्य सहकर्मियों को भी बुला लिया। इसी समय सेनापति क्रेनेस्की अपनी सेना के साथ जर्मन सीमान्त से लौट कर पेट्रोग्राड आया। मध्य श्रेणी के विप्लववादियों ने बड़े समारोह के साथ देश का शासन-भार अपने कंधों पर लिया। रूस के प्रत्येक नगर में रक्त-स्रोत बह चला। लेनिन सुयोग की प्रतीक्षा में था। मानशेविकों ने बोलशेविकों से सुलह की बातचीत की। परन्तु लेनिन तथा उसके अनुयायियों ने इन्कार कर दिया। इसलिए मानशेविक और मध्य श्रेणी के विद्रोही मिल कर बोलशेविकों का मूलोच्छेद करने पर उतारू हो गए। बहुत से बोलशेविक मार डाले गए। विप्लवियों और बोलशेविकों में भयङ्कर सङ्घर्ष आरम्भ हुआ। क्रेनेस्की ने लेनिन को पकड़ लेने की आज्ञा दी। इसलिए लेनिन ने गुप्त रूप से बोलशेविकों को भड़काना शुरू किया। गृह-कलह सीमा पर पहुँच गया। देश का कारबार बन्द हो गया। बैंकों ने दिवाला बोल दिया। अन्न महंगा हो गया। समस्त देश में आतङ्क छा गया। परन्तु अन्त में विजयश्री बोलशेविकों को प्राप्त हुई। लेनिन की महान शोणित-साधना सफल हुई। मध्य श्रेणी के विप्लववादी हार कर भाग गए।

इस महाविप्लव में लेनिन ने अपने अपूर्व साहस, दृढ़ता और विचित्र व्यक्तित्व का परिचय दिया था। इस समय केवल शत्रु ही उसके विरोधी नहीं थे, वरन् अधिकांश बोलशेविक प्रतिनिधि भी उसकी जड़ खोद देना चाहते थे। परन्तु इस भयङ्कर परिस्थिति में भी वह विचलित न हुआ। फिर तो समस्त देश ने एक साथ ही अपना मस्तक उसके चरणों पर रख दिया। उसका एक-एक शब्द वेद-वाक्य की तरह माना जाने लगा। इस विद्रोह में वह घायल होकर शय्यासायी हो गया था, परन्तु उसका दिमाग उस वक्त भी काम कर रहा था।

इस राष्ट्रीय महायज्ञ में आरम्भ से अन्त तक छाया की भौंति जिसने लेनिन का साथ दिया था, वह उसकी अलौकिक क्षमताशालिनी धर्मपत्नी मादम कनस्टाण्टी नोवा थी। वास्तव में नोवा उसकी सच्ची सहधर्मिणी थी। उसे ईश्वर ने कमाल का साहस और विचित्र शक्ति दी थी। उसके कार्यों का, उसकी शक्ति का और उसकी पतिभक्ति का सम्यक परिचय प्रदान करना सहज नहीं। वह देवी थी, लेनिन की मूर्तिमती शक्ति थी। उसमें बहुत से अलौकिक और असाधारण गुण थे।

हमारा तो यह दृढ़ मत है कि नोवा के कारण ही लेनिन को शीघ्र सफलता प्राप्त हो सकी थी।

अस्तु। विद्रोहियों के परास्त हो जाने पर लेनिन की जिम्मेदारी और भी बढ़ गई। क्योंकि एक तो उस समय रूस की अवस्था अत्यन्त शोचनीय हो गई थी और दूसरे सारा संसार बोलशेविकों का विरोधी था। खास कर, यूरोप के साम्राज्यवादी तो उसे फूटी आँख भी देखना नहीं चाहते थे। परन्तु इन पहाड़-से विघ्नो की ओर भ्रूक्षेप न करके लेनिन ने महात्मा कार्ल मार्क्स के आदर्श पर 'सोवियट रूस' का सङ्गठन आरम्भ कर दिया। ध्वंस का विकराल देवता अब निर्माण का वरद पाणि पसार कर नवीन उद्यम और नवीन उत्साह के साथ आविर्भूत हुआ। रूसी राष्ट्र ने उसे अपना जन-नायक निर्वाचित किया। लेनिन ने घोषणा की कि हमने राजशक्ति और पूँजीवाद को परास्त किया है, परन्तु अभी हमें अपनी कम-जोरियों और अयोग्यताओं से लड़ना बाकी है। इसलिए हमें यथेष्ट दृढ़ता और साहस से काम लेना चाहिए। सन् १९०४ में जिस महान आदर्श को लेकर हम कार्यक्षेत्र में अवतीर्ण हुए थे; उससे हम तिल-मात्र भी विचलित न होंगे। राष्ट्र ने सिर झुका कर उसकी यह आदेशवाणी स्वीकार की। महात्मा कार्ल मार्क्स की कल्पना कार्य में परिणत हुई। रूस की ज़मीन रूस के किसानों को मिली। कारखानों की आय मजदूरों के लिए रही। कोई किसी का मालिक नहीं। किसी पर किसी का प्रभुत्व नहीं। न कोई गरीब, न कोई अमीर; न कोई लाट साहब, न कोई चपरासी। सभी भाई-भाई। भेद-भाव का कहीं नामोनिशान नहीं। यद्यपि कुछ लोग कहते हैं कि यह व्यवस्था चिरस्थायिनी न होगी। न सही। संसार में चिरस्थायिनी है कौन सी वस्तु? अस्थिरता ही तो इसकी विशेषता है, परन्तु इस समय तो सारा संसार रूस की ओर समुत्सुक दृष्टि से देख रहा है। सभी लेनिन के बताए हुए तरीके के मुताबिक देश के कृषकों और मजदूरों की अवस्था सुधारने की फिक्र में हैं। इसे कौन नहीं स्वीकार करेगा कि मेहनत का फल मेहनत करने वाले को ही मिलना चाहिए। बस, यही तो बोलशेविज्म है। संसार विरोध करता रहे। परन्तु लेनिन और लेनिन की महान कीर्ति को विश्व के पर्दे से पोंछ कर फेंक देना सम्भव नहीं है।

खैर, सन् १९१८ से लेकर १९२४ तक परिश्रमपूर्वक नवीन राष्ट्र का निर्माण कर, मित्रों को आनन्द और शत्रुओं को आतङ्क प्रदान कर, मानव-महत्व का गगनचुम्बी विजय-स्तम्भ इतिहास के वक्षस्थल पर स्थापित कर, रूस से दीनता और दरिद्रता का नामोनिशान मिटा कर, चिर-पददलित निराश्रय रूसी किसानों और मजदूरों को मुक्ति प्रदान कर तथा सुयोग्य साथियों के हाथों में राष्ट्र की बागडोर देकर मानव-मित्र लेनिन ने सन् १९२४ में महाप्रस्थान किया। रूस ने शोक-गम्भीर भाव से अपने महान नेता को श्रद्धाञ्जलि प्रदान की और समस्त संसार के निपीड़ित और नियायित कृषकों और श्रमिकों ने उसके लिए शोकाश्रु विसर्जन किए। लेनिन का पार्थिव शरीर अब नहीं रहा, परन्तु वह जीता है और सदा जीता रहेगा।

#

*

*

तूफाने-ज़राफ़त

**कभी भिस्ती के बच्चे को शहे-
काबुल बनाते हैं !**

[श्री० "आजिज़" लखनवी]

बफ़ा की छत से, जब उलफ़त का कनकौआ बढ़ाते हैं,
यह भोली शकु वाले, जुलम का लङ्गड़ लगाते हैं !
किसी दिन जब मियाँ मजदूर हमारे सर पर आते हैं,
तो अच्छी शकु वालों को भी हम काला बताते हैं !
शिकायत करते हैं यह वह, हर-इक से बावफ़ा बन कर,
गले जिनके दबाता हैं, वही आँखें दिखाते हैं !
नहीं तो कौन, किसके वास्ते 'सर' सर्क करता है,
खुदा मुँहों को रखे, जो हमें हल ग़ा खिलाते हैं !
कभी धुलवाते हैं सड़कों की नाली बाप से उसके,
कभी भिस्ती के बच्चे को, शहे-काबुल बनाते हैं !
नहीं मालूम टुकड़ा कौन सा पुरसाज है इसमें,
जो मेरा हाले-दिल सुन कर, सितमगर नाच जाते हैं !
कहा आशिक से दिलने, पाकर उनको महवे-आराईश
बना अब तू भी दाढ़ी-मोछ, वह जलफ़े बनाते हैं
वह मारें या जिलाएँ, मुझको 'आजिज़' जान तो छोड़ें,
यह मर्ग और जीस की रस्सी में क्यों भूला भूलाते हैं !

जान हारेंगे, जी न हारेंगे !

[महाकवि "अकबर" इलाहाबादी]

इसमें अक्स आपका उतारेंगे,
दिल को अपने यूँही सँवारेंगे !
बहस में मौलवी न हारेंगे,
जान हारेंगे, जी न हारेंगे !
हमसे करती है यह बहुत ग़मज़े *,
हम भी दुनिया पे लात मारेंगे !
आप नाहक पे ओर हम हक़ पर,
आप से हम कभी न हारेंगे !
इश्क़ कहता है लुत्फ़ होंगे बड़े,
हिज़ कहता है, जान मारेंगे !
लीजिए जान है यही जा खुशी,
कीजिए जुलम हम न मारेंगे !
मुत्तिलाए-बला तो हा ग़ाफ़िल,
यह भी अल्लाह को पुकारेंगे !
दिल न दूँगा मैं आपको हर्गिज़,
मुअ्त में आप जान मारेंगे !
दिल को अफ़सुर्दगी † न जाएगी,
हाँ वह चाहेंगे, तो उभारेंगे !
लाए भी तो खुदा कहीं वह घड़ी,
कहते हैं तुझको ख़ूब मारेंगे !
पन्द् ‡ "अकबर" का देंगे क्या नाम ‡,
गुल को क्या बाराबों सँवारेंगे ?

१—रूपया, २—बादशाह, ३—मौत, ४—जिन्दगी,
५—हाव-भाव, ६—उद्धिगता, ७—शिर्वा, ८—शिकक !

दम बन्द है और ज़बाँ खुली है

[महाकवि "अकबर" इलाहाबादी]

कहाँ उर्दू में हिन्दी में ज़रे नज़द,
वही अच्छा है, जो गिनता मनी है !
मेरे नज़दीक तो बेसूद यह बहस है,
मियाने "हमदमो" "चिन्तामनी" है !
मिल का आटा है, नल का पानी है,
आबो-दाने की हुकमगानी है !
एक अदा से कहा मिसों ने "कम ऑन",
तीर का मुझमें अब रवानी है !
मानी की गिरह कहाँ खुली है,
अलफ़ाज़ हा का दुकाँ खुली है !
हर बाह की तह में है यहाँ आह ;
दम बन्द है और ज़बाँ खुली है !
यादे-हक़ दिल से दूर कर न सके,
मुझ से यह बुत गुरुर कर न सके !
मुझको तो बस में कर लि । बेशक,
हक़ को राज़ो हुज़ूर कर न सके !
ले-ले के क़ज़म के लोग भाले निकले,
हर सिम्त से बीसियों रिसाले निकले !
अफ़सोस कि मुक़लिसी ने छापा मार्ग,
आखिर अहवाब के दिवालें निकले !

उनको अपनी लीडरी से काम है !

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

न समझो बात के अपने धनो हैं,
वही 'सपरू' वही "चिन्तामनी" हैं !
जमाना जानना है इसको "बिस्मिल"
फ़क़री में भी हम दिन के ग़ानो हैं
क़ौदख़ाने में भी है 'ए०' 'बी०' 'सा०'
गोया कॉलिज की है कोई डिगरी,
बैठो चुपचाप बस यही कह कर,
वाह रे बात वीरे-इङ्गलिश की !
वह बोले अगर दुवाँ खुला है,
कानून की भा दुक़ खुली है !
"बिस्मिल" न रुकेगी अब यह हर्गिज़,
महफ़िल में मेरी ज़बाँ खुली है !
हम यह तरक़-कुसूर कर न सके,
दिल को दुनिया से दूर कर न सके !
सब से अकड़ा किए मगर "बिस्मिल"
मौत से कुछ गुरुर कर न सके !
नाम हो जाने से उनको काम है,
रात-दिन यह फ़िक़ सुबहो-शाम है !
काम से कुछ भी उन्हें मतलब नहीं,
उनको अपनी लीडरी से काम है !

**"तुम्हारा पेट क्या भरता नहीं अब
चार आने में ?"**

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

यह कह कर उज़्र करते हैं वह तनख़वाहें बढ़ाने में,
तुम्हारा पेट क्या भरता नहीं अब चार आने में ??
कभी मैं लिख नहीं सकता, कभी तुम सुन नहीं सकते,
वह दर्द-आमेज़ बातें हैं, मेरे दिल के फ़िसाने में ।
जो बङ्गलों में उछलते-कूटते हैं बड़ के बन्दर से,
कोई दर्बार वह करने लगे, क्यों शामियाने में ।
खुदाई में हमारा ज़िक्र अब कोई नहीं करता,
हमारा नाम रौशन था, कभी सारे ज़माने में ।
यह सुन रखो कि आदत है जिन्हें आचाद रहने की,
किसी सूरत से रह सकते नहीं वह कैदख़ाने में ॥
ख़ुद अपने मुँह से तो भिटू-मियाँ बनना ही आता,
जमाना जानता है इसको, हम क्या थे ज़माने में ।
हमारी जान जातो है, तो जाये ग़म नहीं इसका,
मजा आता है ऐ "बिस्मिल" उन्हें बिस्मिल बनाने में ।

**वह सबको खींचते हैं पॉलिसी से
अपनी टोली में !**

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

मिलेगा कोई अब क्या, कॉङ्ग्रेस वालों की टोली में
वह कहते हैं उड़ा देंगे, तुम्हें हम एक गोली में
खुदा की शान उनको, हो गया अब शौक 'मोटर' का
सफ़र करते थे जो पहले 'मियाता' और 'डोली' में
कोई मिस्टर के यह रङ्गे-मुहब्बत का असर देखे !
'मिसे' कमसिन से मिलने जा रहे हैं आज होली में !
जो सचपूछो, तो मतलब कुछ न मैं समझा, न तुम समझे
खुदा जान, वह क्या क्या कह गए, आज अपनी बोली में
वह कहते हैं तुम्हारा नाम ऑनर लिस्ट में निकले
अगर मिल जाओ सच्चे दिल से, आकर मेरी टोली में
शिकम में दर्द हो तो, 'वॉक्टर भा' से मिलो चल कर
अभी अच्छा किए देते हैं तुमको एक गोली में
इंडाटर हो, कि लीडर हो, पिलाडर हो, कि मिस्टर हो
वह सबको खींचते हैं, पॉलिसी से अपनी टोली में
वह क़ातिल दिल से तो मिलता नहीं ऐ हज़रते 'बिस्मिल'
दिखाने के लिए यों ही गले मिलता है होली में

है उनके मुँह पे लगा कोतार होला में

[श्री० "वेदव" गयावा]

गुलाबजान का करते हैं प्यार होली में,
कहीं गले का न हो जाय दार हंगली में !
हमारी गाय में पक्के वहा खिलाड़ी हैं,
बने हुए हैं रंगे जो सियार होली में !
किसी का नारा जो देखो तो बैद जी बोले,
निकाल डालूँगा दिल का बुखार होली में !
जो अपना मुँह लिए लीटे हैं आज लन्दन से,
है उनके मुँह पे लगा कोलतार होला में !
वह खेचते हैं ज़माने से खुन के अब होली,
है उनके सर पे जो हाली सवार होली में !
गले न मिल सके, थो भीड़ मिलने वालों की,
हम उनके घर पे गए बार बार होली में !
कुछ ऐमे दब से मिले, उनसे हम गले "वेदव",
कि खुद गले वह मिले बार-बार होली में !

तूफाने-जराफत

अपनी धोती पर भी, साया पड़ गया पतलून का !

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]
यह जवाब आया है, "लॉ कॉलिज" से टेलीफोन का,
याद करता हूँ सबक, मैं रात-दिन कानून का।
रङ्ग-क्यों चल कर नहीं, तुम देखते कानून का,
आज सुनते हैं, "सेशन" में "केस" होगा खून का।
फाग गाता हूँ, सरे-द्वार आजादी के साथ,
मैं नहीं पाबन्द होली में, किसी कानून का !
रङ्ग-बेरङ्गी से, अब इन्साफ होता ही नहीं,
क्या समझ कर मैं करूँ, दावा किसी पर खून का ?
वह यह कहते हैं, कि है भूला हुआ "लीडर" इसे,
"पानियर" को याद है, सारा सबक कानून का।
रो रहे हैं आज मन्दिर में, यह कह कर बरहमन,
अपनी धोती पर भी, साया पड़ गया पतलून का।
मुतमइन^१ होकर, कोई अब साँस ले सकता नहीं,
इस तरह गर्दन में फन्दा पड़ गया कानून का।
तेरो^२ क्रांतिल से, गले मिल-मिल के होली खेल ली,
सुखरू^३ "बिस्मिल" को लाजिम है कफन भी 'दून' का।

फँसाना चाहती है क्या कोई चण्डूल होली में ?

[हज़रत "जाहिद" इलाहाबादी]
जला डालें न स्टूडेण्ट रेज-स्टूल होली में,
इसी से बन्द हो जाते हैं सब स्कूल होली में !
समझ ही में नहीं आता कि यह त्यौहार कैसा है,
कहीं पानी, कहीं कीचड़, कहीं है धूल होली में !
तअज्जुब क्या अगर बुलबुल तराने पेश के छेड़ें,
चमन में फूल भी फूले हैं पीकर फूल होली में !
मिसे-कमसिन जो बन ठन कर सिविल लाइन में
फिरती है,
फँसाना चाहती है क्या कोई चण्डूल होली में ?
यह गोला भङ्ग का है या है मोतोचूर का लड्डू,
बड़े आए बनाने आप हमको 'फूल' होली में !
इरादा है कि अब इस रङ्ग में लिखवा करूँ मैं भी,
राजल हो जाय ऐ "जाहिद" जो यह मकबूल होली में !

साहब का बटलर हूँ !

[श्री० देवीप्रसाद गुप्त "गुब्बज़ार" बी० ए०, एल्-एल्-बी०]
दिल में है कहूँ मैं भी तुम सा हूँ आदमी,
कहते हैं मगर साहब 'नेटिव', तो क्या कहूँ ?
साहब जो करें, है वही क्रिस्मत का फैसला,
माना मैं खतावार हूँ, 'नेटिव' हुआ मैं क्यों ?
उन्हें कुत्ते की सोहबत में मजा कुछ आ ही जाता है,
मगर 'नेटिव' की बातों में उन्हें क्या लुत्फ आता है ?
कहा मैंने कि हूँ 'नेटिव' मगर देखो कलक्टर हूँ,
वह बोला चुप रहो ! गोरा हूँ, गो साहब का बटलर हूँ !

१—चैन से, २—तलवार, ३—भाग्यशाली।

मक़तल में होली है !

[अमीर-उशशोरा जनाब "अमीर" लखनवी]
अजब आलम है उसका वज़ूआ सादी शक़ भोली है,
खुपी जाती है दिल में क्या रसीली नर्म बोली है ?
अदाएँ खेलती हैं रङ्ग, तलवार उसने तोली है,
लहू की चलती हैं पिचकारियाँ, मक़तल में होली है !
बहार आई चमन होता है मालामाल दौलत से,
निकाहा चाहते हैं ज़र गिरह गुब्बो^२ ने खोली है !
झका क्यों हो जो आवाज़ें कसे आशिक ने गैरों पर,
यह आज़ादों की बातें हैं, यह उनकी बोली-डोली है !
नज़र-बाज़ी से जो मिलती है, लड़कत दिल में रखते हैं,
तेरे दीवार के भूखे फ़कीरों की यह भोली है !
अदा ही से तेरी मरता है जो मरता है दुनिया में,
फ़ज़ा कहते हैं जिसको, वह इसी साँचे की गोली है
वह कहते हैं कि हम आँखों में सब को ताड़ लेते हैं !
मुहब्बत सारी दुनिया की, इसी कटि में तोली है !
गिलौरी खाई उस गुब्बो-दहन ने तो यह मुरझाए—
कि है जो फूल गुलशन में, मेरे पानों की डोली है !
खुशामद ऐ दिले-बेताब इस तस्वीर की कब तक,
यह बोला चाहती है, पर न बोलेगी, न बोली है !
सिवा तेरे किसी का आईने ने मुँह नहीं देखा,
तुझे देखा है जब से, आरसी ने आँख खोली है !
तसौवर^४ में भी उनको खींचता हूँ तो वह कहते हैं,
मसक जाए न ओ बेदर्द ! नाज़ुक मेरी चोली है !
"अमीर" हम बेवफ़ा दुनिया की सूरत पर न तुम जाओ,
बड़ी अय्यार है, मकार है, जाहिर में भोली है !

यहाँ मस्ता की टोली है

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]
दमे-तक्रदीर^१ आपस की गिरह उस मिस ने खोली है,
तअज्जुब है कि दिल है सज़त, लेकिन नर्म बोली है !
बड़े अन्शज़ से तलवार अब क्रांतिल ने तोली है,
लहू की नदियाँ बह जाएँगी, मक़तल में होली है !
जो "सर मैकल ओडायर" पी के बेपर की उडाते हैं,
उन्होंने भी बजाए वादह, क्या अफ़यून घोली है ?
सब उसको इण्डियन लेडी पर अब तरजीह देते हैं,
मिसे-लन्दन की सूरत मोहनी है, शक़ भोली है !
नए फ़ेशन की बोबी काम बस रखती है जाकट से !
उसे इसकी ख़बर मुनलक़ नहीं, क्या चीज़ चोली है ?
सँभल कर पाँव रखिए मैकदे में हज़रते जाहिद^२ !
उछाली जायगी पगड़ी, यहाँ मस्तों की टोली है !
सभा वाले पशेमाँ हो के फ़ौरन बैठ जाएँगे,
नहीं इसकी ख़बर शायद, ज़बाँ हमने भी खोली है !
उन्हें 'टी-पार्टी' दे तो बिठाएँ कोच-कुर्सी पर,
यहाँ तो टाट का टुकड़ा है या टूटी खटोली है !
भला मोटर के आगे कौन इन चीज़ों को पूछेगा ?
नज़र में हेच अब अगला 'मियाना' और 'डोली' है !
पुडीटर हों कि लीडर, सब निशाना बन गए इसके !
बड़ी चलती हुई कानून के साँचे की गोली है !
किसी क्रांतिल का तार आया है, मेरे पास यह "बिस्मिल"
गले मिल जाओ ख़ज़र से कि अब मक़तल में होली है !

१—बलिबेदा, २—अधखिली कलियाँ, ३—प्रेम-चिन्तन,
४—बातचीत के सिलसिले में, ५—शराब, ६—धर्मात्मा।

मोल बाज़ार से ले आए हैं गुड़ की भेली

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]
हम से बङ्गले पे यह कहते रहे मिस्टर "बेली"
"पानियर" आप पढ़ें शौक से दिल से "डेली"^१
उनका कानून, इशारों से चलता है यूँही,
जिस तरह बैल को कोल्हू में चलाए तेली !
एक साहब को हमें आज "डिनर"^२ देना है,
मोल बाज़ार से ले आए हैं गुड़ की भेली !
वह यह कहते हैं, कि कुछ भी नहीं मिलने वाला,
आपने आके यहाँ मुषत की जहमत भेली !
अब नचर आते हैं मुझको नए "फ़ेशन" के गुरू
कोई चेला लिए फिरता है, तो कोई चेली !
धूम हो जाय जमाने में जनावे "सहगल"
आप अखबार निकालें कोई ऐसा डेली !
आपने अपने अकड़ने का नतीजा देखा,
सब से घर बैठे जमाने की अदावत ले ली !
सर उठाना कहीं दुशवार न हो जाय हमें,
रोज कानून की है मुरुक में रेल-पेली !
धाक मक़तल^३ में बैधी खूब जनावे "बिस्मिल"
हमने भी ख़ज़रे-क्रांतिल से वह होली खेली !

सारी चीज़ें बिक गईं, अब घर में कल नीलाम है !

[जनाब "गदा" साहब दरियावादी]
इशकबाज़ी का जहाँ में आज यह इनाम है,
सारी चीज़ें बिक गईं, अब घर में कल नीलाम है !
क्रत्रे-आशिक पर मुनादी, हो रही है सुबह से,
बी-हँसी खानम को डिगरी में यह घर नीलाम है !
साथ मिस के देख कर साहब ने मुँझला कर कहा,
दूर हो जल्दी यहाँ से, तू बड़ा गड्डाम है !
पीते ही जिसके जनावे शेख़जी चित हो गए,
अब समझ में आ गया होगा, कि यह 'उलटाम' है !

जरा कमरे से बाहर आइए सरकार होली में !

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]
अबस यूँ खिंचते-खिंचते, बन गए तलवार होली में,
यह अच्छा रङ्ग लाए, आप ऐ सरकार होली में !
वह "सर" होकर यह कहते थे, सरे-दरबार होली में,
गले मिल लीजिए हमसे भी, ऐ सरकार होली में !
मिला है आज एक "अरजण्ट" ऐसा तार होली में,
कि खुद मिलने को घर पर आएँगे सरकार होली में !
सुना है खींच कर बैठे हैं, वह तलवार होली में,
ख़रूर अब रङ्ग लाएँगे, कोई सरकार होली में !
मेरे दिल की यह हसरत है, यह अरमाँ है, यह
खाहिश है,
गरीबों पर नज़र हो जाय ऐ सरकार होली में !
"कसोदे" और "दोहे" आपकी तारीफ़ में लिखूँ,
करें क़ायम कहीं द्वाँर अगर सरकार होली में !
मेरे घर तक चले आओ, मुझे घर अपने बुलवाओ,
खिंचे बैठे हुए हो, किस लिए सरकार होली में !
मुबारकबाद देने के लिए आए हैं "बिस्मिल" भी,
जरा कमरे से बाहर आइए सरकार होली में !

१—दैनिक, २—दावत, ३—बध-गृह।

केसरकीक्यारी



फागराग

[कवि-संभ्राट श्री० पं० अयोध्यासिंह जी उपाध्याय]
उषा अहै किधो रङ्ग भरी ललना है लसी,
ललक बिलोचन बिलोकि जाको तरसत ।
बाल-रवि है कै है अभीर भरो कोऊ तन,
जो कर पसारि कै दिगङ्गना को परसत ।
'हरिऔध' अरुनारे दल से लसे हैं तरु,
कैधों रङ्ग वारे रङ्ग खेलि-खेलि सरसत ।
उड़त गुलाल कै सराग नभ-मण्डल में,
लोक अनुराग कै बसुन्धरा पै बरसत ।

है गई है लालिमा लुभावनी दिगङ्गना की,
लसी कुसुमावलि से छितिज है छिन सी ।
लोने-लोने तरुन ललित-जतिकानन में,
कानन में दिवि की ललामता है निकसी ।
'हरिऔध' फाग-राग हो के अनुरागी बने,
लोक लालसाएँ गईं लाली हाथ बिक-सी ।
ललना ललाम कृपा पहिरि वसन लाल,
बाल-रवि थाल में गुलाल लै कै निकसी ॥

क्यों बकते हो 'होली होली'

[श्री० रामपलटसिंह जी, एम० ए०]
आपस में जब तने हुए हो,
स्वार्थ-पङ्क में सने हुए हो,
फिर क्यों तुमने केसर धोली ?
क्यों बकते हो, 'होली होली ?'
भाईपन का भाव नहीं है,
मिलने का भी चाव नहीं है,
निष्फल है यह रङ्ग व रोली,
क्यों बकते हो 'होली-होली' !
नभ को स्वर-कम्पित करते हो,
नहीं धरा पर पद धरते हो,
मुँह की है क्या कालिख धो ली ?
क्यों बकते हो, 'होली-होली ?'
पतनशील, दुश्शील बने तुम,
देखो बड़े ज़लोले बने तुम,
अपनी सभी महत्ता खो ली,
क्यों बकते हो, 'होली होली ??'
माँ-बहिनों को देते गाली,
है कैसी दुष्कीर्ति निराली ?
आर्य-सभ्यता इतनी पोली ?
क्यों बकते हो, 'होली होली ?'
होनी थी जो सो है होली
अच्छी है यह नहीं ठिठोली,
तुम्हें देख हैं आँखें रोली,
क्यों बकते हो, 'होली-होली ?'

होलिका-दहन

[श्री० अनूप शर्मा, बी० ए०, एल० टी०]
प्राची-अङ्ग-शोभो शुक तारा आसमान पर,
उदित हुआ था कुल रात रहते हुए ।
गजर गंभीर घड़ियाल बजे व्याकुल से,
पहर-पहर पै प्रहार सहते हुए ।
बोल उठे विहग-वरुथ भी वनस्थली में,
संस्मृति से जागृति की ज्योति गहते हुए ।
ऐसे काल पिता को प्रणाम करने के लिए,
आए प्रहलाद 'राम-राम' कहते हुए ।

'राम' सुनते ही, 'राम-नाम' सुनते ही भूप,
आहत-अहंश के समान व्यग्र हो उठा ।
लेके सिरहाने से मुकुट रख भाल पर,
कम्पित शरीर धीरता का भाव खो उठा ।
सिंह के समान ही दहाड़ कर आतुर हो,
क्रोध से अधीर क्षीर-नीर-भेद धो उठा ।
सौध को हिलाते रनिवास को डुलाते हुए,
दुरित-दुरन्त-देह दण्ड-दान को उठा ।

देख भगिनी को दौड़ आती हुई सामने से,
बोला, शीघ्र मेरी एक कामना फला दे तू ।
दुष्ट प्रहलाद मेरा नाम भूलता है इसे,
आज 'राम-राम' कहने का बदला दे तू !
धिक् ! धिक् ! मुझको कि मेरे यह पुत्र हुआ,
इसको तुरन्त मृत्यु-द्वार दिखला दे तू !
मेरी कृपा-भाजन बने न क्यों तुरन्त यदि,
होलिके ! अभी ही प्रहलाद को जला दे तू !

भूप के वचन सुनते ही अति आतुर हो,
(जैसे स्वप्न में भी प्रहलाद से न नाता हो)
दोनों हाथ पकड़ तुरन्त उस बालक के,
दौड़ी इस भाँति जैसे व्याकुल विमाता हो ।
पावक बिलोक प्रज्वलित पाचनालय की,
डाला उसे (किन्तु जब दाहिने विधाता हो,
क्या न है अशक्य) कहाँ क्या न है अशक्य उन्हें,
मार के खसम सती होना जिन्हें आता हो ।

आग के समीप ज्यों ही होलिका सिधारी, त्यों ही-
पावक-लपट भट पट में समा गई !
देखते ही देखते सभी के एक पल में ही,
नख से शिखा लौ व्याप वहि सहसा गई ।
व्यग्र प्रहलाद 'राम-राम' जपते ही रहे,
इधर वराकी यमपुर विवशा गई ।
तब से 'अनूप' सत्याग्रह की प्रभूत छवि,
छोर-छोर सारे क्षिति-मण्डल में छा गई ।

होली

[प्रोफेसर रामकुमार वर्मा, एम० ए०]
पा सकेगी हिन्दुओं से क्या सजनि, सम्मान ?
यदि पतन को तू बना सकती नहीं उत्थान !!
माँगती है भीख रङ्गों की अरी सुकुमारि !
देख मत अब हिन्दुओं की भोपड़ी का द्वार !!
आँसुओं से धुल गया है आज सारा रङ्ग ।
आह में रहने लगी है बार-बार उमङ्ग ।
कृष्ण राधा गोपियों का मुक्त हास्य-विलास,
बन चुका है नारियों के हृदय का उच्छ्वास !!
और वृन्दा विपिन की स्मृति आज है अवशेष !
शान्त रह, री सजनि, तू मत छेड़ मेरा देश !!
आ रही है तो सजा दे, देश का शृङ्गार ।
प्यार का भाई जहाँ हो क्रूर अत्याचार ॥
हार ही में जीत पाने का उठे आवेश ।
तू सजा इस भाँति दे इस वर्ष मेरा देश !!

होलिके !

[श्री० चन्द्रनाथ जी मालवीय "वारीश"]
आग अनुराग की लगा दे अनुरागियों में,
त्यागियों में त्याग की सजीव ज्योति भर दे ।
सुकवि "वारीश" बल दे तू विजितों को बड़ा,
दर्पियों का सारा दर्प दम में तू दर दे ।
डोल जाय आसन प्रबल पाक-शासन का,
क्रूर-कुटिलों पर कुठाराघात कर दे ।
दीनता-अधानता दुरा दे दुनिया से देवि,
हीनता हमारी होलिके ! तू आज हर दे !!

जीवन की होली

पीड़ा सहते ही चलो बीड़ा उठा देश का यों,
कीड़ा करो मृत्यु से ये गोली मोल-गोली है ।
माँ के हो लड़के बर-बाँके हो, निरख बढ़ो,
चढ़ो-कढ़ो अग्नि में से जोह रही टोली है ।
प्राणों की न परवाह, आह है गुनाह तुम्हें,
सादगी अहिंसा देख पशुता भी डोली है ।
कीट-तुल्य मरते करोड़ों वसुधा में सुधा—
पाकर अमर बनो जीवन की होली है ।

बारि रहे होरी है !

[श्री० देवनायण शर्मा 'कज']
ठान्यो है स्वतन्त्रता का युद्ध कर्मवीर वीर,
हैं रहे सचेत सुनि प्रान्त चहुँ ओरी है ।
अन्धता को 'आन्ध्र' त्यागि मादकता 'मान्द्र' त्यागि
गुजरी बिसारि 'गुजरात' नोति जोरी है ।
'सी-पी' है सिपाही बना 'यू-पी' शाही साज्र छाँड़ि,
छाँड़ि के विलासिता 'बरा' बाँह जोरी है ।
भ्यान धरि अम्बे, बम्बे, महाराष्ट्र चेतने सबै,
लाइ कै बिदेसी बख बारि रहे होरी है !
'राजस्थान' राजपूत बना दीखता है 'कज',
फेरि रही दिल्ली हाथ लीन्हे एक डोरी है ॥
'सीमा प्रान्त' सीमा बाँधि 'पञ्चनद' रोके द्वार,
लीन्हे वृन्द युवकों का सेना नाहि थोरी है ॥
वागजाल छोड़ि 'बङ्ग' बेग ही सचेत भयो,
औ 'बिहार' छाड़ि कै बिहार बन्यो कोरी है ।
उड़त 'उड़ीसा' राष्ट्र रङ्ग में रँग्यो 'रँगून',
लाइ कै बिदेसी बख बारि रहे होरी है ॥

होली का शुभागमन

[श्री० श्यामसुन्दर खत्री]

मनोहर शोभा सरसाई,
मोदमय मादकता छाई ।
उमङ्गे उर में उपजाती,
सोहती अभिनव हरियाली ।
विभा वासन्ती छलकाती,
भूमती फूलों की डाली ।
धर की उमरी तरुनाई ॥

*

लताओं को उर से लिपटा,
नाचते हैं तरु छविशाली ।
विविध सुमनों का कर चुम्बन,
मधुर मधु पीते मधुपाली ।
रसकता-सरिता उमड़ाई ॥

*

धुआँ-सा उड़ा कुहासा है,
हुआ है निर्मल नोल गगन ।
शिशिर के सँग निदाघ करता,
बैर बिसरा प्रेमालिङ्गन ।
समीरण बहती सुखदायी ॥

*

पपीहे रटते हैं पी-पी,
कूकतो कोयल मदमाती । ।
अनूठे भावों की लहरी,
सघन कुञ्जों में लहराती ।
नई अभिलाषा हुलसाई ॥

*

मोद की बहती धारा में,
रहे क्यों मानव-मन निश्चल ?
हुई भोली शिशुता चञ्चल,
हुआ रसमय यौवन पागल ।
रंगीली होलो यों आई ॥

*

*

*

होली

[श्री० डॉक्टर मित्रसेन जैन, एच० एम० बी०]
माँगे मिले न ब्रसेलस^१ में औ,
वाशिंगटन^२ में भई टालमटोली ।
राष्ट्र प्रदर्शन बीज सँघाई^३ में खाई,
विदेसिन के कर गोली ।
केरटन^४ को सरकार रच्यो ; रस रङ्ग,
प्रचण्ड सुरङ्ग में घोली ।
चीन^५ प्रवीन नवीन उमङ्ग ते,
खेलत आज स्वतन्त्र है होली ॥

*

आजु लों कोउ सुन्यो नहि देखऊ,
पावत भोख में राज अमोली ।
चाहु राज तो शक्ति सँभारहु,
त्यागि के मूरख भीख की भोली ।
जातीय रङ्ग चढ़ाए चढ़ो ; परतन्त्र पै,
कुमकुम की गहि गोली ॥
वस्तु विदेशा की होलिका दाहि कै,
भारत खेल स्वतन्त्र है होली ॥

1. Brussels. 2. Washington. 3. Sanghai,
4. Canton. 5. China.

केसरकीक्यारी



परतन्त्रता की होली

[रात्रकवि श्री० 'अग्निवेश']

लाई जयचन्द्र को बुझाई ना बुझी है अजौ,
नितै बढ़ती ही गई लपट उजोली है ।
केते राजपूत, सिक्ख, ठट्ट मरहट्टन की,
लेता गई बलि हाथ अमित अतोली है ।
मेलि कै अबोर, त्यो अबोर है बनाई सबै,
करि बदरङ्ग-रङ्ग, घोली रँगरोली है,
ऊषा कर्मवार ने दिखाई है स्वतन्त्रता की,
तापि परतन्त्रता पिशाचिनी की होली है ।

स्वतन्त्रता की होली

छार-छार होके उड़ें धूल से विदेशी भाव,
सराबोर करदे स्वदेशी रँगरोली है ।
लाली बोर भावों की अबोर सी मुखों में चढ़े,
बढ़ी गीत गाती युवकों की चले टोली है ।
देश-प्रेम हो की चढ़ी भङ्ग हो अभङ्ग सदा,
कढ़ी हो मुखों से 'बन्देमातरम' बोली है ।
अन्त कर आज परतन्त्रता पिशाचिनी का,
जगे उर-उर में स्वतन्त्रता की होली है ।

*

*

*

अबोर-मूठ मारी है

[कविवर 'रसाल' एम० ए०]

आई है जबें ते खेलि होरो वा तबैं ते परी,
बिकल विमोहो मनों मोह-मन्त्र मारी है ।
तरफति पारद की पूतरो सी 'हा ! हा !' करि,
गहि-गहि छाती ठहि जाति त्यो बिचारी है ।
लैलै नाम रावरोई विवस बयाति जाति,
आँसनि अन्हाति ना उसाँसन सँभारी है ।
सौँह है हमारी, बलि साँची यदुबोर कहा,
बीर मूठ मारी कै अभीर-मूठ मारी है ?

*

होरी को प्रभाति आजु आँसु आँसु आँसु ओरी,
चारु चहुँ ओरी नई सुषमा सँवारी है ।
उमहि उमङ्गनि सौँ रङ्गनि सौँ रङ्ग राँजि,
विविध विहङ्गनि धमार सी उचारो है ।
सुवन ओप उफनी सी परै भूतगीच,
प्राचो बीच सोहै पै अरुण अंगुभारी है ।
छुबि लखि लागत 'रसाल' मनौ ऊषा बाल,
बिहसि दिनेस पै अबोर-मूठ मारी है !

*

*

*

होली

[श्री० चतुर्भुज जी माहेश्वरी "चतुर"]

मातृ-भूमि हित बलि-वेदी पर अपना शीश चढ़ाने,
स्वतन्त्रता का सौदा लाने को निकले दीवाने ।
यद्यपि महा-भयानक दुर्गम, पथ यह कष्टकर्मय है
किन्तु आत्म-बल-धारी वीरोंको क्या इसका भय है
बढ़ते ही जाते हैं, खाते हैं सीने पर गोली ।
मतवाले ये खेल रहे हैं आज खून की होली !

विदाई

[श्री० रामचरित जो उपाध्याय]

यदपि पल्लवित पुष्पित फलयुत फिर होगा तरु-वृन्द,
कुछ दिवसों तक पतझड़ा का सहना है दुख-वृन्द,
यदपि खटकती है काँटे-सी उर में तेरी चाल,
क्यों निलज्ज हो तू मनमानो करता है रे मन्द !
मुँह की खानी तुझे पड़ेगी रह करके प्रतिकूल ।
आगन्तुक का दर्प दिखाना घोर पतन का मूल ।
तेरी होली शीघ्र जलेगी तू हावेगा दार !
एक दिवस भारत में तेरी मूढ़ ! उड़ेगी धूल !
भरे कुमकुमों की चोटों से तू होगा बेहाल ।
ऊधम करले उछल-मचल कर, आ पहुँचा वह काल ।
छुके छुट जायेंगे तेरे देख फाग के रङ्ग ।
तेरे कारण भारत-भूतल हो जाएगा लाल !
काम दाम के वशोभूत है फिर क्यों तू अतुराज ?
शुक-पिकादि के कोलाहल सुन, तुझे न लगती लाज ।
कुछ दिवसों का पाहुन बन कर आया है तू अन्न !
सदा न रह सकता, करता है क्यों प्रयत्न बेकाज ?
तुझे गालियों की क्या चिन्ता ? सुन होकर नत-भाल ।
मद-धूर्णित हो तेरे पग की उखड़ चला है चाल ।
परन तुझे कुछ ध्यान अभी है मति-भ्रम हुआ बसन्त !
जो आया वह चला जायगा जग का यहाँ हवाल !
रे मधु पौरा क्यों न हटाता क्या शनि है आरुढ़ !
श्रीमानल जब धधक उठेगा पछुताएगा मूढ़ !
यदि पतङ्ग-सा जल-भुन जाना तुझे हुआ ह । इष्ट ।
तो पग-पग पर परिभव सह कर अड़ा रहे तू मूढ़ !
तड़क-भड़क के सहित प्रलोभन तेरा है बेकार ।
तेरे कपट-कर्म को बहुविध जान गया संसार ।
मारी होग साथ तेरे हैं क्यों सहता अपमान !
अपना सामुँह लिए चला जा सिर ले अपयश-भार !
किंशुक-वनको रक्तिमकर क्यों दिखलाता है बास ?
पूर्व स्मृति है बनी हृदय में होगा कौन निराश ?
हो उदास या कर विलास तू, थोड़े दिन तक और !
पर बसन्त ! क्या बना रहेगा तेरा यहाँ निवास ?

*

*

*

हमारी होली

[श्री० 'कुसुमावलि']

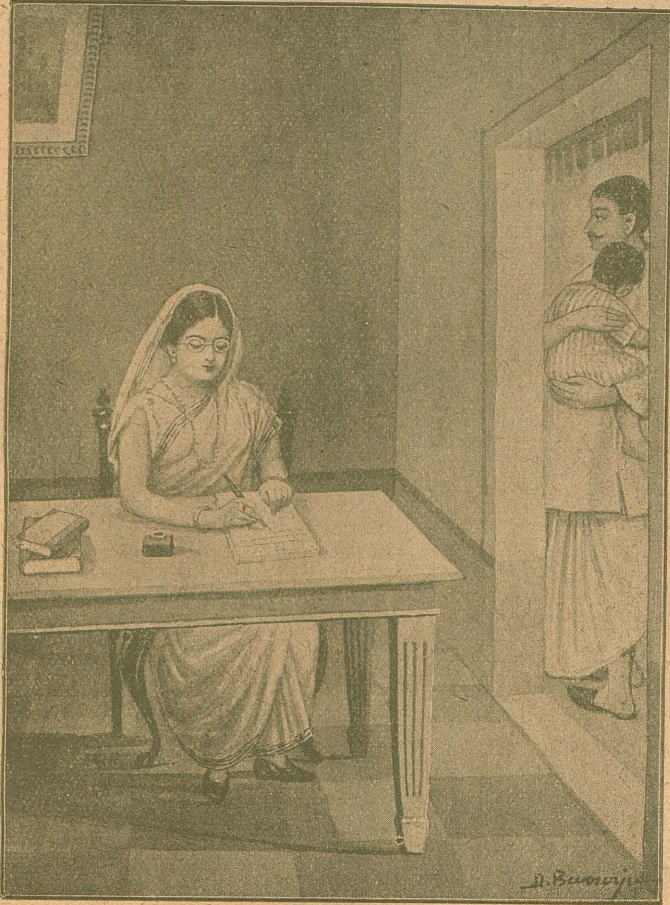
अभी रङ्ग-नीरों में नहाने की न चाह हमें
डूबे खूब ऊबे नेत्र नीरों में नहाए हैं ।
लेना है न हाथों में अबोर तब तक हमें,
जब तक नहीं फल वीरता का पाए हैं ।
बुकों की चमक भी न देखना है नेक अर्भों,
भाग्य के सितारे जब चमक न लाए हैं ।
फाग की न क्रीड़ा है, न बीड़ा व्यवहार अभी,
बीड़ा हम उन्नति समर का उठाए हैं ।

*

*

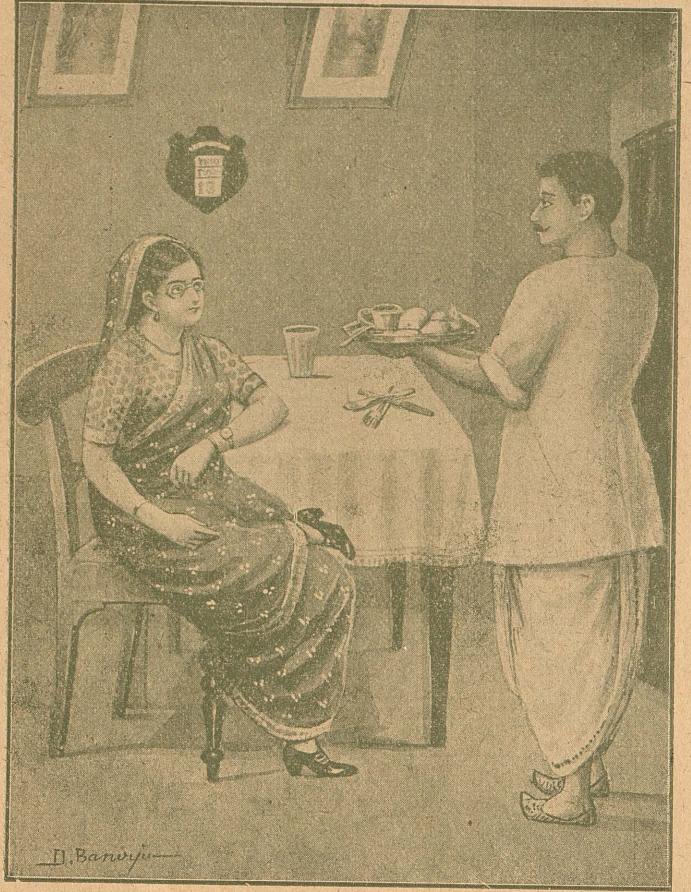
*

== 'भविष्य' की व्यङ्ग चित्रावली का एक पृष्ठ ==



विदुषी बीबी

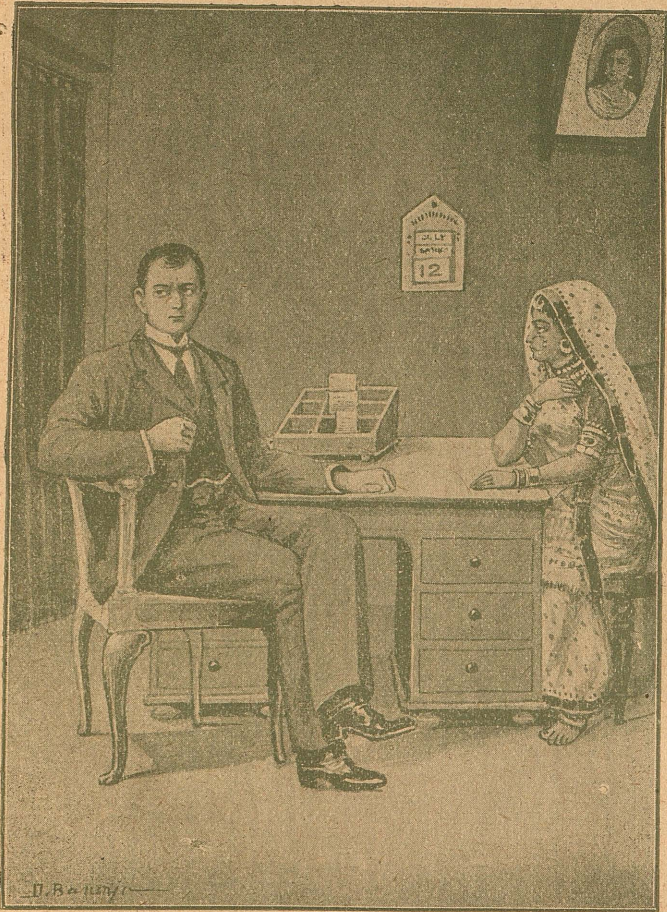
आप महिला उद्धारिणी सभा की 'प्रेज़िडेण्ट' हैं और स्त्रियों की वर्तमान दशा पर एक लेख लिख रही हैं। बाहर पतिदेव लड़का खिला रहे हैं। जो यह स्वाभाविक दृश्य देख कर हँसे, खुदा करे उसे भी ऐसी फूलभङ्गी सी बीबी मिले !



पतिव्रता और बीबीव्रता

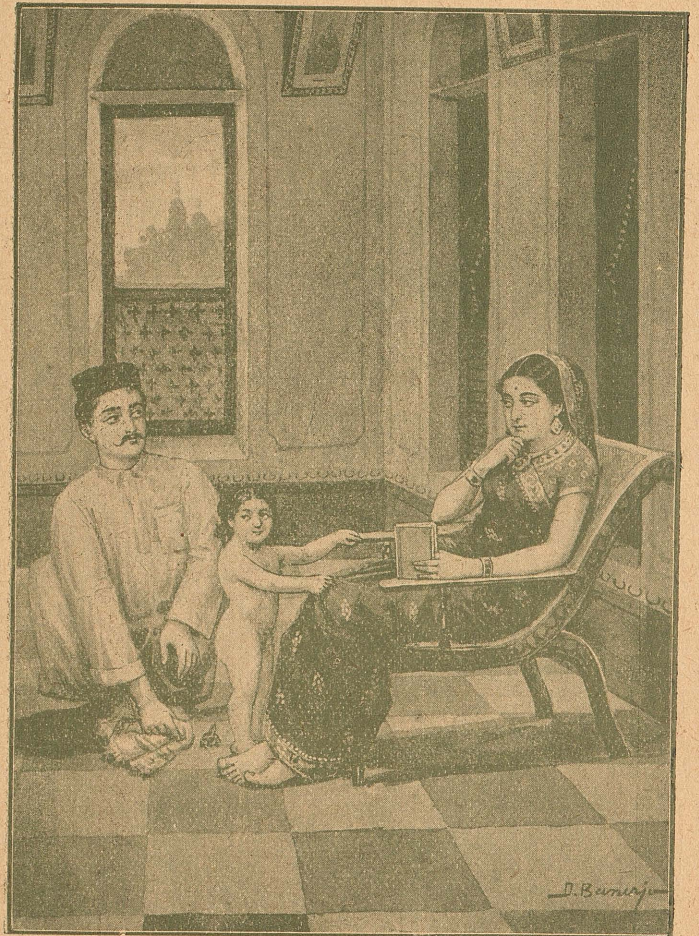
“नॉनसेन्स ! तुम्हें मालूम नहीं, मुझे मिरटो पार्क में 'ग्राहस्थ्य सुख' पर व्याख्यान देने जाना है ? फिर क्यों तुमने चाय लाने में पाँच मिनट की देर कर दी ?”

“भूल हो गई, क्षमा कीजिए !”



गङ्गा और मदार की जोड़ी !

कब उतरेगा तेरे तन से यह बेहूदा भूषण-भार ?
कब छोड़ेगी फूहड़पन को, कब सीखेगी शिष्टाचार ??



अध्ययनशीला !

“ऐ ! सुनते हो ? लड़के ने पाखाना कर दिया है, ज़रा साफ़ कर दो। मैं 'लण्डन-रहस्य' पढ़ रही हूँ। वास्तव में बड़ा 'इन्ट्रस्टिंग' उपन्यास है।

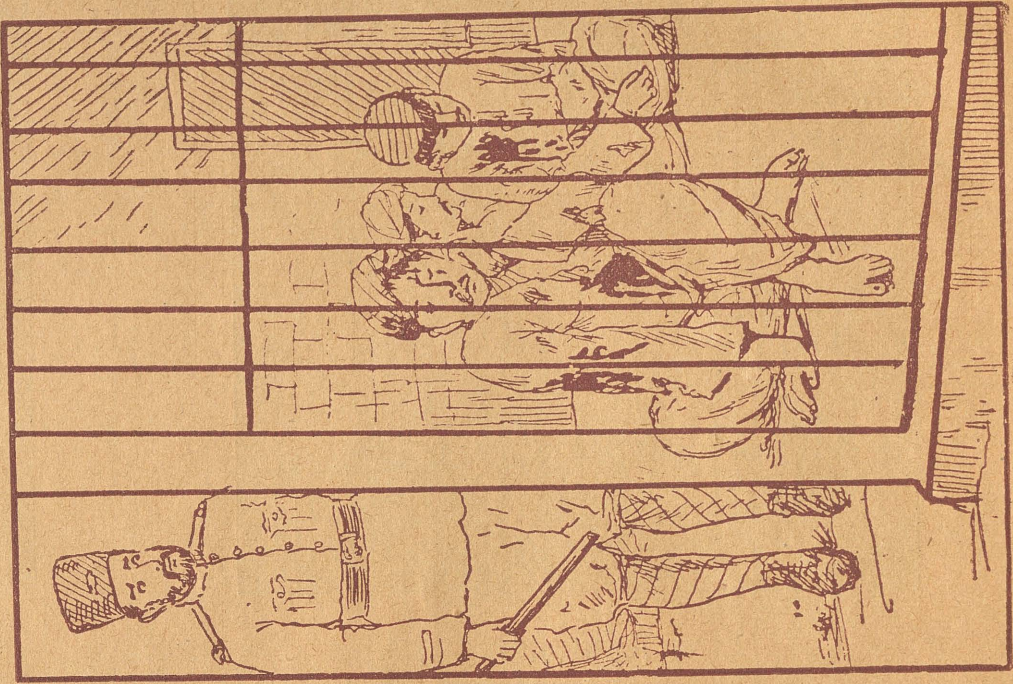


होली के भड़प
छोड़ सभ्यता और शराफत
खूब उड़ाओ धूल !
कोई सज्जन निकल न जाए
बिन कीचड़ के भूल !
होली है, भई होली है !!

रङ्ग में भङ्ग
कीच उछालने के कारण
मार-पीट हो रही है ।



मियाँ मदारी के बन्दर !
होली के बहाने भले आदमियों
पर गलीज़ उछाल कर अपने पाप का
प्रायश्चित्त करने थाने जा रहे हैं ।



‘सबेरे फिर छेनेगी’
होली के दिन ऐसी गहरी छनी
कि न दोन की खबर थी न दुनिया
की, फिर सभ्यता निगोड़ी की कौन
परवाह करता है ! अब पुलिस की
हवालात में हैं, जैसे बहेलिए के दरबे
में उल्लू !



भारत की भावी-आशा

(जिन्होंने कौन्सिल और एसेम्बली में अपना कार्य
आरम्भ कर दिया है)



श्रीयुत भीखन मेहतर
युक्त प्रान्तीय कौन्सिल के सदस्य



श्री० चौधरो रामदयाल चमार
युक्त प्रान्तीय कौन्सिल के सदस्य

कौन्सिलों ने दोनों को ऑनरेबुल बना दिया !

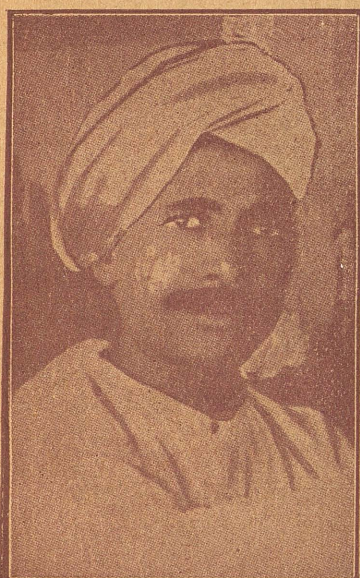
थी जो सिफ़त शरीफ़ की, अब है वही चमार में !!

—ज़रीफ़ (लखनवी)

कौन्सिल में मेम्बरी की हवस है चमार को,

पण्डित जी भूलते नहीं कौमी बेकार को !

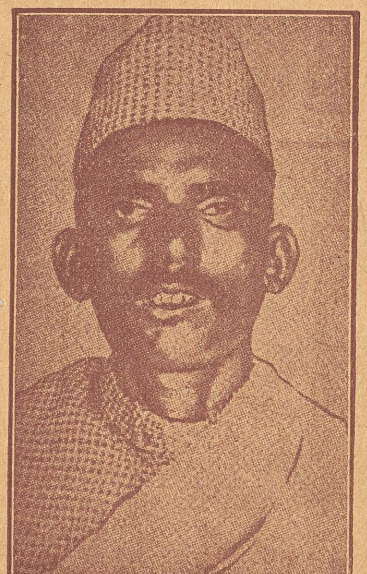
—ताज (गोरनवी)



श्रीयुत रामजी दास नाई
पञ्जाब प्रान्तीय कौन्सिल के सदस्य

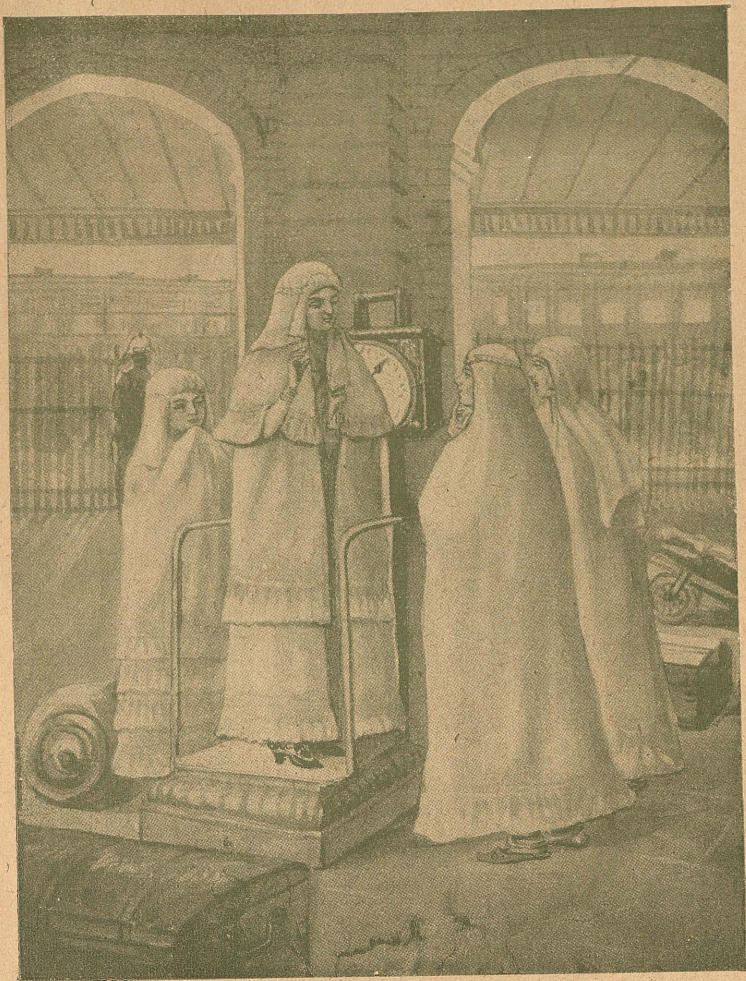


श्रीयुत डालू मोची
बम्बई प्रान्तीय कौन्सिल के सदस्य



श्री० भगत चन्दोमल कुम्हार
लेजिस्लेटिव एसेम्बली के सदस्य

== 'भविष्य' की व्यङ्ग चित्रावली का एक पृष्ठ ==



बुर्के की बेहयाई !

भवन नहीं, स्टेशन है यह, यहाँ नहीं बुर्के का काम ।
मरद् निगोड़े क्या समझेंगे, उनकी तो है बुद्धि निकाम ।



जामे से बाहर

बाबू जी—अरे कहाँ घुसो चली आती है ? कहता हूँ, माफ़ कर,
तो कमबख्त मानती ही नहीं ।
भिखारिणी—ईश्वर आपको माफ़ करे !



सङ्गीत का श्राद्ध

आपके स्वर की सरसता गद्गलराज के श्रुति-मधुर स्वर को भी मात कर देती है ।

पहिन कर आए हैं, कपड़े जो लाल होली में,
करेंगे क्या, वह किसी को हलाल होली में ?
सुखाएँ आप न, इस तरह बाल होली में,
पप-असीरी^१, न फैलाएँ जाल होली में !
हैं बाल बिखरे हुए, आँखें भी हैं शरमाई,
किया हुआ ने, कुछ गोल-माल होली में ?
हमारी हसरते-दिल, किस तरह से निकलेगी,
करेंगे आप अगर, इनफियाल^२ होली में !
तू मुस्कुरा के, निगाह को न फेर पे जालिम !
न बे-गुनाह को, कर यों हलाल होली में !
तुम्हारे हुस्न के परतो^३ से, यह हुआ हासिल,
सितारा बन के, चमकता है खाल^४ होली में !
करें हुजूर, बसद^५ शौक सर कलम मेरा,
हुआ है तन पे मेरे, सर बवाल^६ होली में !

—(मिर्जा) "मुहसिन" इलाहाबादी

कहाँ वह रञ्ज, कहाँ अब मलाल होली में,
कि फिर निशात^७ का आया ख्याल होली में !
लगाया सब ने जो रुख^८ पर गुलाल होली में !
इसी से बढ़ गया दूना जमाल^९ होली में !
वफूरे-पेश^{१०} में, रञ्जो-मलाल भूल गए,
किसी तरह का नहीं अब ख्याल होली में !
चली है गुलशने^{११} आफाक^{१२} में हवाप-तरब^{१३},
नेहाल^{१४} हैं नए सर से, नेहाल^{१५} होली में !
ज़हे-नसीब, कि अहबाब से गले मिल कर,
उड़ा रहे हैं अबीरो-गुलाल होली में !
किसी को घर पे बुलाऊँ किसी के घर जाऊँ,
तरह-तरह के मुझे हैं ख्याल होली में !
गले मिला है कोई, हमसे एक साल के बाद !
हम आज हो गए, क्या-क्या नेहाल होली में !
यह इजतिनाब^{१६} अबस है, यह एहतराज़^{१७} फिज़ूल,
चलो न हज़रते "शातिर" से चाल होली में !
—"शातिर" इलाहाबादी

यही है रञ्ज, यही है मलाल होली में,
कि आपको नहीं, मेरा ख्याल होली में !
यह आरज़ू है, यह हसरत है, यह तमन्ना^{१८} है,
गले मिले तो कोई खुश जमाल होली में !
हर एक तरफ़ है, मसरत^{१९} की अब घटा छाई,
जमाना खुश है, खुदाई नेहाल होली में !
ज़रा चमन में भी, देखो बहार होली की,
कि मिल रहे हैं, गले नौ-नेहाल होली में !
नहीं है फूलों के चेहरे पे, बेसबब सुखी,
लगा दिया है सबा^{२०} ने गुलाल होली में !
यह रङ्ग देख के, वायज़^{२१} की बदली है नोयत,
शराबे-नाब^{२२} जो होती हलाल होली में !
गले के हार बने, गैर के जो फिरते हैं,
हमें उन्हीं से है, मिलना मुहाल होली में !
दिले-हज़ी^{२३} की यह दुनिया, अभी बदल जाए,
वह पृछ ले जो कहीं, इसका हाल होली में !
लगाओ चेहरे पे "ज़ाहिद" के खाके-मैखाना^{२४},
यही है इसको, अबीरो-गुलाल होली में !
—"ज़ाहिद" इलाहाबादी

१—वास्ते, २—कैद करने के लिए, ३—लज्जा, ४—साया,
५—तिल, ६—खुशी से, ७—बोझ, ८—खुशी, ९—सुँह,
१०—सुन्दर, ११—आनन्द में, १२—बाग, १३—संसार,
१४—आनन्द, १५—पेड़, १६—खुश, १७—परहेज, १८—
लिचाव, १९—इच्छा, २०—खुशी, २१—हवा, २२—नसीहत
करने वाला, २३—दुख, २४—शराब की दूकान,

केसर की क्यारी



न वह उमङ्ग, न वह रङ्ग है, न रङ्गीनी;

कहाँ से दिल हो हमारा निहाल होली में !

ज़हे-नसीब कि अहबाब से गले मिल कर,

उड़ा रहे हैं अबीरो-गुलाल होली में !

गले मिले कोई, यह है ख्याल होली में,
मलेंगे खूब अबीरो-गुलाल होली में !
तुम्हारे दर पे, तो उम्मीदवार है दुनिया,
बताओ किस को, करोगे नेहाल होली में ?
गज़ब का हुस्न, फिर उस पर शबाब का आलम;
मिले कहाँ से तुम्हारी मिसाल^{२५} होली में ?
तुम्हारे जलवे^{२६} से, बेहोरा सब हैं तालिबे-दीद^{२७} !
दिखाया तुमने, यह अच्छा कमाल होली में !
यह रङ्ग देख के, बेताब^{२८} क्यों न दिल हो जाय,
तुम्हारा हुस्न, तुम्हारा जमाल होली में !
जवाब दो न दो, यह अखितयार है तुमको,
सुनो तो गौर से, मेरा सवाल होली में !
खुशी का दिन है गरज़ अपने दिल को खुश रखो,
रहे न बाल बराबर मलाल होली में !
तुम्हीं कहो ज़रा इन्साफ़ से यह पे "आदिल"
गले मिलेगा वह क्या खुश-जमाल^{२९} होली में ?
—"आदिल" सपादवी

रहे यह हर घड़ी, हर दम ख्याल होली में,
कि उठ खड़ा न हो, कोई मलाल होली में !
यह हाल क्यों है, कि है गैर-हाल होली में,
ख्याल हो, तो करो कुछ ख्याल होली में !
वह क्या बताएँ, कि है रङ्ग क्या जमाने का,
कहीं अबीर कहीं है गुलाल होली में !
कोई नेहाल, कोई शाद^{३०} और कोई खुश,
बदल गया है, जमाने का हाल होली में !
अगर निफ़ाक़^{३१} हो वाहम^{३२} तो जल्द दूर करो,
उठाओ दिल से, यह हरसू सवाल होली में !
निशातो एशो-तरब का, जमा है रङ्ग पेसा,
कि दूर हैं, ग़मो रञ्जो-मलाल होली में !
उड़ा रहे हैं अब, अहले-जमी^{३३} अबीरो-गुलाल,
फ़लक^{३४} पे निकलेंगे, तारे भी लाल होली में !
बढ़ाया रङ्ग ने, कुछ और रङ्ग चेहरे का,
बने हैं और भी सब खुश-जमाल होली में !
न वह उमङ्ग, न वह रङ्ग है न रङ्गीनी,
कहाँ से दिल हो, हमारा नेहाल होली में ?
दुआ यह है कि अइज़ज़ ओ-दोस्त पे 'बिस्मिल'
खुशी यूँही करें हर एक साल होली में !
—"बिस्मिल" इलाहाबादी

२५—उपमा, २६—ज्योति, २७—दर्शक, २८—बेचैन—
२९—अच्छी सूरत वाला, ३०—खुश, ३१—फूट, ३२—आपस
में, ३३—सांसारिक जीव, ३४—आकाश, ३५—रिश्तेदार,

गुलाल मल के जो आ जाय बार होली में,
आयाँ^{३५} हो आतिशे-गुल की बहार होली में !
निकल रहा है इधर दिल से खू की पिचकारी,
उधर ज़िगर है मेरा लालाज़ार होली में !
छुपा सकेंगे न अन्दाज़ अपनी चितवन की,
दिखाएँ रङ्ग बदल कर हज़ार होली में !
बहा के खून मेरा आज आप खूश हो लें,
न हाथे आएगा ऐसा शिकार होली में !
पसे-फना यह यकीं है, अबीर के बदले—
हँसी उड़ाएँगे मेरा गुबार होली में !
उभार आपके जोवन का रङ्ग लाएगा,
हज़ार कुमकुमे होंगे निसार होली में !
"फिज़ा" वतन में जो होते कहीं तुम अब के बरस,
बहुत ही सहल था दीदारे-बार होली में !
—"फिज़ा" हैदराबादी

चहक रहे हैं हज़ारों हज़ार होली में,
बड़े ही रङ्ग से आई बहार होली में !
दुआ यह मेरी है कर लें वह प्यार होली में,
बहुत नहीं, तो फ़क़त एक बार होली में !
मिलेंगे हज़रते-वायज़, तो हम पिला देंगे,
हलाल होगी मये^{३६} खुश गवार होली में !
तुम अपने हाथ से रुख पर मेरे अबीर मलो,
करो न आज मुझे बेकरार होली में !
उधर जमाने में है होलिका-दहन की धूम,
इधर तपाँ है दिले-दाग़दार होली में !
कहो मिलोगे न क्या तुम, कहा मिलूंगा ज़रूर,
जो पूछा कब, तो कहा एक बार होली में !
यह किसने फूल-से रुख पर मला है आज गुलाल,
दिखाई किसने यह तुरफ़ा^{३७} बहार होली में !
वह मिल रहे हैं गले सबसे खूब हँस-हँस कर,
लुटा रहे हैं दुरेशाहवार^{३८} होली में
ख़दा के वास्ते मिलिए किसी क़रीने से,
गिराँ^{३९} है और शबे-इन्तिज़ार होली में !
तुम्हारा रङ्ग जमाने से है जुदा "कुश्ता"
कि बे-पिप हुए हो बादाख़वार^{४०} होली में !
—"कुश्ता" गयाबी

इसे सुरू, उसे है ख़ुमार होली में,
चली है कैसी हवाप-बहार होली में ?
यह उड़ रहे हैं नहीं हमनशीं अबीरो-गुलाल,
निकल रहा है दिलों का गुबार होली में !
३६—प्रगट, ३७—शराब, ३८—अहमृत, ३९—मोती,
४०—मारी, ४१—शराबी ।

साक़ी हाज़िर मैदाने में,
लाल परी हर पैमाने में !
सुख गुलाबी नीला जोड़ा,
सबज़ बसन्ती पीला जोड़ा ।

एक दो तीन चार होली में !

[श्री० "कुरता" गयाबी]
निगूँहे-लुफ़्फ़े यार होली में
ला रही है बहार होली में !
जब वह हों हमकनार होली में,
क्यों न आए बहार होली में,
एक की एक अब नहीं सुनता,
मस्त हैं बादाख़वार होली में,
सैकड़ों गुल खिलाती रहती है,
चल के बादे-बहार होली में !
करके वादा भी वह नहीं आए,
एक, दो, तीन, चार होली में !
उनसे हम मिल के एक साल के बाद,
लूटते हैं बहार होली में !
अहदे-बातिल ही से तसल्ली दो,
कुछ तो आए करार होली में !
देके लाखों दुआएँ साक़ी को,
हम पिछे बार-बार होली में !
रुखे-रङ्गों पे मलते हैं वह गुलाल,
हुस्न की है बहार होली में !
तोबा टूटे तो टूटे पे जाहिद,
पर न टूटे खुमार होली में !
इस तरफ़, उस तरफ़, हर एक तरफ़,
छा रही है बहार होली में !
रङ्ग लाएँगे हज़रते "कुरता"
मर के भी बार-बार होली में !

ज़माना होली का

[पं० कालीप्रसाद मिश्र "आसी" इलाहाबादी]
आया है ज़माने में कैसा,
खुश-रङ्ग ज़माना होली का,
मिल-जुल कर आओ गाएँ सब,
जी भर के तराना होली का !
आँखें रखते हो तो देखो,
खुश-रङ्ग ज़माना होली का !
घर-घर है कहानी होली की,
घर-घर है फ़िसाना होली का !
मसरूर रहो, दिल शाद रहो ;
ग़म दिल से कोसों दूर रहे ।
लाया है प्यामे ऐशो-तरब,
यह तुमको ज़माना होली का !
सब जी से इसको सुनते हैं,
सब दिल से इसको सुनते हैं,
अच्छी है कहानी होली की,
अच्छा है फ़िसाना होली का !
देखो जिसे शाखे-गुल की तरह—
वह भूम रहा है मस्ती से,
छाया है बागे-आलम में
पुर-जोश ज़माना होली का !
हर मिसरे में हर शैर में है,
एक रङ्ग अनोखा ये "आसी"
रङ्गीन मिज़ाजों की खातिर,
लिक्खा है फ़िसाना होली का !

१—शराबखाना, २—बादा, ३—भूठ ।

केसर की क्यारी



जब आग जलाई होली में

[बाबू नारायणप्रसाद जी "मेहर" ग्वालियारी]

मालूम नहीं क्या बात हुई,
क्या जी में समाई होली में,
सूरत भी तो अपनी ज़ालिम ने—
हमको न दिखाई होली में !
यह दिन तो खुशी के दिन हैं, मगर—
रहता है मुझे ग़म आठ पहर,
बिछड़ा हूँ किसी से मैं मिल कर,
देखी है जुदाई होली में !
जब तुम न हमारे पास आए,
जब हमसे न तुम होली खेले,
अग्यार ने दे-देकर ताने
क्या जान जलाई होली में !
बूंदें हैं लहू की चेहरे पर,
धब्बे हैं लहू के दामन पर,
मुझको मेरी आँखों ने रोकर
होली यह खिलाई, होली में !
यह दिन है गले मिलने के लिए
मिलते हैं इसी दिन लोग गले,
उस शोख ने गैरों से मिल कर
क्या बात बनाई होली में !
दम भर न रहे आराम से वह,
बेताब किया बेव्वाब किया,
दिन-रात हमारे नालों ने
यह धूम मचाई होली में !
जब याद किसी की आती है,
या ग़म की आग जलाती है,
देता है मेरा दिल जल-जल कर,
होली की दोहाई होली में !
क्या "मेहर" जले अपने दिल में,
क्या रश्क से शोलों ने फूँका,
हमराह रकीबों के उसने
जब आग लगाई होली में !

* * *

लहरों की तरह बहना सीखें !

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

खुश क्यों न ज़माने वाले हों,
आया है ज़माना होली का !
अब बैठते-उठते घर-घर है—
लोगों में फ़िसाना होली का !
दिल लुफ़्फ़ो-ऐशो-इशरत से
हर वक्त न क्यों मसरूर रहे,
फ़ितरत का इशारा है सब से,
ग़म सब से कोसों दूर रहे !

यह बज़्मे-तरब का आलम है,
चलता है दौर मुहब्बत का,
है रङ्गे दौरे-उल्फ़त से,
आलम कुछ और मुहब्बत का !
दुनिया के अलम से क्या मतलब
सब भूम रहे हैं मस्ती में,
तख़्तोस किसी की कुछ भी नहीं,
सब भूम रहे हैं मस्ती में !
यह रङ्ग निराला रङ्ग भी है,
क्या रङ्ग जमाए बैठे हैं !
दुनियाए-मुहब्बत में दिल से,
दुनिया को भुलाए बैठे हैं !
हर बात उन्हें मरगूब हुई
हर रङ्ग उन्हें मरगूब हुआ,
अल्किस्सा, बढ़ी उल्फ़त बाहम,
मिल-जुल कर रहना खूब हुआ !
इस दिन से खुदा का मतलब है
मिल-जुल कर सब रहना सीखें,
दरियाए-मुहब्बत में मिल कर
लहरों का तरह बहना सीखें !
होली का मज़ा है मिलने में,
पेसा जो नहीं, तो कुछ भी नहीं;
यह खूब समझ लो दिल में तुम,
पेसा जो नहीं, तो कुछ भी नहीं !
तुम एक रहो तो फिर देखो
क्या इसका नतीजा मिलता है,
दावे से यह "बिस्मिल" कहता है
दुनिया का कलेजा हिलता है !

* * *

मौसमे-शाहाना

[जनाब केदारनाथ साहब 'बेकल', बी०ए०, एल० टी०]

साक़ी मये-उल्फ़त से भर दे मेरा पैमाना,
दिल खोल के खेलेगा होली तेरा मस्ताना !
उड़ता है गुलाल हरसू, पिचकारियाँ चलती हैं;
दीवानों का होली के मस्ती से है याराना !
हाँ-दिल है उमङ्गों पर—क्या देखता है साक़ी,
सरशार मुझे कर दे, सङ्के तेरे जानाना !
सब रङ्ग में लत्पत्त हों, गुल्फ़ाम बनें चेहरे,
वह रङ्ग जमें, आलम हो जाय परीखाना !
मिट जाय कुदुरत सब, दिल साफ़ हों यारों के,
होली में मिले खुश हो, अपना हो के बेगाना !
पीरी में जवानी के आते हैं मज़े 'बेकल';
फागन का महीना भी, है मौसमे-शाहाना !

* * *

साहित्य का सपूत

साहित्यिक प्रहसन

[श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

अङ्क—१; दृश्य—१

रास्ता

(संसारीनाथ)

संसारी—(अकेला) बस संसारीनाथ ज़रा ठहर जाओ। सोच-समझ लो, तब आगे बढ़ो। तुम चपला को प्यार करते हो। जब से देखा है, उसी दम से। मगर इसका परिणाम? आह! प्रेम में परिणाम सोचने का किसे होश रहता है? जाने दो, फिर भी तुम अपनी चपला को दिल ही दिल प्यार करते रहे, दूर हो दूर से उसे देख-देख कर मरते रहे और उधर उसका कहीं व्याह हो गया तब? उफ! कलेजे में गोली लग गई! हाय! तब क्या करूँ? उसके पिता से मेल-जोल पैदा करूँ? मगर इससे फायदा? वह भला क्यों अपनी लड़की मुझ ऐसे रँडुए को सौंपने लगे? दूसरे डरता हूँ कि कहीं वह मेरा भाव ताड़ते ही अपनी गली में मेरा आना-जाना न बन्द करा द? क्योंकि यह विलायत नहीं, हिन्दुस्तान है, जहाँ प्रेम का सत्कार भण्डा फूटते ही बस लात-घूसों ही से होता है। बला से, जब इसकी नौबत आएगी, तो चपला की खातिर यह भी सहूँगा। मगर तब तक तो इस मेल-जोल के बल पर उसके घर पर कुछ देर अटकने का सहारा तो हो जाएगा। और यों कभी शायद उससे दिल का हाल कहने का अवसर भी पा जाऊँ। बस-बस यही ठीक है। मगर उसके पिता से घनिष्ठता पैदा करना भी तो टेढ़ी खीर है। क्योंकि नित्य ही सलाम करते-करते मेरे हाथ की चूल तक ढीली पड़ गई, मगर वह मुझसे सीधे मुँह कभी बोले भी नहीं। खैर आज मैं जाकर उनके गले पड़ता हूँ। सुनता हूँ उन्हें साहित्य का कुछ भ्रम भी है, क्योंकि वह साहित्य-सेवी बनते हैं और अपने को साहित्यानन्द कहते हैं। इसलिए मैं भी जाते ही साहित्य का खटराग छेड़ता हूँ। देखूँ क्या कहते हैं और तब वह किस तरह मिलते हैं। वह लो, वह तो आप ही इधर आ रहे हैं।

(साहित्यानन्द का अखबार पढ़ते हुए आना)

(संसारीनाथ साहित्यानन्द के सामने जाकर प्रणाम करता है, मगर वह बिना देखे ही अखबार पढ़ता हुआ पलट पड़ता है। तब वह दूसरी तरफ़ जाकर प्रणाम करता है, पर फिर साहित्यानन्द उधर से घूम जाता है।)

संसारी—(अलग) वाह! वाह! यह तो ऐन मौके पर घूम पड़ते हैं। उस पर सामने अखबार की आड़ और पीछे उनकी पीठ की दीवाल इन्हें सलाम किधर से करूँ? अच्छा उनके रास्ते में खड़ा हो जाऊँ, आखिर इधर ही तो लौटेंगे।

(संसारीनाथ उसके सामने बीच में खड़ा हो जाता है और जब वह लौट कर बिल्कुल पास पहुँचता है, तब यह अपने दोनों हाथ जोड़ कर उसके अखबार के नीचे डाल कर झट से उठाता हुआ इस तरह प्रणाम करता है कि अखबार साहित्यानन्द के हाथ से छूट कर संसारीनाथ के सर पर होता हुआ गिर पड़ता है।)

संसारी—प्रणाम!

साहित्यानन्द—(घबड़ा कर ऐनक के ऊपर से धूर कर) कौन?

संसारी—संसारीनाथ।

साहित्यानन्द—तुम बड़े बेहूदे हो—नहीं ठहरो—(जब से हिन्दी की एक पॉकेट-डिक्शनरी निकाल कर और जल्दी-जल्दी उसे लौट कर) हाँ, महा असभ्य हो, जो इस तरह रास्ते में—उहँक—इस प्रकार मार्ग में प्रणाम करके मुझे साहित्य का आनन्द लेने में विघ्न डालते हो, जानते नहीं कि मैं साहित्य-सेवी हूँ।

(साहित्यानन्द बकता हुआ अपना अखबार उठाता है और फिर उसे उसी तरह पढ़ने लगता है)

संसारी—(अलग) भई वाह! यह तो अजीब जीव निकले। नाहक ही मैं इतने दिनों तक इनसे हिचकता रहा। लीजिए मेरा प्रणाम करना ही बेकार हो गया, वह फिर अखबार पढ़ने लगे। मगर अब घबड़ाहट कैसी संसारीनाथ? इन्होंने तो अपने चरित्र का तमाशा एक ही जुमले में दिखला ही दिया। अब क्या है। बस हाथ धोके पीछे पड़ जाओ। ऐसे आदमी तो बड़े भाग्य से मिलते हैं।

(लपक कर साहित्यानन्द के पास जाता है)

संसारी—(साहित्यानन्द को हिला कर) महाराज!

साहित्यानन्द—(अखबार से बिना अपनी नज़र हटाए हुए) क्या?

संसारी—ज़रा इधर भी ध्यान दें तो कुछ कहूँ।

साहित्यानन्द—(ऐनक खसका कर ऊपर से घूरता हुआ) कौन फिर संसारीनाथ? मगर—उहँक—किन्तु हाँ, किन्तु 'ज़रा' के स्थान पर शब्द 'तनिक' का प्रयोग करो।

संसारी—माफ़ कीजिए मुझे अपने भावों को आपकी तरह अनुवाद करना नहीं आता। मैं तो उन्हें बस ज्यों का त्यों बोलना जानता हूँ।

साहित्यानन्द—आपकी तरह नहीं जी, आपके 'सदृश' कहो।

संसारी—आपके सदृश?

साहित्यानन्द—हाँ, तब जाकर तुम्हारी भाषा शुद्ध हिन्दी भाषा कहला सकती है।

संसारी—मगर यहाँ पर तो "आपकी तरह" ही कहने में आसानो माछूम होती है और यही मुँह से निकलता भी है।

साहित्यानन्द—ऐसे मुँह पर थपड़ मारो। और उसे समझाओ कि वह अपनी सरलता पर न जाया करे, बल्कि—उहँक—वरन्, हाँ वरन् बोलते समय हिन्दी-कोष के शुद्ध हिन्दी शब्दों पर ध्यान रक्खा करे।

संसारी—तो यह कहिए आप हिन्दी को मातृ-भाषा नहीं, बल्कि कोष-भाषा समझते हैं। मगर महाराज इस तरह तो बातचीत बिल्कुल बनावटी हो जायगी। न उसमें मुहावरा होगा और न भाव ही रह सकता है।

साहित्यानन्द—तो क्या हुआ? परन्तु वह हम ऐसे साहित्य मर्मज्ञों की दृष्टि में साहित्यिक भाषा तो होगी?

संसारी—साहित्यिक भाषा कैसी?

साहित्यानन्द—देखो जैसे कहना हो कि मैं आता हूँ "तो कहना चाहिए कि मैं आगमन करता हूँ।" जैसे यदि कहना हो कि "वह दिखाई पड़ते ही भाग खड़े हुए", तो कहो कि "वह दृष्टिगोचर होते ही पलायन कर गए।"

संसारी—बाप रे बाप! यह तो मुझसे नहीं हो सकता। नए सिरे से जन्म लेकर इस तरह बोलना सीखूँ, तो अलबत्ता मुमकिन है।

साहित्यानन्द—नहीं उद्योग करने से अब भी सम्भव है। मगर—नहीं—नहीं—किन्तु, हाँ किन्तु अलबत्ता मुमकिन के स्थान पर क्या नाम के—

ठहरो—(जब से डिक्शनरी निकाल कर उलटता है) संसारी—अजी "अलबत्ता, मुमकिन" को मारिए गोली। किस तरह यह मुमकिन है यह तो बताइए।

साहित्यानन्द—इसकी तो बड़ी सरल युक्ति है।

संसारी—क्या?

साहित्यानन्द—बस मेरी तरह—उहँक-उहँक, मेरे प्रकार हिन्दी का एक कोष जब मैं सदैव रक्खा करूँ। (किताब दिखा कर) यह वही है। इसी में से अलबत्ता, मुमकिन की हिन्दी ढूँढ़ कर अभी बताता हूँ। ठहरो।

संसारी—(अलग हसता हुआ) राम! राम!

वाह रे साहित्य-सेवी! क्यों न हो! तभी हिन्दी-उपन्यासों में स्वाभाविकता अपने कर्मों को रोया करती है। (प्रकट) महाराज इस कोष की जान छोड़िए। "अलबत्ता मुमकिन" हिन्दी नहीं, तो कौन सा विलायती है, यह तो कहिए?

साहित्यानन्द—अरे! क्या तुम इसे हिन्दी समझते हो?

संसारी—बेशक। क्योंकि मैं हिन्दुस्तानी आदमी हूँ। हिन्दी को अपनी मातृ-भाषा जानता हूँ। इसलिए जो बोली या शब्द मैं जन्म से बोलता आता हूँ, उसी को हिन्दी समझता हूँ।

साहित्यानन्द—आहाहाहा! आहाहाहा! तुम्हारी समझ साहित्यिक नहीं है। कारण? तुम साहित्य को नहीं जानते, इसीलिए ऐसा कहते हो।

विंदूषक

नाम ही से पुस्तक का विषय इतना स्पष्ट है कि इसकी विशेष चर्चा करना व्यर्थ है। एक-एक चुटकुला पढ़िए और हँस-हँस कर दोहरे हो जाएँ, इस बात की गारंटी है। सारे चुटकुले विनोदपूर्ण और चुने हुए हैं। भोजन एवं काम की थकावट के बाद ऐसी पुस्तकें पढ़ना स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी समान आनन्द उठा सकते हैं। मूल्य केवल १) ; स्थायी ग्राहकों से ॥)

देवदास

यह बहुत ही सुन्दर और महत्वपूर्ण सामाजिक उपन्यास है। वर्तमान वैवाहिक कुरीतियों के कारण क्या-क्या अनर्थ होते हैं; विविध परिस्थितियों में पड़ने पर मनुष्य के हृदय में किस प्रकार नाना प्रकार के भाव उदय होते हैं और वह उद्भ्रान्त सा हो जाता है—इसका जीता-जागता चित्र इस पुस्तक में खींचा गया है। भाषा सरल एवं मुहावरेदार है। मूल्य केवल २) ; स्थायी ग्राहकों से १॥)

विधवा-विवाह-मीमांसा

अत्यन्त प्रतिष्ठित तथा अकादमिक प्रमाणों द्वारा लिखी हुई यह वह पुस्तक है, जो सड़े-गले विचारों को अग्नि के समान भस्म कर देती है। इस बीसवीं सदी में भी जो लोग विधवा-विवाह का नाम सुन कर धर्म की दुहाई देते हैं, उनकी आँखें खुल जायँगी। केवल एक बार के पढ़ने से कोई शङ्का शेष न रह जायगी। प्रश्नोत्तर के रूप में विधवा-विवाह के विरुद्ध दी जाने वाली असंख्य दलीलों का खण्डन बड़ी विद्वत्तापूर्वक किया गया है। कोई कैसा ही विरोधी क्यों न हो, पुस्तक को एक बार पढ़ते ही उसकी सारी युक्तियाँ भस्म हो जायँगी और वह विधवा-विवाह का कट्टर समर्थक हो जायगा।

प्रस्तुत पुस्तक में वेद, शास्त्र, स्मृतियों तथा पुराणों द्वारा विधवा-विवाह को सिद्ध करके, उसके प्रचलित न होने से जो हानियाँ हो रही हैं, समाज में जिस प्रकार भीषण अत्याचार, व्यभिचार, भ्रूण-हत्याएँ तथा वेश्याओं की वृद्धि हो रही है, उसका बड़ा ही हृदय-विदारक वर्णन किया गया है। पढ़ते ही आँखों से आँसुओं की धारा प्रवाहित होने लगेंगी एवं पश्चात्ताप और वेदना से हृदय फटने लगेंगे। अस्तु। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल, रोचक तथा मुहावरेदार है। मूल्य केवल ३)

ग्रह का फेर

यह बङ्गला के प्रसिद्ध उपन्यास का अनुवाद है। लड़के-लड़कियों के शादी-विवाह में असावधानी करने से जो भयङ्कर परिणाम होता है, उसका इसमें अच्छा दिग्दर्शन कराया गया है। इसके अतिरिक्त यह बात भी इसमें अङ्कित की गई है कि अनाथ हिन्दू-बालिकाएँ किस प्रकार ठुकराई जाती हैं और उन्हें असहाय तथा विपदावस्था में पाकर किस प्रकार ईसाई और मुसलमान अपने चङ्गुल में फँसाते हैं। मूल्य ॥)

राष्ट्रीय गान

यह पुस्तक चौथी बार छप कर तैयार हुई है, इसीसे इसकी उपयोगिता का पता लगाया जा सकता है। इसमें वीर-रस में सने देशभक्ति-पूर्ण गानों का संग्रह है। केवल एक गाना पढ़ते ही आपका दिल फड़क उठेगा। राष्ट्रीयता की लहर आपके हृदय में उमड़ने लगेंगी। यह गाने हारमोनियम पर गाने लायक एवं बालक-बालिकाओं को कण्ठ कराने लायक भी हैं। शीघ्रता कीजिए, थोड़ी सी प्रतियाँ शेष हैं। मूल्य ॥)

व्यवस्थापक 'बाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक इलाहाबाद

संसारी—(हाथ जोड़ कर) तो कृपा कर मुझे भी साहित्य से जान-पहचान करा दीजिए, ताकि मेरी भी समझ आपकी सी हो जाए। काहे को इतनी सी बात की कमी के लिए मैं सदा नासमझ बना रहूँ।

साहित्यानन्द—अच्छी बात है। परन्तु इसमें तुम्हारा बड़ा समय लगेगा।

संसारी—कुछ भी नहीं। मैं तो अभी चलने को तैयार हूँ। चलिए मुझे ले चलिए।

साहित्यानन्द—कहाँ ?

संसारी—अपने साहित्य जी के पास उनसे जान-पहचान कराने। अब तो बिना उनसे मिले मुझसे रहा न जाएगा। (हाथ जोड़ कर) बस अब ले चलिए। देर न कीजिए।

साहित्यानन्द—(घबड़ा कर) अरे ! तो साहित्य कोई मनुष्य थोड़े ही हैं, जो तुम्हें ले जाकर उनसे भेंट कराऊँ ?

संसारी—तो क्या वह कोई भूत-प्रेत हैं ?

साहित्यानन्द—नहीं जी।

संसारी—आखिर तब साहित्य कौन सो चीज है महाराज ?.....क्यों बताते क्यों नहीं ? क्या आप भी नहीं जानते ?

साहित्यानन्द—कौन मैं ? वाह ! मैं डेढ़ सौ गल्पें पढ़ चुका हूँ। दो-एक दर्जन कहानियों का अनुवाद भी कर चुका हूँ। दस-बास पत्र-पत्रिकाएँ नित्य ही अवलोकन करता हूँ। ऐसा उच्चकोटि का साहित्य-सेवी होकर भी मैं साहित्य को न जानूँगा, तो और कौन जानेगा ?

संसारी—क्या खूब कहा ! मैं पूछता हूँ साहित्य क्या चीज है और आप गिनाने लगे अपनी पढ़ने वाली किताबें।

साहित्यानन्द—उन्हीं में तो साहित्य होता है, परन्तु चीज के स्थान पर 'पदार्थ' कहो।

संसारी—तब क्यों नहीं साफ-साफ कहते कि साहित्य किताब को कहते हैं ?

साहित्यानन्द—बस-बस यही है। तुमने मेरे मुख को बात कह दी। परन्तु सभी पुस्तकों में साहित्य नहीं होता।

संसारी—आखिर साहित्य वाली किताबें होती कैसी हैं ?

साहित्यानन्द—उन पर रेशमी जिल्द मण्डित होती है। उनमें कई चित्र होते हैं। उनका क्रागज बहुत चिकना होता है। परन्तु कागज के स्थान पर क्या कहना चाहिए—ठहरो—(जेब से डिक्शनरी निकालता है)

संसारी—अपनी डिक्शनरी जेब ही में रहने दीजिए। मैं समझ गया। जैसे विलायती दूकानों के सूचीपत्र। क्यों यही बात न ?

साहित्यानन्द—नहीं जी। उनमें अच्छी-अच्छी वार्ता, उम्दा उम्दा, नहीं-नहीं श्रेष्ठ-श्रेष्ठ गल्पें, बढ़िया-बढ़िया कविताएँ होती हैं, जिन्हें पढ़ कर चरित्र सुधरता और ज्ञान उत्पन्न होता है।

संसारी—यों तो हर आदमी की जीवनी एक न एक कहानी होती है।

साहित्यानन्द—परन्तु उसे साहित्य नहीं कह सकते।

संसारी—क्यों ?

साहित्यानन्द—क्योंकि साहित्य में हमारा-तुम्हारा हाल नहीं होता। वरन् देवी-देवताओं के समान आदर्श चरित्रों का वर्णन होता है, जिसमें लेश मात्र भी कमजोरी-उधुँक-उधुँक निर्वलता, हों निर्वलता नहीं होती।

संसारी—ऐसे चरित्र भला रहते कहाँ हैं ?

साहित्यानन्द—साहित्यिक संसार में।

संसारी—आखिर वह संसार है किस लोक में ?

साहित्यानन्द—(अपना सर खुजलाता हुआ) आखिर के स्थान पर अन्त कहो।

संसारी—अच्छा यही सही। “अन्त वह संसार है किस लोक में ?” मगर ऐसे जुमले आप ऐसे साहित्य-सेवी हो लोगों के मुँह में शोभा देते होंगे। मैं तो बोल नहीं सकता। खैर मैंने आपकी बात रख दी। अब कृपा करके आप भी मेरी बात का जवाब दे दीजिए।



मेम साहबा एक बनी है, और एक मछली वाली !
धन्य धर्म ईसा-मसीह का, कितना महा शक्तिशाली !!

साहित्यानन्द—क्या पूछा ये चरित्र रहते कहाँ हैं ?.....लेखकों की खोपड़ी में।

संसारी—धत्त तेरे की ! मैं वहाँ जाकर उन लोगों के देखने की फिक्र में था।

साहित्यानन्द—हताश न हो। यदि जनता हम लोगों की कहानियाँ पढ़-पढ़ कर उनके चरित्रों के समान अपना रहन-सहन धारण करेगी, तो यही संसार धीरे-धीरे साहित्यिक संसार बन जाएगा।

संसारी—हाँ उन लोगों का रहन-सहन कैसा होता है, ज़रा मुझे भी बता दीजिए।

साहित्यानन्द—वे लोग जन्म से ही ज्ञान छाँटने लगते हैं। उनका वार्तालाप सदैव शुद्ध और उच्च कोटि की साहित्यिक भाषा में इतनी उत्तम होती है कि तुम दस-बीस कोष रट कर भी वैसी भाषा नहीं बोल सकते। और इसके अतिरिक्त उनके वाक्य के प्रत्येक शब्द में धर्म और शिक्षा

का व्याख्यान होता है। उनकी छोटी सी छोटी बातचीत भी इतने महत्व की होती है कि जान पड़ता है कि कोई धर्म-प्रचारक रट कर अपना व्याख्यान सुना रहा है। और क्या ?

संसारी—बलिहारी है ऐसे चरित्रों की महाराज ! इनके बल पर आपका साहित्य वेशक फूलों न समाता होगा। कला और स्वाभाविकता दोनों बड़ी दुआएँ देती होंगी।

साहित्यानन्द—क्यों नहीं ? आदर्श की उत्तमता का प्रकाश सभी बातों पर अपनी शोभा दिखलाता ही है।

संसारी—भला आपके साहित्यिक संसार में खाली शिक्षा और ज्ञान ही होते हैं, प्रेम-उरेम नहीं होता क्या ?

साहित्यानन्द—वाह होता क्यों नहीं। वहाँ तो ऐसा उच्च प्रेम होता है, जो इस संसार को नसीब-राम ! राम !—सौभाग्य में नहीं है।

संसारी—कैसा ?

साहित्यानन्द—वहाँ बालक युवा होते-होते किसी बालिका के प्रेम में पड़ जाता है। वह नित्य ही उससे मिलता है, परन्तु कभी अपना प्रेम प्रकट नहीं होने देता। जब उससे उसका विवाह होता है, तभी वह अपना प्रेम दिखलाता है।

संसारी—अगर उस बालिका की उससे नहीं किसी दूसरे से शादी हो गई ?

साहित्यानन्द—तब वह प्रेमी तुरन्त जङ्गल में जाकर संन्यासी हो जाता है या देश सुधारक बन जाता है या कभी-कभी मर भी जाता है।

संसारी—और ऐसी दशा में बालिका क्या करती है ?

साहित्यानन्द—वह अपने पूर्व प्रेम को बिलकुल भूल कर भट से उसे अपने नव-विवाहित पति के चरणों पर अर्पण कर

देती है।

संसारी—अगर वह ऐसा न कर सके ?

साहित्यानन्द—तब वह साहित्यिक संसार से एकदम नहीं नहीं—पहसा निकाल बाहर कर दी जाएगी।

संसारी—ओहो ! तो यह कहिए कि आपके संसार में प्रेम गिरगिट की तरह रङ्ग बदलता है। आज इधर है, तो कल उधर।

साहित्यानन्द—निस्मन्देह ! क्योंकि यहाँ तो कार्यकर्ता का कर्तव्य होता है। वह जिस समय जिधर आज्ञा देता है भावों को उसी क्षण उधर ही मुड़ जाना पड़ता है ?

संसारी—मगर माफ कीजिएगा प्रेम तो अपने वश की बात नहीं है। उसे कर्तव्य क्या, ज्ञान का बाप भी नहीं समझा सकता। तभी तो किसी ने कहा है कि—

उन्न समझाते कटी आपको अय हज़रते-दिल !

हर जगह आप मगर अपनी सी कर जाते हैं !!

साहित्यानन्द—राम ! राम ! यह तो इस संसार का हाल है। परन्तु मैं तो साहित्यिक संसार की बातें कहता हूँ। यदि इस पद में तुम पति-पत्नी का प्रेम वर्णन करते, तो देखते मैं इसकी कितनी प्रशंसा करता।

संसारी—मैं समझ गया। आपके संसार में हृदय नहीं, केवल खोपड़ी ही खोपड़ी है, तभी वह दिल की बातें समझ नहीं सकता।

साहित्यानन्द—नहीं-नहीं, हृदय भी है। उसकी विशालता दाम्पत्य प्रेम में देखो। यहाँ पति-पत्नियों में सोते, उठते-बैठते, मरण-पर्यन्त प्राणप्यारी और प्राणनाथ की ऐसी रट लगी रहती है कि क्या कहूँ ?

संसारी—माफ़ कीजिएगा। मैं हूँ तो मुँह-फट, फिर भी आप बुजुर्ग हैं, आपके सामने कहते शर्म मालूम होती है।

साहित्यानन्द—बुजुर्ग नहीं 'वृद्ध सज्जन', शर्म नहीं 'लज्जा'। हाँ-हाँ कहो। शर्माने—उहूँक—लजाने की कोई आवश्यकता नहीं। कहो-कहो !

संसारी—मियाँ-बीबी के बोल-चाल में मुझे यह प्राणनाथ और प्राणप्यारी वाली बात बहुत खटकती है। इसके लिए मैं दूसरों की क्यों कहूँ, अपनी ही मिसाल क्यों न दूँ ? मेरी स्त्री जो बेचारी मर गई, वह मुझे बहुत प्यार करती थी, मगर कभी भी मेरे मुँह पर प्राणनाथ न कह सकी।

साहित्यानन्द—आहा ! मैं समझ गया—वह पतिव्रता न रही होगी।

संसारी—(अलग) अच्छा बचा रहो। (प्रकट) आप तो दाम्पत्य जीवन का सुख भोगते-भोगते बुढ़े हो गए हैं। भला आपके इस जीवन में कितनी बार प्राणप्यारी और प्राणनाथ की आँधी आई है—जरा बताइए तो ?

संसारी—जब आप खुद ही इस तौर से दाम्पत्य प्रेम नहीं कर सके, तब दूसरों से इसकी कैसे उम्मीद करते हैं ? आप तो साहित्य के सपूत-साहित्यानन्द हैं, आपका तो रहन-सहन 'आचार-विचार-सब कुछ अपने साहित्यिक संसार के ढङ्ग पर होना चाहिए। अगर वैसा नहीं हो सकता तो समझ लीजिए, आपका वह संसार कुछ नहीं, दो कौड़ी का है, धोखे की टट्टी है। जहाँ कुछ भी असलियत नहीं, जिधर देखो बस बनावट ही बनावट है।

साहित्यानन्द—नहीं-नहीं, यह गड़बड़-सड़बड़ मैं नहीं मानता, परन्तु इतनी बात अवश्य ठीक है कि मैं साहित्य का सपूत और उस पर साहित्यानन्द हूँ। और मेरा रहन-सहन साहित्यिक—ढङ्गानुसार होना चाहिए।

संसारी—(अलग) भई वाह ! यह ढङ्गानुसार की एक ही हुई।

साहित्यानन्द—(सोच में) क्या बताऊँ, मुझे यह बात कभी सूझी ही नहीं। खैर—उहूँक—अस्तु, जभी से मनुष्य चेतें, तभी से सही। बस मैं आज ही से अपना रहन-सहन सब कुछ साहित्यिक बनाता हूँ।

(चल देता है)

संसारी—(अकेला) अरे ! चले गए। खैर ! जाने दो। मेरे लिए इस वक्त इनकी इतनी ही

रत तो ऐसे हैं कि बस डुगडुगी बजा कर इन्हें नचाया करो। मगर जब ऐसे लोग हमारे यहाँ



“अरररर कबोर।”

परवाह नहीं, अपने ही घर की स्त्रियाँ हैं तो क्या ? होली का तो यही महाभय है कि :—

“अबला विलोकहि पुरुषमय, जग पुरुष सब अबलामयम् !”

साहित्य के सपूत होने लगे हैं, तब तो साहित्य बेचारे का ईश्वर ही मालिक है ? (जाता है)

“बूढ़ा वंस कबीर का, उपजे पूत-कपूत।

(क्रमशः)

* * *

मुफ्त

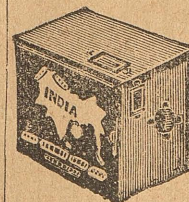
जो सज्जन १० हिन्दी पढ़े-लिखे मनुष्यों के पूरे-पूरे पते मय उनके ग्राम, पोस्ट, जिले के लिख कर भेजेंगे, उनको अङ्गरेजों की गिल्ली-डण्डा नामक पुस्तक मय केलेण्डर के मुफ्त भेजेंगे। ध्यान रहे, पते अलग-अलग स्थानों के हों।

पता—श्री गङ्गा आषधालय, अलीगढ़

रजिस्टर्ड

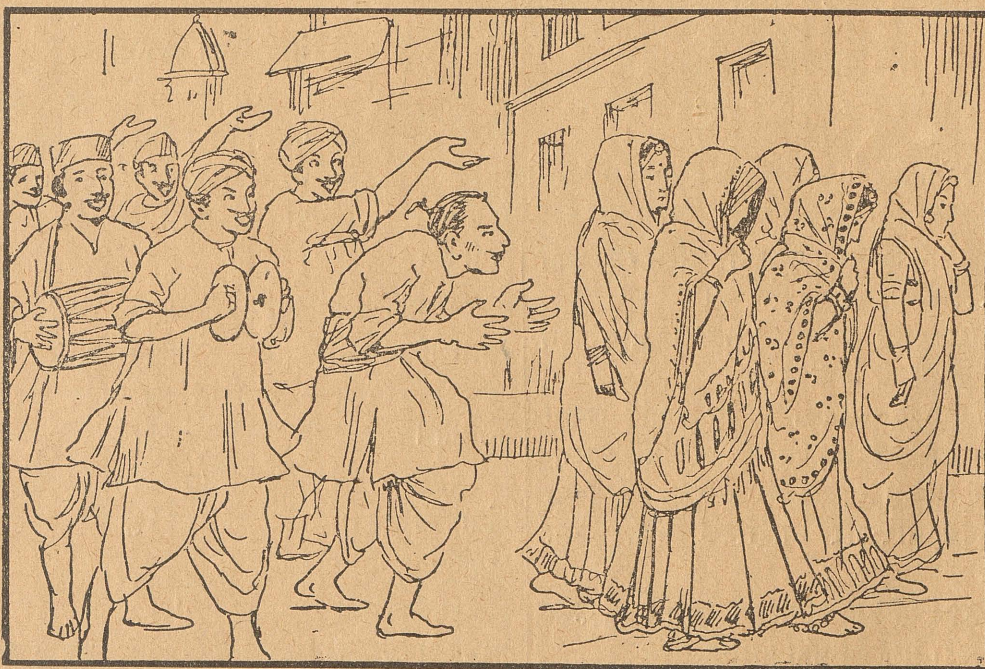
भारतीय कैमरा

कैमरा के साथ शीशा काटने की हीरे की कलम मुफ्त



हमारा स्वदेशी कैमरा बड़ी आसानी से प्लेट पर बाहे जिस चीज़ की साफ़ और सुन्दर टिकाऊ तस्वीर खींचता है। बढ़िया प्रोटो न खिंचे तो दाम वापिस। एक प्लेट, कागज़, मसाला और हिन्दी में तरकीब साथ है। २॥ × ३॥ इञ्च साइज़ की तस्वीर खींचने वाला कैमरा का मूल्य २॥ रुपया ; डा० म० ॥॥; ३॥ × ४॥ इञ्च साइज़ की तस्वीर खींचने वाला कैमरा का मूल्य ३॥ रुपया ; डा० म० ॥॥

पता—दीन ब्रादर्स, नं० ५, अलीगढ़



‘एहि पाखे पतिव्रत ताखे धरो।’

‘सभ्यता, शिष्टता और माँ-बहिनों का सम्मान करने के लिए तो सारा वर्ष पड़ा है। आज तो होली के दिन उन्हें फूहड़ गालियाँ देने का ही महत्व है, और यही सनातन काल से होता आया है !

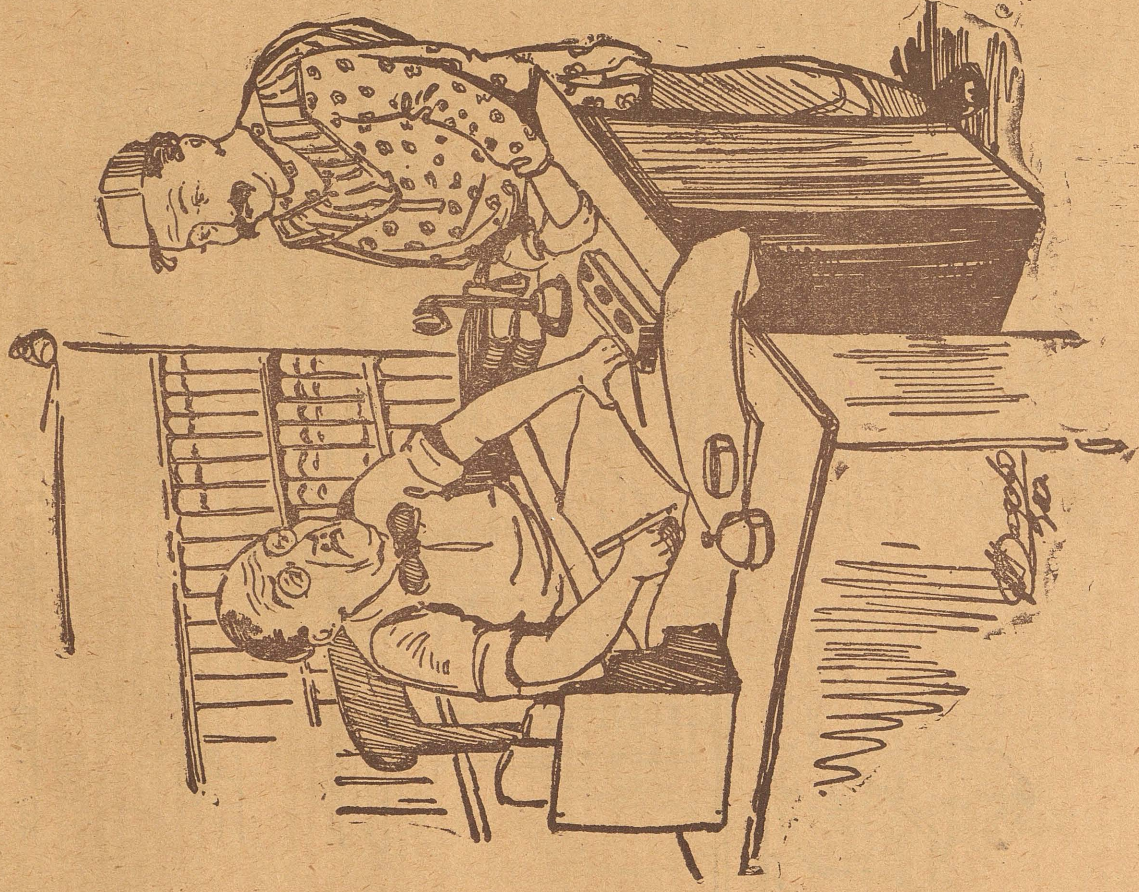
साहित्यानन्द—अरे ! इसका तो मैंने कभी ध्यान ही नहीं दिया। क्या बताऊँ, गृहस्थी के कामों से इसके लिए कभी छुट्टी नहीं मिली।

मुलाकात काफ़ी है। आगे तो मैं अब अपना रङ्ग जमा ही लूँगा। क्या बताऊँ चपला की खातिर इनका बहुत-कुछ लिहाज़ करना पड़ा, वरना हज़-

मु. मकदमबाज़ी और उसका परिणाम

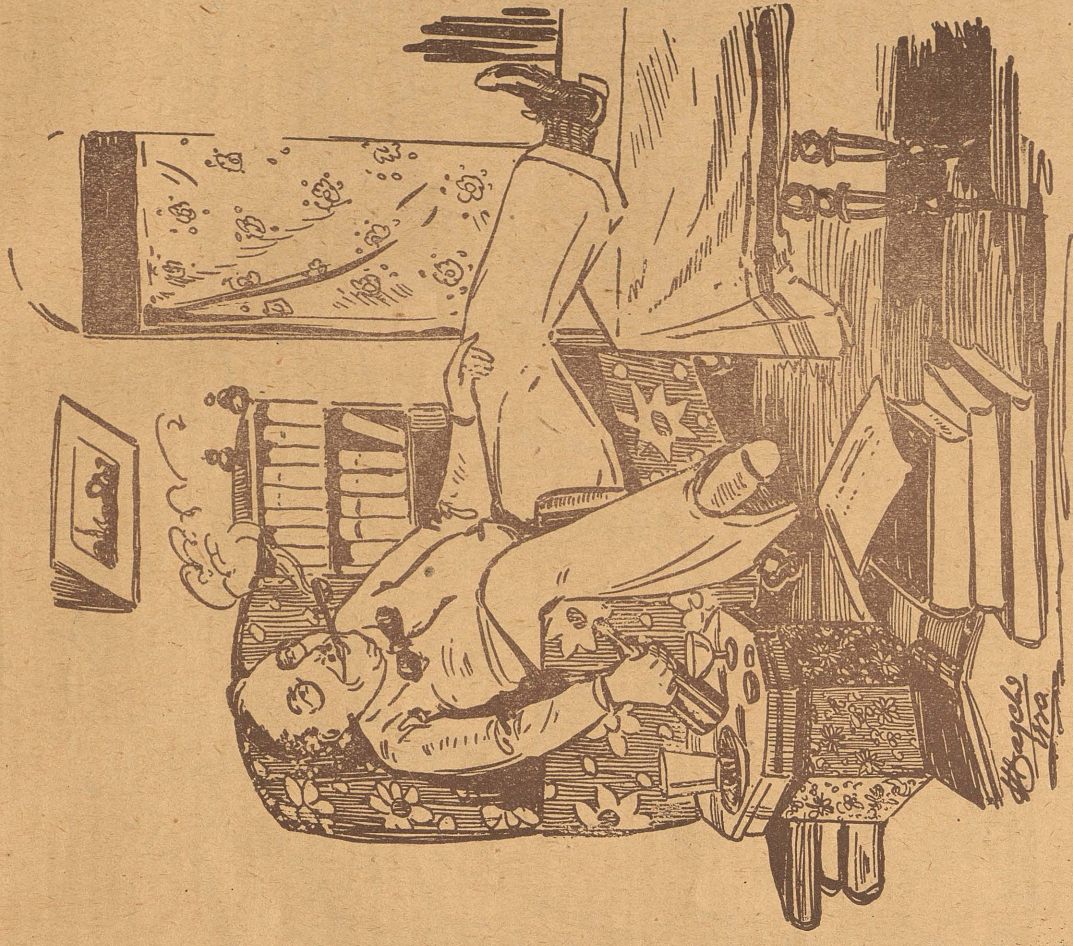
चित्रकार :—'भविष्य' के आर्टिस्ट—श्री० एच० बागची । कवि :—'भविष्य' के हिन्दी-कविता-सम्पादक—श्री० आनन्दीप्रसाद जी श्रीवास्तव

फुर्सत नहीं !



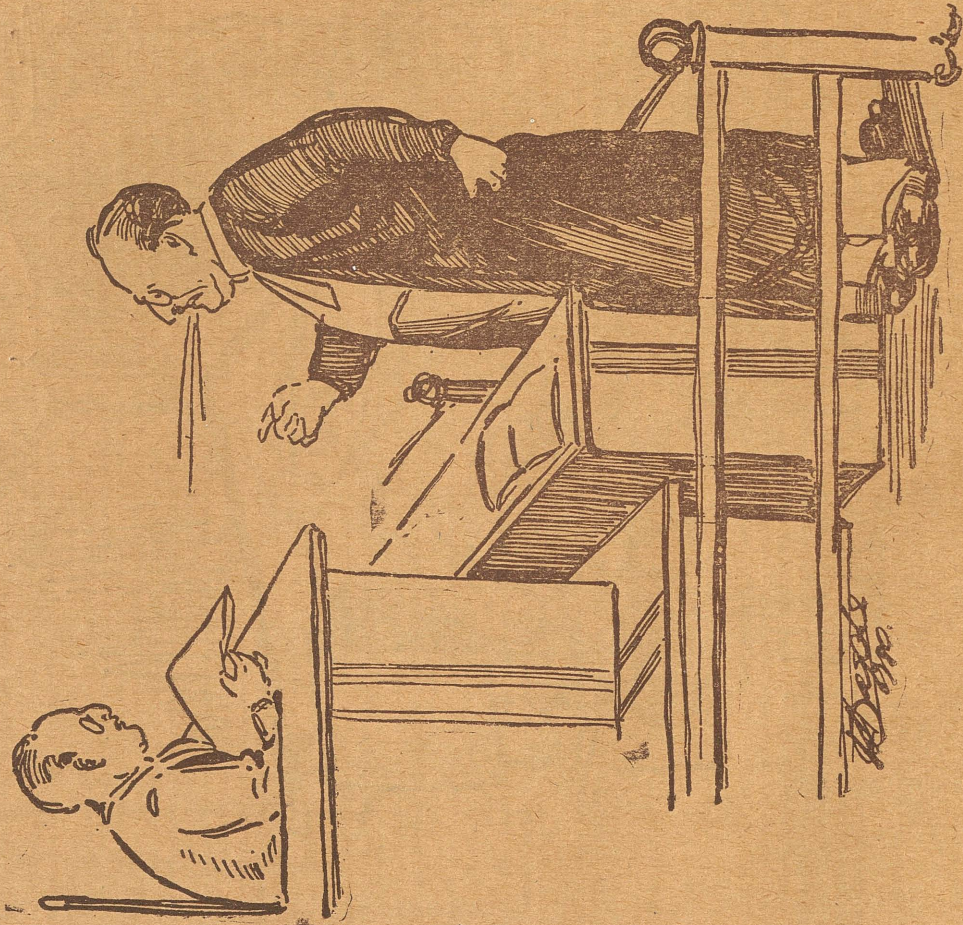
बैठा रहा द्वार के ऊपर, दिन मुक्किल जब दिन-रात,
तब वकील साहब के दर्शन मिले, हुई उनसे दो बात !
मिलता है उनका भिज़ाज ही नहीं, बिगड़ कर बारम्बार—
कहते हैं वे, "एक मिनट में कह अपनी बातों का सार"!!

फुर्सत का सदुपयोग !!



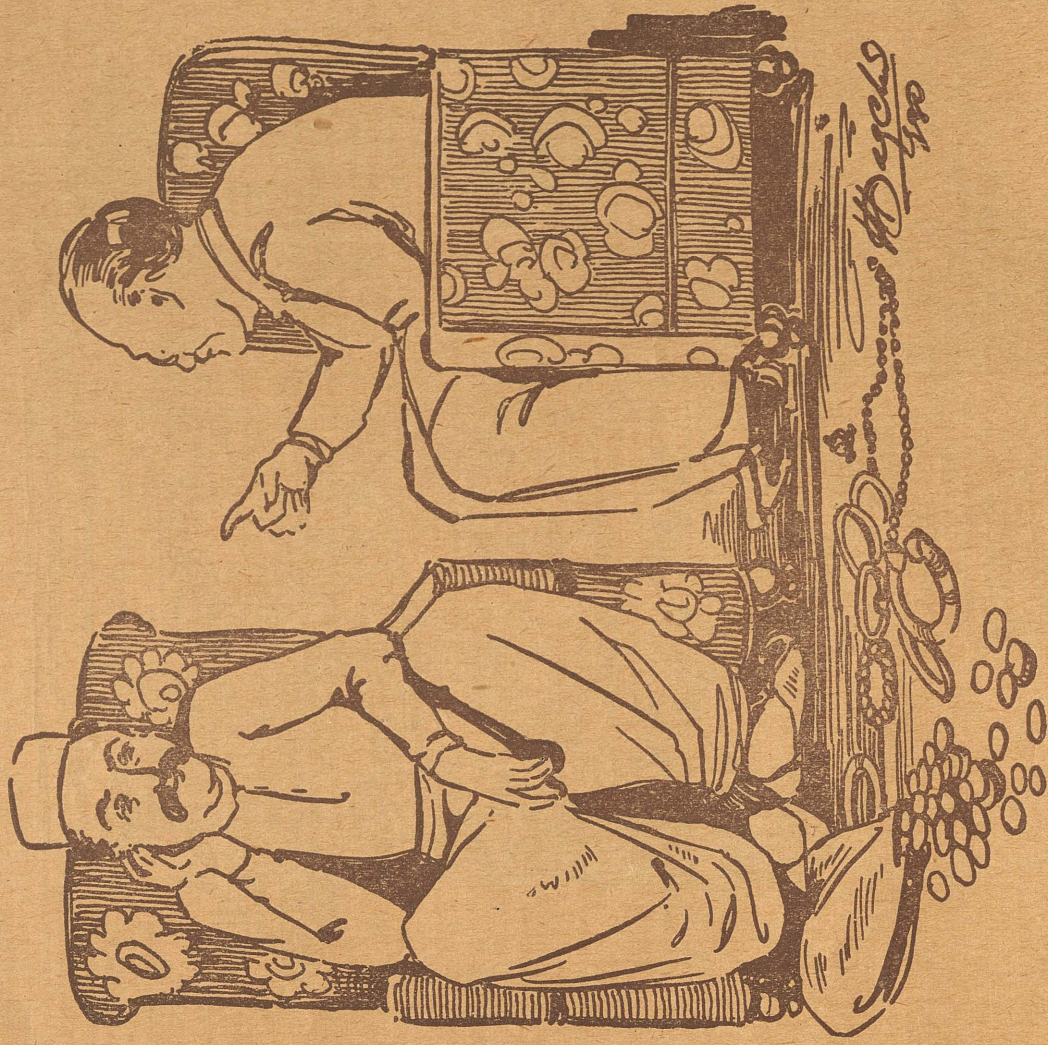
फैलाए हैं पैर, लिए हैं हाथों में बोतल प्यारी,
ऊँघ-ऊँघ कर बड़े मुकदमे की करते हैं तय्यारी !
बेसमझे सुलभा लेते हैं वे उसकी उलभन सारी,
कहना है कुछ न कुछ अदालत में, ले चुके फ़ीस भारी !

बेतुकी बहस



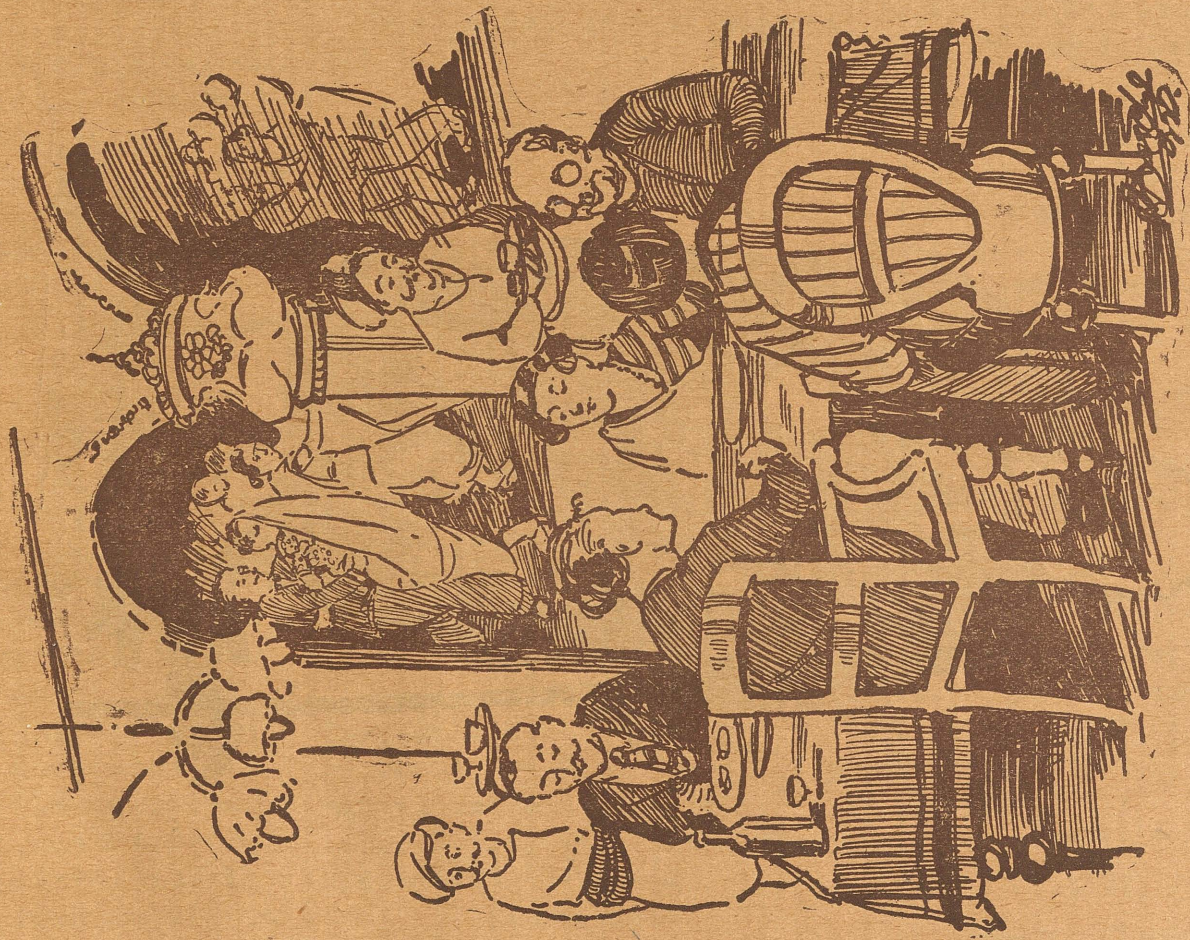
कुछ का कुछ बक गए अदालत में वे, गया मुवकिल हार,
आकर बाहर कहा मुवकिल से, भाई मैं था लाचार !
साहब समझे नहीं मुकदमा, मैंने समझाया बहु बार,
सुना नहीं क्या तुमने ? उनको कितनी बतलाई फटकार ?

‘अपील में जिता दूंगा’



अजी सिढ़ी था यह साहब तो, जो तुम गए मुकदमा हार,
मुझे जिता दूंगा अपील में, इसका लेता हूँ मैं भार !
इतने में क्या होगा ? गहने लाखों और अधिक दस-बीस,
जब जीतोगे मौज करोगे, दे दो थोड़ी तो है फीस !!

जीतने की तैयारी



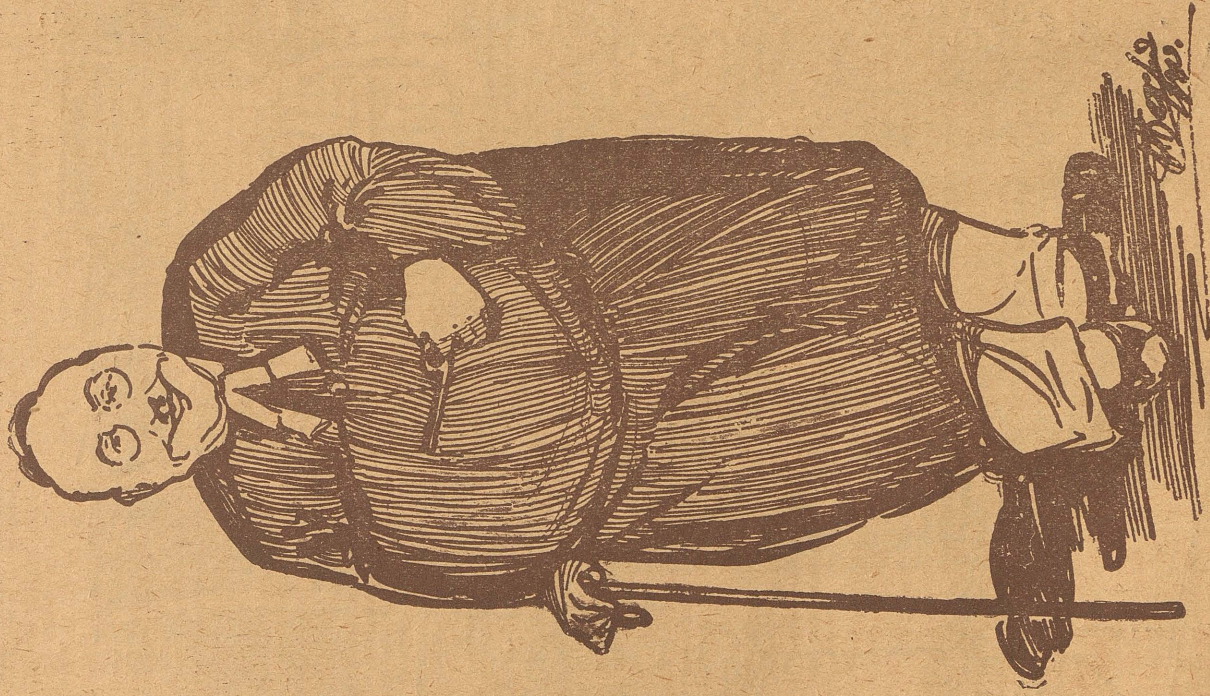
पाई फ्रीस, उन्हेंने दे दी है लम्बी-चौड़ी दावत,
है शराब भी, और 'बॉल' भी, सब कुछ है, कुछ पूछो मत !
करते भी वकील साहब हैं यों अपील को तय्यारी,
और जीत जाने की है उम्मीद मुक्किल को भारी !!

परिणाम !



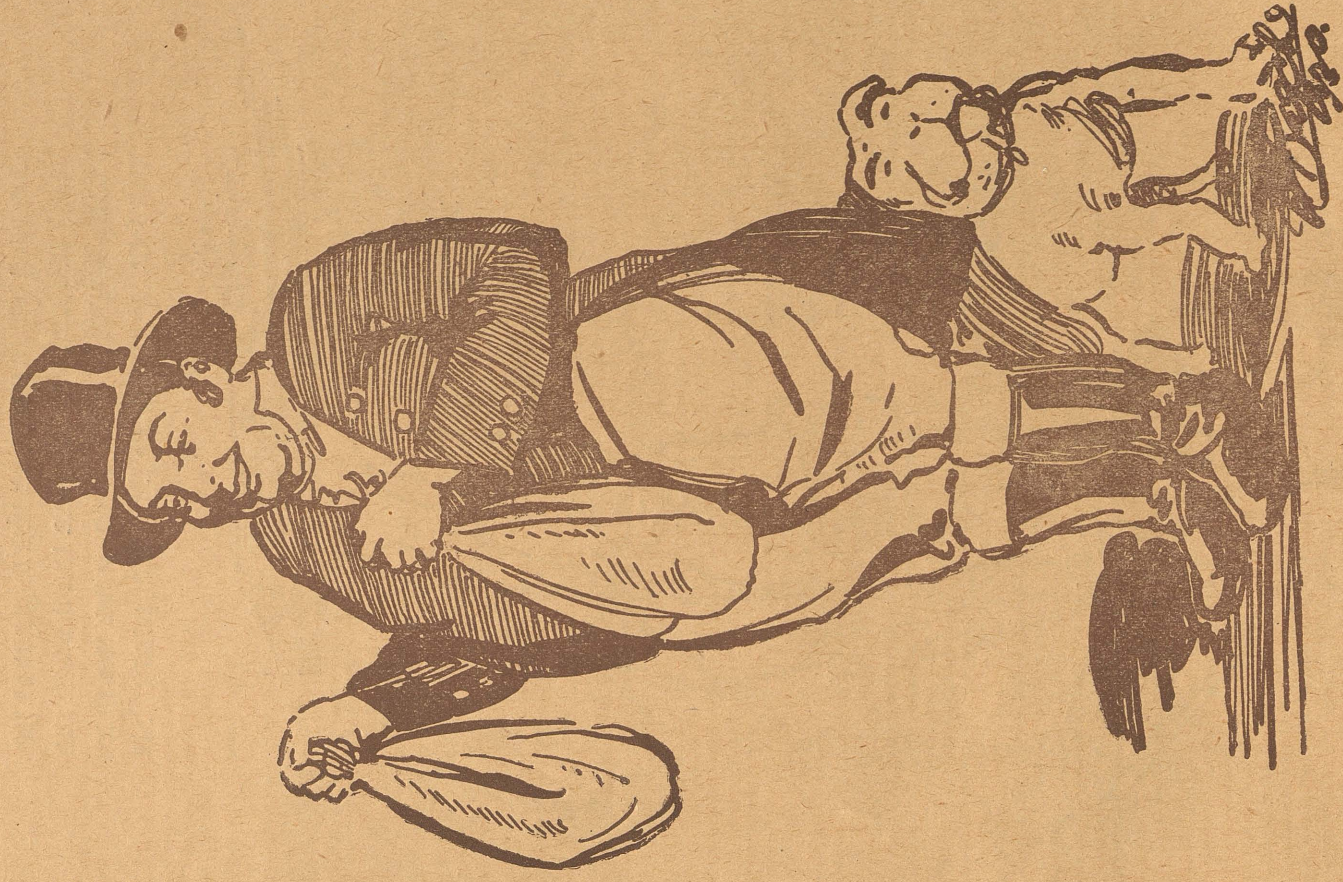
हार, भिखारी बना राह का फिरता है मारा-मारा,
कर ही क्या सकता वकील का, भला मुक्किल बेचारा !
क्या जाने क्या-क्या उनको वह मन ही मन देता है श्राप,
क्यों रपया दे दिया, लड़ा क्यों, उसने ही शिर है सब पाप !!

वकीला शान !



मस्त हुए वकील साहब हैं, पाकर बड़े मौज से धन,
जितना मोटा उनका तन है, उतना ही छोटा है मन !
कैसे भी हो, इस दुनिया में उनकी बाल गई है बन,
आन-बान है, बड़ी शान है, 'साहब' सा है रहन-सहन !!

जॉनबुल की पाँचो घी में !



जितनी लगी कोर्ट-फ़ी वह तो मार ले गई है सरकार,
पाया जो वकील ने उसका वहन कर सके क्या वे भार ?
ले-लेकर सामान विदेशी, भेज उसे भी दिया विदेश !
दोनों भोली मिली 'जॉनबुल' को, इसमें सन्देह न लेश
यों वकील साहब लुटा रहे, मुक्त-हस्त से अपना देश !!
क्यों न भारतीयों को होंवे, उनके कारण क्लेश विशेष !!

होली की दावत

[श्री० युगलकिशोर जी खत्री]

पहला दृश्य

(पियकड़राज का प्रवेश)

पिय०—और क्या ? पीता हूँ तो क्या किसी के बाप का पीता हूँ ? भगवान देता है और मैं पीता हूँ ! तुम्हें दे, तुम भी पियो ! मैं तो नहीं जाता किसी को मना करने ? फिर मुझे लोग क्यों तज़ करते हैं ?

(गाता है)

पिला साकिया अरगवानो शराब,
जो पीरी में दे नौजवानी शराब ।

× × ×

गम गुलत करने को मैं पीता हूँ मै,
इससे बेहतर गमरुबा देखी न शै !

× × ×

पीता नहीं, शराब कभी बे उजू किए,
कालिब में मेरे रुह किसी पारसा की है ।

× × ×

(दूसरी ओर से सत्यवती का प्रवेश)

सत्य०—कहाँ की तयारी है ?

पिय०—जह-नुम की !

सत्य०—भला, मैंने कौन सी ऐसी बात कह दी, जो फट पड़े ?

पिय०—ज़रा बोली तो सुनो, फट पड़े ! और क्या ? मानो मैं कोई गुंवारा हूँ या मोटर-गाड़ी का 'टायर' !

सत्य०—आपसे तो बोलना भी पाप है !

पिय०—और क्या ? पति से बोलना तो पतिव्रता स्त्री के लिए पाप है ही ।

सत्य०—लेकिन मैंने अपराध कौन सा कर डाला है ? यही न पूछा है कि कहाँ चले । इसमें कौन सी... !

पिय०—क्यों पूछा ? जाने के समय यों रोकने की क्या ज़रूरत थी ?

सत्य०—खैर, भूल हो गई । परन्तु ऐसे कौन से काम के लिए जा रहे थे, जो टोक देने से यात्रा बिगड़ गई ? क्या सुन सकती हूँ ?

पिय०—खूब सुन सकती हो, ऐसे न सुनाई पड़े तो कानों में 'लाउडशीकर' का पोंगा लगा कर सुन सकती हो । मैंने होली के उपलक्ष में दोस्तों को दावत दी है । उसी के लिए कुछ रुपए कहीं से उधार लेने के लिए जा रहा हूँ । ऐसे काम में टोक कर..... !

सत्य०—बहुत बुरा किया, क्यों ?

पिय०—और क्या ? अगर रुपया न मिला तो ? ऐसे मौके पर तुम्हें टोकने का क्या अधिकार था ?

सत्य०—बेशक कोई अधिकार न था । लेकिन यह तो बताइए कि घर में भोजन के लाले पड़ रहे हैं और आप कर्ज़ लेकर दोस्तों को दावत देने जाते हैं !

पिय०—यह मेरी खुशी की बात है । मैं कर्ज़ लेकर दावत हूँ या ढाका ढाल कर । उसका जिक्र करने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं है ।

सत्य०—(क्रोध होकर) अधिकार ? अधिकार तो मुझे इतना है कि तुम्हारे एक-एक दोस्त को सात-सात झाड़ू मार कर घर से बाहर कर दूँ ।

पिय०—कभी नहीं । मैं स्मृति और पुराण खोल

कर दिखा सकता हूँ, कि औरत को ऐसा कोई अधिकार नहीं है ।

सत्य०—तो क्या स्मृतियों और पुराणों में यही लिखा है कि दुनिया भर के आवारों को बंदोर कर उनके साथ शराब पियो । क्यों ?

पिय०—नहीं लिखा है न सही । मैं पुराणों और स्मृतियों का कोई गुलाम हूँ ? कि उनके बाप का कर्ज़ खाय़ा है ?

सत्य०—परन्तु मैं हूँ ! अच्छा आने दो कमबख्तों को आज घर में ।

(सरोष प्रस्थान)

पिय०—बमभोला ! सारा गुड़ गोबर हो गया । और क्या ? दूकान में कम्बख्त पिकेटरों के मारे पीने नहीं पाते । घर में डौल बैठाया तो हरामज़ादी जोड़ू ने उसमें भी गोबर घोल दिया । बड़े-बड़े लीडर मरे जाते हैं ; मगर न मालूम कम्बख्त यमराज इससे क्यों डरता है । मालूम होता है, वह भी पीता है । इसीसे इसे नहीं ले जाता । खैर, चलें चुकड़ानन्द के यहाँ । न होगा तो उसी के घर दावत की जायगी । (प्रस्थान)

दूसरा दृश्य

[पियकड़राज का प्रवेश]

पिय०—अरे ! भाई चुकड़ानन्द ! चुकड़ानन्द जी हो !

(कुछ देर टहलने के बाद)

पिय०—अरे भाई, चुकड़ानन्द ! अरे मर गए क्या ?

(एकाएक चुकड़ानन्द बड़े जोर से मकान से निकलता है और दोनों आपस में टकराते हैं ।)

पिय०—(दोनों हाथों से सिर पकड़ कर) उर्र ! बाप रे बाप ! मर गए पियकड़राज और कम्बख्त जोड़ू राँड हो गई ! दोस्त, आप भी तो ऐसे, जैसे तोप का गोला आता है ।

चुकड़०—(पियकड़राज को देख कर) अरे कौन है ? पियकड़राज ! अरे भाई, मेरी जान बचाओ ।

पिय०—क्यों ? क्यों ? क्या मकान के भीतर जर्मन घुस आए हैं ? या कोई भूचाल आया है ?

(अन्दर से एक मोटी औरत का हाथ में झाड़ू लिए निकलना)

औरत—खड़ा रह मर्दुप, भागता कहाँ है ?

पिय०—बाप रे ! यह औरत है या मरकही भैंस ?

चुकड़०—भाई, पियकड़, मेरी जान बचाओ ! इस भैंसासुर की नानी से ।

पिय०—तो भाई साहब ! पियकड़राज ही इस चामुण्डा के सामने कितनी देर ठहर सकता है ?

मोटी०—खबरदार अगर घर के भीतर पैर रक्खा, तो मारे डण्डों के कचूमर निकाल दूँगी ।

(किवाड़ बन्द कर लेती है)

पिय०—बार रे, जान बची । (चुकड़ से) क्यों भाई, यह दरियाई हाथी क्यों ढाल रक्खा है । यह क्या तुम्हारी नानी है या खाला ?

चुकड़०—अरे भाई, नानी होती तो क्या चिन्ता थी, कमबख्त जोड़ू है, जोड़ू ! सुनते हैं, जन्म-जन्मान्तर तक साथ रहेगी ।

पिय०—बमभोला ! तब तो जो सोच कर आया था, वह यहाँ भी नहीं हो सकता ।

चुकड़०—क्या नहीं हो सकता ?

पिय०—कुछ भी नहीं हो सकता । और क्या ? जिस घर में ऐसी त्रिजटा है, उसके तो पास होकर गुज़रना भी जान पर खेलना है !

चुकड़०—आखिर सुनें भी तो, किस लिए आए थे ?

पिय०—इसलिए कि आज रात को जो दावत होने वाली है, वह मेरे यहाँ न होकर तुम्हारे यहाँ होती । क्योंकि, मेरी श्रीमती जी अगर आपकी श्रीमती जी की तरह त्रिजटा नहीं हैं तो भी त्रिजटा की बच्ची तो ज़रूर ही हैं, आज आते-आते उन्होंने अपना ज़रनैली हुक्म सुना दिया है कि, अगर तुम्हारा कोई दोस्त यहाँ आएगा तो उसकी झाड़ू से खबर ली जायगी ।

चुकड़०—और यहाँ एक ही डण्डे में सबकी खोपड़ी का कचूमर निकल जाएगा ।

पिय०—तब क्या करना चाहिए ?

चुकड़०—दावत डिसमिस और प्रोग्राम बातिल !

पिय०—वाह ! यह कैसे हो सकता है ? फिर कौन जाने, अगली होली तक जिएँ या मरें ?

चुकड़०—तो फिर उपाय ?

पिय०—ठहरो मुझे कुछ देर सोचने दो ।

(दोनों हाथों से अपनी खोपड़ी खोजलाता है)

(एकाएक उड़ल कर) सुनो-सुनो ! अगर कल-वरिया ही में दावत हो जाए, तो कैसा ?

चुकड़०—मगर वहाँ पिकेटरों के मारे आपकी रुह भी फटकने पाएगी ?

पिय०—पिकेटरों की ऐसी-तैसी । वहाँ तो खुद सरकार दौलत-मदार की पुलिस हमारी रक्षा करेगी और पीने में मदद देगी । जानते नहीं, बड़े लाट साहब ने 'उर्दीनांस' (ऑर्डिनेन्स) पास कर दिया है कि अगर हमारे प्यारे पियकड़ों से कोई बोले, तो उसे फौरन् जेल दे दो !

चुकड़०—वाह ! तब तो सरकार बड़ी लायक है ।

पिय०—बड़ी लायक ! हमें तो मालूम होता है कि वह पूर्व-जन्म की हम लोगों की नानी है ।

चुकड़०—बात कुछ ऐसी ही है, नहीं तो शराबियों से उसे इतना प्रेम क्यों होता ? अच्छा लाओ, ज़रा तुम्हारी पीठ तो ठोक दें, क्योंकि तुमने बात बड़ी मार्के की सोची है ।

(पियकड़राज, चुकड़ानन्द की ओर पीठ कर देता है और चुकड़ानन्द उसे धूसी से ठोकने लगता है । पियकड़राज चिल्लाता है ।)

पिय०—उर्र ! यह भी कोई पीठ ठोकने का तरीका है ? पीठ क्या हुई, मानों धोबी की पाट हो गई ! राम-राम !

चुकड़०—अरे यार ! तुमने बात ही ऐसी कही कि बिना भरपेट ठोके काम ही नहीं चल सकता था ।

पिय०—खैर, कुछ परवाह नहीं । लाख पिकेटिज़ हो तो क्या हुआ । पियकड़राज ने जो नुस्खा निकाला है, वह असोघ है । जाता हूँ, मित्रों को इस स्थान-परिवर्तन की सूचना दिए देता हूँ । तस्लीमात ।

चुकड़०—तस्लीमात !

(दोनों का प्रस्थान)

तीसरा दृश्य

स्थान—शराब की दूकान का सामना

(गाँधी टोपी पहने कुछ लोग दूकान के सामने बैठे हैं । पियकड़राज का दल-बल सहित प्रवेश)

पिय०—आगए पियकड़राज ! करो अब मेरे सामने पिकेटिज़ । हुँह और क्या ?

(आगे बढ़ता है तो एक पिकेटर आकर रोकता है)

पिकेटर—कहाँ जाते हैं, भाई जी !

पिय०—(स्वतः) 'भाई जी !' चचा जी कहते शायद शरम मालूम पड़ती है ?" (आगे बढ़ता है)

पिकेटर—भाई जी, उधर कहाँ जा रहे हैं ?

पिय०—जहन्नुम में ! और क्या ? हट जाओ सामने से !

पिकेटर—जी नहीं, मैं जिन्दा रहते श्रीमान को जहन्नुम में कदापि जाने न दूँगा ।

पिय०—क्यों, क्या तुमने जहन्नुम का ठेका ले रक्खा है या यमराज के उत्तराधिकारी हो ?

पिकेटर—जी नहीं, मैं आपका सेवक हूँ और मेरी प्रार्थना है कि आप वहाँ न जाएँ ।

पिय०—क्यों, यह क्या तुम्हारे बाबा का घर है ?

पिकेटर—जी नहीं, यह बड़ी खराब जगह है, यहाँ आप जैसे शरीफों को नहीं आना चाहिए ।

पिय०—हे सुनो ! यह अपना उपदेश अपने पास रखो । वहाँ तो मुझे गुस्सा आ जायगा, तो दो लपट जड़ दूँगा और पुलिस को बुला कर पकड़वा दूँगा ।

पिकेटर—यह आपकी मेहरबानी है ।

पिय०—लेकिन तुम यहाँ से नहीं हटोगे ?

पिकेटर—जी नहीं !

पिय०—अच्छा, ठहरो । (नेपथ्य की ओर मुँह करके) पुलिस ! ओ पुलिस वाले ! अजी जमादार साहब ! (पिकेटर से) क्यों, नहीं मानोगे, बुलाऊँ ?

पिकेटर—आपकी खुशी ।

पिय०—अच्छा, ठहरो । मैं अभी जाकर तलवार-बन्दूक और तोप-गोले आदि से लैस—एकदम सशस्त्र पुलिस बुला लाता हूँ । (तेजी से प्रस्थान)

पिकेटर—(अन्य लोगों से) भाइयो, आप लोग यहाँ खड़े न रहें । मेहरबानी करके यहाँ से चले जायँ ।

चुकड़०—हम लोग उसी आदमी के साथी हैं । और यहाँ पीने के लिए आए हैं ।

पिकेटर—(अपने साथियों से) आओ भाइयो ! हम लोग इनके पैरों पर लोट जाएँ, आखिर ये भी तो मनुष्य ही हैं, ज़रूर हमारी प्रार्थना पर ध्यान देंगे ।

(सब पिकेटर इन लोगों के पैरों पर लोट जाते हैं)

चुकड़०—(अपने साथी से) क्यों भाई टमटम, ये पैरों पर लोट गए । अब क्या करना चाहिए ?

टमटम—हमारी तो राय है कि लौट चलें ।

चुकड़०—और पियकड़राज जो पुलिस बुलाने गया है ?

टमटम—जाने दो कम्बख्त को, मैं तो इन भले आदमियों को अपनी आँखों के सामने पिटते कभी भी नहीं देख सकता ।

बोतलदास—कभी नहीं ।

चुकड़०—तो फिर क्या इरादा है ?

बोतलदास—बस, चल दो यहाँ से । भाड़ में गया पीना ।

(सबका प्रस्थान दूसरी ओर से पियकड़राज का प्रवेश)

पिय०—राइट लेफ्ट, राइट लेफ्ट, राइट लेफ्ट, आ गए पियकड़राज मय पलटन के । और क्या ? अब देखें, कौन भ्याऊँ के मुँह पर ठहरता है । लेकिन अरे वे हमारे साथी कहाँ गायब हो गए ?

(इधर-उधर ताकता है और साथियों के नाम ले-लेकर पुकारता है)

(सार्जेंट फ्रॉक्स का दो कॉन्स्टेबलों के साथ प्रवेश)

सार्जेंट फ्रॉक्स—(पियकड़राज से) हैलो, काला आदमी ! क्या माँगता है ?

पिय०—सलाम साहब ! हुजूर हम शराब माँगता है—नाहन ! लेकिन यह लोग खरीदने नहीं देता ।

सार्जेंट फ्रॉक्स—कुछ परवा नह । मनी लाओ, हम तुमको शराब ला देगा ।

(पियकड़राज रुपया निकाल कर सार्जेंट को देता है । सार्जेंट किसी पिकेटर को धक्का देता हुआ किसी को चौंथा लगाता हुआ शराब की दुकान से दो बोतलें लाकर—पियकड़राज को देता है । पियकड़राज बोतल लेकर खुशी-खुशी चला जाता है)

पिय०—(जाते हुए) क्यों अब कहाँ गई शेखी ? जब खोपड़ी पर तड़ातड़ पड़ने लगी, तब सारी देश-भक्ति हवा हो गई । लात के देवता बात से थोड़े ही मान सकते हैं !

(पिकेटरों को बोतल दिवाता हुआ पियकड़राज का प्रस्थान)

चौथा दृश्य

स्थान—सड़क । समय—आधी रात ।

(पियकड़राज का बगल में बोतल दबाए भूमते हुए प्रवेश)

पिय०—नशे में मैं है, मैं नशा है, यारो मैं नशे में हूँ । बलाह नशा भी क्या चीज़ है । शरीर में अपूर्व शक्ति का अनुभव होने लगता है । (लड़खड़ाता हुआ) मालूम होता है कि संसार में मैं भी कोई चीज़ हूँ । (गिर पड़ता है) धत्ते की आसमान चकर काटने लगा । (जमीन पर ही बैठा हुआ बोतल को मुँह से लगा कर पीता है) आह ! क्या ज्ञायका है ! भला कॉन्ग्रेस वाले इस ज्ञायके को क्या समझें ? बन्दर अदख के स्वाद को क्या जाने ? (बोतल को कलेजे से चिपका कर) मेरी जानी शराब, मेरी नानी शराब, मेरी मामी शराब !

(बोतल को सामने रख कर घुटनों के बल बैठता है और दोनों हाथ जोड़ कर स्तुति करता है)

देवी सुरेश्वरी भगवति मदिरे,
त्रिभुवन तारिणि तरल तरङ्गे !
बोतल मध्य विहारिणि विमले ।
मम मति रास्तां तव पद कमले ।
रोगं शोकं तापं पापम् ।
हर मे भगवति कुमति कलापम् ।
त्रिभुवन सारे वसुधा हारे ।
त्वमसि गतिर्मम खलु संसारे ।
अलकानन्दे परमानन्दे ।
कुरु कृपा मयि कातर बन्दे
तव तट निकरे यस्य निवासः ।
खलु वैकुण्ठे तस्य निवासः ॥

(दूसरी ओर से एक सिपाही का प्रवेश)

सिपाही—जागते रहना हो—ओ—ओ—ओ ।

(पियकड़राज से टकरा कर गिर पड़ता है)

सिपाही—अरे वाप रे ! ई का भवा ! हम गिरेनि या जमीने ससुरी उलट गई ?

पिय०—सलाम जमादार जी !

सिपाही—(पियकड़राज को देखकर) अच्छा सरज, तुम हौ ? (पियकड़राज के पास जाकर) क्यों वे, यहाँ काहे को बैठा है ?

पिय०—(डर कर) जमादार जी, सलाम !

सिपाही—तेरे सलाम की और जमादार जी की ऐसी-तैसी !

(पियकड़राज की पीठ पर ठोकर जमा कर) क्यों रे, यह रास्ता है, या तेरी झाला का घर ?

पिय०—(कौपता हुआ) जमादार साहब, सरकार हुजूर !

सिपाही—हुजूर-हुजूर कुछ नहीं, चबो थाने में ।

(पियकड़राज को पकड़ कर घसीटता है । सामने से सार्जेंट फ्रॉक्स आता है)

फ्रॉक्स—बया है मैं ?

सिपाही—हुजूर, मतवाला है ।

फ्रॉक्स—ले जाओ थाने में ।

पिय०—अरे साहब, आप इतनी जल्दी मुझे भूल गए ? आपने ही तो कृपा करके मुझे शराब ला दी थी !

फ्रॉक्स—चुप रहो, डेम, स्टुपिड ! हम बाट नहीं माँगता ।

पिय०—साहब, अबकी माफ़ कर दीजिए । कान पकड़ता हूँ । फिर कभी नहीं पिऊँगा ।

फ्रॉक्स—ओ, यू ब्लाडी !

(पियकड़राज की पीठ पर ठोकर जमाता है और वह गिर पड़ता है)

पिय०—(रोता हुआ) हाय ! हाय ! मर गए साहब, दोहाई सरकार की, अबकी माफ़ कर दो । फिर ऐसा काम कभी नहीं करूँगा ।

फ्रॉक्स—(सिपाही से) देखता क्या है ? ले जाओ, इसको यहाँ से ।

पिय०—साहब, अगर आपको यही करना था, तो शराब लाकर क्यों दी थी ? दोहाई साहब, अबकी माफ़ कर दीजिए । मैं क्रम खाता हूँ । फिर कभी शराब न छुऊँगा ।

(सिपाही पियकड़राज को घसीटता है । फ्रॉक्स का प्रस्थान । नेपथ्य में पड़ाखे की आवाज़ होती है । सिपाही डर कर पियकड़राज को छोड़ देता है और दूसरी ओर से एक खहरपोश का घबराप हुआ प्रवेश)

खहरपोश—पुलिस ! पुलिस ! बचाओ ! बचाओ !! डाकू मुझे लूटने के लिए मेरे पीछे लगे हैं । देखो ! देखो ! वह आए ! वह आए !

सिपाही—पुँ ! डाकू आगए ! अरे वाप रे ! (उड़ल कर भागता है)

खहरपोश—(हँसता हुआ) हा हा हा हा ! निर्वल के सामने तो ऐसे तीसमार खाँ बन गए कि जिसका ठिकाना नहीं और डाकू का नाम सुनते ही नानी मर गई ! हा हा हा हा ! बलिहारी है । (पियकड़राज से) जाइए जनाव ! अब आप स्वतन्त्र हैं । जाइए । आपका पश्चात्ताप सुन कर मैंने ही यह झूठमूठ का जाल बिछाया था । जाइए । लेकिन अपने पश्चात्ताप के शब्दों को न भूलिएगा ।

पिय०—(खहरपोश युवक के पैर छूकर) आह आपने मेरी इज्जत बचा ली । शिचा तो मुझे काफ़ी मित्र चुकी है । अब मैं शराब का एक कतरा भी हराम समझता हूँ ।

खहरपोश—ईश्वर आपको सुख दे ।

* * *

दवाइयों में

स्वर्च मत करो

स्वयं वैद्य बन रोग से मुक्त होने के लिए "अनुभूत योगमाला" पाल्कि पत्रिका का नमूना मुफ्त मंगा कर देखिए । पता—मैनेजर अनुभूत योगमाला ऑफिस, बरालोकपुर, इटावा (यू० पी०)

नवीन !

स्प्रिङ्ग वाला !

अद्भुत !

जेब का चरखा

यह हमने अभी तैयार किया है । समूचा लोहे का बना है । इससे की-पुरुष, लड़के-लड़कियाँ बड़े शौक से सूत कात-कात कर ढेर लगा देते हैं । यह चलने में निहायत हलका और देखने में खूबसूरत है । मू० ११/ डा० म० १-१/२

पता—जी० एल० जैसवाल, अलीगढ़



[हिज्र होलीनेस श्री० वृकोदरानन्द विरूपाक्ष]

खेलो रङ्ग अबीर उड़ाओ, लाल-गुलाल लगाओ,
पर अति सुरँग लालचादर को मत बदरङ्ग बनाओ;

न अपना रङ्ग गँवाओ ।

—(हरिऔध)

*

‘दिसि कुञ्जरहु कमठ अहि कोला, धरनि धरहु धरि
धीर न डोला !’ क्योंकि आज होली है, हँसने-हँसाने
का त्योहार है, इसलिए सावधान ! आज श्रीजगद्गुरु
हँसेंगे ? बड़े जोर से ठहाका लगेगा। आसमान गूँज उठेगा
और प्रकृति काँप उठेगी। कमबख्त कुलकुले मीना की
तो हस्ती ही क्या, जो मुक्ताबला कर सके ! हा हा हा हा !

*

आप नाजूक दिमाग वाले हैं, आपके कानों के पर्दे
कोमल हैं। हिज्र होलीनेस की भीमा-भयङ्करी हँसी आप
बर्दाश्त नहीं कर सकेंगे, इसलिए लगवा लीजिए, अपने
कानों में थोड़ी सी रुई या डलवा लीजिए थोड़ा सा
तेल, वरना फट जायगी, कान के पर्दे की कोमल चमड़ी।
हा हा हा हा ! समझे ?

*

हाँ, मॉडरेट राजनीतिज्ञ, कौन्सिलों की कुर्सियों के
सनीचर और सुधार का नाम सुनते ही ‘करिखही हाँडी’
सा मुँह बना लेने वाले सदातनी हँसने की चीज़ नहीं
हैं, इन्हें छोड़ दो अगले मुहर्रम के लिए, उसी शुभ
अवसर पर इनके नामों को रो लेना, सिर धुन लेना
इनकी अत्तल पर और इनकी दन्त निपोरई नीति पर !
इस समय तो बस, जी खोल कर हँसो—हा हा हा हा !

*

क्या कहा ? ये देश के करोड़ों छात्र और विद्यार्थी
नामधारी सपूत हँसने की चीज़ हैं। नहीं-नहीं, ये बेचारे
तो दया के पात्र ! देखते नहीं, इनके चेहरे से
कैसी मासूमियत टपक रही है ! होंठ सूख गए हैं, गालों
पर कुरियाँ पड़ गई हैं, कमर की मुक़ावट कमान से
बाज़ी ले रही है, बिना चरमा के स्वप्न भी नहीं देख
सकते ! ये बीबी का भूविनास तो बर्दाश्त ही नहीं कर
सकते, फिर ठहाका—और वह भी हिज्र होलीनेस का—
कैसे बर्दाश्त कर सकेंगे ?

*

अरे भाई, ये मोम की जीती-जागती पुतलियाँ किसी
अजायबख़ाने में धीरे से सजा कर रख देने के लायक
हैं, ताकि देश में जनानापन की स्मृति कायम रह जाय।
ये न रहें तो विलायती विसातियों का पमेटम, आईना-
कढ़ी, रोज़ पाउडर और बाल उड़ाने का ‘रानी मार्क’
साबुन बिकना बन्द हो जाय। इस होली के अवसर पर
इनके हाल पर हँस दोगे तो बेचारे ओस-कण की भाँति
बिखर पड़ेंगे !

*

पण्डित जी की लोंद भी हँसने की नहीं, वरं अदब
करने की—पूजा करने की चीज़ है। होली के अवसर पर
अगर श्रद्धा-भक्ति पूर्वक चार पैसे घर्च करके उस पर
थोड़ा सा गुलाल पोत दो तो मालूम हो कि मूज़ी की
क्रव पर किसी ने लाल वस्त्र उड़ा दिया है या भिरती

मियाँ ने ईद की छुशी में अपनी मशक पर सुख रङ्ग की
खोल चढ़ा ली है। बड़े मजे की चीज़ है, वह तोंद।
दादा सनातन-धर्म का तो एक मात्र आश्रय-स्थल है।
चारों ओर से हैरान-परेषान होने पर वहीं तो उन्हें थोड़ा
सा विश्राम मिलता है। उस पर हँस कर क्या बेचारे को
बुढ़ीती में खानाबदोश बनाओगे ?

*

यह होली, जिसके उपलक्ष में तुम्हें हँसने की सूझी
है, उसी की महामहिमान्विता तोंद की बदौलत ही तो
बरकरार है। उसी की बदौलत तो आज वर्षों का सड़ा-
गला गलीज़, गोबर, कीचड़ और नाबदान का पानी तक
सार्थक हो जाता है ! उसी की बदौलत तो आज भले घर
की स्त्रियों का—माँ-बहिनों का—रास्ते में निकलना तक
मुश्किल है और उसी की बदौलत तो आज बड़े बाबा
के लिए ‘पतोहू चने की खेती’, ‘छोटी चाची भौजाई
बराबर’, ‘मामी आधी जोय’ (जोड़ू ?), और देवर
जी ‘द्विवर’ अर्थात् द्वितीय वर (!!!) के अपभ्रंश हैं !
भला, ऐसी ‘भानसती की पिठारी’ भी क्या हँसने की
चीज़ है ?

*

‘हिन्दी-साहित्य’ के सपूतगण भी, हँसने की चीज़
नहीं हैं। माशा छलाह, बड़े लायक-फायक, बड़े दूरदर्शी,
बड़े तीसमार खाँ। बिना ‘पितरपख’ के ही बड़े-बड़े
आचार्यों का श्राद्ध कर डालते हैं। उठा लेते हैं कलम तो
बनारस की खटकियों और लखनऊ की भठियारियों के
भी कान कतर कर रख देते हैं ! इनकी बदौलत बारहों
महीने ‘अररर बबीर’ का मज़ा मिल जाता है। लेहाज़ा
ये भी हँसने के लायक नहीं।

*

इनकी लेखनी में फाग का इतना सामान है कि
उतना शायद कलकत्ते की ‘मलबाहिनी’ हरी नदी में भी
न होगा। हरिहर क्षेत्र के मेले के अघोरी तो इनके
शिष्य होने की भी योग्यता नहीं रखते। बेचारे कहाँ
पाएँ उतनी गन्दगी जितनी इनकी अमोघ शक्तिशालिनी
लेखनी उगल देती है। कभी-कभी तो मालूम होता है
कि निगोड़ी को ‘कॉलरा’ हो गया है या उसके दण्ड
पेलने का अखाड़ा कुम्भपाक का सगा साला बन
गया है।

*

इस कमान सी कमर और गलित चर्म तथा पलित
केशों वाले बड़े सनातन-धर्म दादा को देख कर तुम्हें
हँसी आती है। सारा शरीर कीचड़, गोबर और कूड़ा-
करकट से लतफ़्त हो रहा है। मानो बड़े बाबा कहीं
से होली खेल कर आ रहे हैं। हबहू लज़ूर की
शक्ल फ़क़त दुम की कसर है ! आज होली के दिन
ऐसी ‘किम्भूत किमाकार’ सूरत देख कर भला, किस
मुहर्रमी को हँसी न आयगी ? परन्तु हँसने की चीज़
ये नहीं, इनके वे करोड़ों अनुयायी हैं, जिन्होंने इस
बुढ़ीती में बेचारे को होली का भड़गा बना रक्खा है,
जो इन्हें उलू बना कर अपना उलू सीधा किया करते
हैं और जिनकी बदौलत बेचारे को जीते जी नर्क-यातना
भोगनी पड़ रही है !

*

दादा जी के शरीर पर यह होली की गन्दगी नहीं,
दम्भ का कीच है ; नाबदान का पानी नहीं, पाखण्ड के
छींटे हैं ; होलिका-भस्म नहीं, स्वार्थपरता की खाक है।
सारे शरीर से कपट, छल-छन्द, पाप-परायणता, नीचता,
अरलीलता, असभ्यता, ढोंग, पेठ-पूजा और निष्ठुरता
की विकट दुर्गन्ध आ रही है। लाहौल बिलाक़ूवत !
सारा नशा किरकिरा हो गया, होली का मज़ा फीका
पड़ गया। मालूम होता है, ऐन होली के दिन हिज्र
होलीनेस ने किसी सनातानी का मुँह देख लिया है।

*

अच्छों की आह की आँच से बेचारे का सारा शरीर
झुलस गया है, विधवाओं के रक्ताश्रु के छींटे सारे शरीर
पर पड़े हैं, बाल-विवाह का कोढ़ समस्त अङ्ग-प्रत्यङ्ग में
फूट पड़ा है, वृद्ध-विवाह की पूरी-पूरित गन्दगी से
आपाद-मस्तक भर गया है; उफ़ ! उफ़ !! तिलक लगाए,
चिमटा-कमण्डलु लिए; कृपोदर, वृकोदर, राख पोते,
कपड़े रंगाए, और जटा रखाए हुए नाना प्रकार के गुद्धों
की टोलियाँ बेचारे को नोच रही हैं ! आह ! इस बेचारे
बूढ़े की यह दयनीय दशा देख कर तुम्हें हँसी आती है !
उफ़ ! तुम बड़े निष्ठुर हो, बड़े सज़-दिल !

*

ये बूढ़े भारत बाबा भी हँसने की चीज़ नहीं हैं।
पुराने रसिया हैं। त्रेतायुग के श्रीरामचन्द्र के ‘रामराज्य’
से लेकर सखी नौकरशाही के ‘रामराज्य’ तक के मजे
लूट चुके हैं। इन्होंने प्रलयङ्कर शङ्कर का ताण्डव नृत्य
और ‘मिसे-लन्दन’ का ‘बाल-डान्स’ देखा है। बहत्तर
साले बूढ़ों की तरह रिनग्ना-मुग्धा षोडशी के पाणि-
पीडन के लिए सदापाणि पसार रहे हैं। बड़े जहाँदीदा,
बड़े अनुभवी और पुराने जुजुग हैं। इन्हें कोई क्या
हँसेगा ?

*

इन्होंने ब्रजराज और ब्रजवालाओं की होली देखी
है, दिगन्त को वगपायमान करने वाली ‘अररर’ ध्वनि
सुनी है। उन दिनों जब इनके घर होली आती थी तो
वन-उपवन लहलहा उठते थे, कोबिल पञ्चम स्वर में गा
उठती थी, मृदु-मन्द समीर इनके आँगन में अटखेलियाँ
करता था, हिमालय से लेकर बन्पाकुमारी तक और
अटक से लेकर कटक तक—समस्त भारत वसुन्धरा के
रेणुरेणु में होली की मादकता फैल जाती थी। मुदित
नयना नवकलिकाएँ खिल उठती थीं। लोनी लताएँ-
लहन लहलहा उठती थीं और ये हज़ारत भूम-भूम कर
गाने लगते थे :—

है हवा में शराब की तासीर,
बादानोशी है, बादा पैमाई !

*

उन दिनों ये खूब होली के मजे लूटते थे—बहार
का लुफ़ उठाते थे, उस समय इनमें जीवन था। पर
पदान्त गुलाम न थे, स्वाधीन थे। उस समय ये बात के
धनी थे, तलवार के धनी थे और ऐश्वर्य तो इनका पानी
भरता था। आमोद-प्रमोद चिर सहचर और होली की
बहार दासी थी। बस, थोड़े शब्दों में समझ लीजिए
कि उस समय ये ‘हिज्र होलीनेस’ थे—श्रीजगद्गुरु
थे और जब गुनगुनाने का शौक चर्चा था तो पञ्चम-
स्वर में आरम्भ कर देते थे :—

कूक उठी कोयल बन-वन में,

मुच्छित मधुर तरङ्ग सुमन में,

मृग-सद-गन्ध पुहुप मधु भिर-भिर

भूम रही वसुधा मतवाली,

हन मारो पिचकारी यौवन,

बिखर गई उपवन में लाली।

चुन प्रसून अलवेली आली।

*

मगर आजकल सखी नौकरशाही का जमाना है। बारहमासी होली जल रही है। अब इनका फाग बहुधा दुर्भिक्ष और महामारियों के साथ हुआ करता है, मृदङ्ग-ध्वनि की जगह रोगक्रान्त, शोकाकुल, लुधा-पीड़ित और दरिद्रता-दलित नर-कङ्कालों की मर्मर ध्वनि होती है। नियति इनकी दुर्दशा देख कर 'अररर कबीर' गाती है और ये गाते हैं :—

हुआ हूँ इस कदर अफसुर्दा रङ्गे बागे-हस्ती से,
हवाएँ फुल्ले-गुल की भी निशात अजफ़ा नहीं होती।

*

तो क्या हमारी नवेली अलबेली सखी नौकरशाही हँसने की चीज़ है। हर्गिज़ नहीं, उन्हें भला, कौन हँस सकता है? 'के दुई सिर केहि जमु चह लीन्हा?' जानते नहीं, वह आजकल ऑर्डिनेन्स के किले में है। किसकी मजाल है जो उनकी ओर नज़र उठाए, उन्हें कबीर सुनाए या उनके गुलाबी गालों पर अबीर लगाने की धृष्टता कर सके। अपने अखबार वाले 'देवरों' के मुँह में तो उन्होंने १४४ लीवर के ताले के साथ ही 'हरविन मेड' मज़बूत साँकल पहले ही लगा दी है। लेहाज़ा बेचारे, सीता जी के देवर लखनलाल की तरह शान्त और शिष्ट बन गए हैं। पैर के सिवा किसी दूसरे अङ्ग की ओर आँख उठा कर भी नहीं देख सकते।

*

खुदा न करे, अगर किसी मजबूले रावण की नज़र पड़ गई और किसी दिन भिखारी-वेष में, 'बाँधी भीख न लेऊँ सयानी' कह कर ले उड़ा तो बड़ी मुश्किल होगी। कोई 'पटाभूषण' पहचानने वाला भी न मिलेगा और बेचारे जगद्गुरु भाँग-बूटी छोड़कर—“हे खग-मृग हे खावक सैनी, तुम देखी सीता मृगनैनी” की बाँग देते फिरेंगे। खैरियत यही है कि 'जटायु' का पार्ट लेने के लिए हमारे 'मॉडरेट' आई मौजूद हैं, नहीं तो क्रसम खुदा की ऐन फ़रले-बहार में इस बूढ़े भङ्गड़ को आरम-हत्या कर लेनी पड़ती।

*

फ़लतः जनाब, ये मॉडरेट बड़े काम के आदमी हैं। इन्होंने श्रीमती के लहंगे को गाँधी की आँधी से बाल-बाल बचा कर हिज़ होलीनेस को निश्चिन्त कर दिया है। बला से अबकी होली पर उनकी चूनरी बेदाग रह जायगी, गोरे गाल कोरे रह जायेंगे, गुलाल के कण से आँखें लाल न होंगी और होलिहारों की 'अररर ध्वनि' से दौराने-सर की नौबत न आएगी। बेचारे जगद्गुरु खाने-बरबादी की ज़हमत से तो बच जायेंगे। यही क्या कम है। दूर से आँख ढँक कर ही सब कर लेंगे।

*

आइए, ज़रा होली के अवसर पर बेचारे हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन को भी याद कर लें, जिसका ऐन जवानी में 'माँझा' ढीला हो रहा है। आह! लड़कपन में वह कितना शोख था, कितना चुलबुला। मानो बोटी-बोटी फड़क रही थी। उस वक्त उस पर श्रद्धेय श्री० पुरुषोत्तम-दास जी टण्डन की 'समकोण त्रिभुज' सी सुन्दर दाढ़ी का साया था। परन्तु जब से उसी दाढ़ी सा 'त्रिभुजाकार' 'पुरुषोत्तमदास पार्क' इलाहाबाद में बन गया, तब से आपने बेचारे के सर से अपनी साया समेट ली। फ़लतः अब वह आह-सर्द खींच कर कह रहा है :—

असीर पञ्जप शबाव-करके मुझे !

कहाँ गया बचपन मेरा खराब करके मुझे।

*

खैर साहब, अब की हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का बीसवाँ जलसा कलकत्ते में होने वाला है। साल भर से तैयारियाँ हो रही हैं। सब से बड़ी शज़ब की बात तो

यह है कि सुसज्जित स्वागतकारिणी का प्रथम अधिवेशन भी होली से पहले ही हो गया है। कविचक्र चूड़ामणि पण्डित गाङ्गेय नरोत्तम शास्त्री ने सुर्मा-सलाई का ऑर्डर भेज दिया है और 'आकाश-पाताली' धोती वाले पण्डित बनारसीदास जी चतुर्वेदी उसे 'घासलेटीपन' से बचाने के लिए मि० ऐण्ड्यूज से सलाह-मशविरा करने में लगे हैं और 'साहित्य-त्रिवेणी' पण्डित सकल नारायण जी शर्मा लगे हैं, उसके मज़लाथ अपनी बड़ी माला फेरने में।

*

कलकत्ता सम्मेलन की सब से बड़ी विशेषता यह है कि स्वागतकारिणी के अध्यक्ष पण्डित सकल नारायण जी और उसके अन्यतम कर्णधार पं० गाङ्गेय जी, सुर्मा के बड़े शौकीन हैं। इसलिए अगर सभापति का आसन सुप्रसिद्ध 'सुर्मा-सेवक' श्री० रत्नाकर जी सुशोभित करें तो माशा अल्लाह, प्रतिनिधियों को दिन में ही तारे नज़र आने लगें। आशा है, स्वागतकारिणी हिज़ होलीनेस के समीचीन 'संज्ञेशन' पर विचार करेगी।

*

अफ़सोस यही है कि सम्मेलन के समवयस्क और प्रिय-दर्शन सखा श्री० रामशङ्कर जी त्रिपाठी को सखी नौकरशाही ने होली मनाने के लिए अपने मेहमानखाने में बुला लिया है, इसलिए स्वागतकारिणी में 'मछर-हटिया' की बहार ज़रा फीकी रहेगी, परन्तु प्रतिनिधियों के स्वागत समारोह में कोई कमी नहीं आएगी। क्योंकि कलकत्ता के 'हिन्दी-नाट्य परिषद्' ने इस अवसर पर कोई 'भूतो न भविष्यति' नाटक खेलने की इच्छा से अभी से 'चान्दायण' आरम्भ कर दिया है।

*

इसलिए हमारी तो राय है कि होली के शुभ अवसर पर सम्मेलन और परिषद् का 'गँठबन्धन' हो जाय तो कुछ बुरा नहीं। क्योंकि उद्योतिष-शास्त्र के अनुसार दोनों की ग्रह-मैत्री खूब बनती है और दोनों ने "हज़र स्ट्राइक" का भी काफ़ी अभ्यास कर लिया है। इसलिए अगर "टूट टाट-घर टटियौ टूट" हो भी तो "पिय की बाँह उसिसवाँ" होने पर "सुख की लूट" में कोई कमी नहीं आएगी।

*

यद्यपि कुछ साम्य मैत्री वाले इस 'गज़ा और महार' की जोड़ी का विरोध करेंगे और कहेंगे कि सम्मेलन के उपयुक्त पात्री तो काशी की नागरी प्रचारिणी ही हो सकती है। परन्तु उन्हें मालूम होना चाहिए कि अगर ऐसी बात किसी ने कही तो राय साहब फ़ौरन कह उठेंगे,—“यहि सहित गिरि तैं गिरौं, पावक ज़रौं, जियत विवाह न हौं करौं।” इसके अतिरिक्त 'शारदा-ऐकट' भी इस सम्बन्ध का बाधक होगा। और राम-राम, तुम्हें कुछ इतिहास की भी ख़बर है? अमाँ, जिस तरह कुन्ती देवी ने कौमार्यावस्था में कर्ण को प्रसव कर नदी में बहा दिया था, उसी तरह श्रीमती नागरी प्रचारिणी ने भी सम्मेलन को जन्म देकर 'इलाहाबादी धात्रियों' को सौंप दिया था, फ़लतः नागरी प्रचारिणी के साथ.....! छि-छि: ! राम-राम !! तोबा-तोबा !!! लाहौल बिलाक़ूत इला-बिला !!!

*

खैर, जाने दीजिए, आजकल विवाह-लग्न के दिन भी नहीं हैं; शुक्रास्त है। आइए, ज़रा चचा चंचिल की अक्ल पर हँस दें। मगर ख़बरदार, ठाका न लगाइएगा, नहीं तो भड़क जाएँगे। क्योंकि आजकल होली का दिन है, चचा दिन-रात सुरूर में रहते हैं। दूसरे किसी ने कह दिया है कि भारत हाथों से निकला जा रहा है। इससे बेचारे और भी पतलून से बाहर हो गए हैं। भुजाएँ फड़क रही हैं, होंठ चबा रहे हैं, दाँत पीस रहे हैं। मानो

किसी 'होलिहारे' ने रङ्ग का हज़ारा पिचकारा मार दिया हो। ऐसी हालत में अगर ठाका लगाइएगा तो चचा की वही दशा होगी जो छाता देख कर भड़के हुए साँड़ की होती है।

*

किसी ने ठीक कहा है कि “न छेड़ ऐ न कहते वादे-बहारी, राह लग अपनी; तुम्हें अठखेलियाँ सूझी है, हम बेज़ार बैठे हैं।” सब्ज़ चरणों से कालों की तिल्ली फोड़ने का मज़ा हाथों से जारहा है, घाटे के मारे भारतीय नौकरशाही की देवदी पर चूहों के दण्ड पेलने की नौबत आ रही है, गाँधीबाबा सत्याग्रह का कुन्दा अड़ा कर ऐसे डटे हैं कि हटने का नाम ही नहीं लेते और तुम्हें सूझी है हँसने की! वही कहावत हुई कि “किसी का घर जले और कोई हाथ सँके!”

*

हाँ, हँसने लायक एक छोटी सी ख़बर कलकत्ता के 'केसरी' में छपी है। सहयोगी ने लिखा है कि— श्री० वसन्तलाल मुरारका और श्री० मधुसूदनदास वर्मन (दमदम जेल से) “घूर कर” आ गए! खैरियत हुई, भाग्य अच्छे थे जो हिज़ होलीनेस को नज़र नहीं पड़ी, वरना घूरने और आँख सँकने का मज़ा हाथो-हाथ मिल जाता! अमाँ, यह भी कोई तरीका है, किसी भले आदमी के घर जाकर घूरना। कम से कम 'केसरी' वालों को तो इन भले आदमियों से सावधान रहना चाहिए और इन लोगों की इस घासलेटी हरकत की ख़बर पण्डित बनारसीदास जी चतुर्वेदी को कर देना चाहिए।

*

लँगोटी पर फाग खेलनेवाले हमारे बूढ़े बाबा की होली 'ऑर्डिनेन्सों की अस्मा जान' के साथ तख़ल्लिफ़ में हो रही है। अबीर-गुलाल एकत्र करने का भार दादा मुग्धानल की परीक्षोत्तीर्ण छात्री श्रीमती सप्रू बेन और भूपाल वाली 'सुख-आरा' वेगम ने लिया है। बाबा जी को इस होली की ऐसी चाट लगी है, कि कुण्डली की भवकार सुनते ही बिड़ला और बज़ाज के कन्धे टेक कर लम्बे-लम्बे डेग डालने लग जाते हैं। देखते हैं, फागुन की मस्ती लँगोटीबन्द बूढ़ों को भी अछूता नहीं छोड़ती!

*

मगर हिज़ होलीनेस को यह 'कोर्टशिप' की तरह सायँ-सायँ फिस-फिस ज़रा भी अच्छी नहीं लगती। होली खेलने का मज़ा तो यह है कि बकौल बाबा सूरदास—“इतने निकसीं कुँवरि राधिका उतते कुँवर कन्हाई। खेलत फाग परस्पर हिलि-मिलि सोभा बरनि न जाई।” मगर नई दिल्ली की 'ज़िन्नत-महल' तो बारह ऑर्डिनेन्सों की जननी होने पर भी अपने 'रङ्गमहल' का चौखट नाँवना पसन्द नहीं करती तो बेचारे बूढ़े बाबा क्या करें?

*

परन्तु कहीं 'रङ्गमहल' को छुबीली गोरियों ने होली की धोंगा-मस्ती और छोना-भपटी में—“छीन छिपे मुख-सुरभी पितारवर सिर से लुनरि ओढ़ाई। वेंदी भाङ, नयन बिच काजर, नक़वेसर पहिराई—मनौ नइ नारि बनाई” तो बड़ा मज़ा आएगा। चचा चंचिल मारे खुशी के उछल पड़ेंगे। मगर हमारे बूढ़े बाबा पुराने रसिया हैं, लन्दन के 'कोहेक्राफ़' या 'हुरिस्तान' से बेदाग बच कर निकल चुके हैं। यहाँ वह गुड़ नहीं जो चिउंटे खायें।

*

लीजिए जनाब, “बाहर राम-राम और भीतर सिद्ध काम” की कहावत चरितार्थ हो गई। 'भविष्य' के सम्पादक जी डोंग तो मारते हैं समाज सुधारक बनने की और (शेष मैटर ४१ वें पृष्ठ के पहले कॉलम के नीचे देखिए)

होली का नशा

[प्रोफेसर रामपालसिंह, एम० ए०, एम० आर० ए० एस०]

“क्यों ? आज ही होली है ?”

“हाँ, बाबू साहब, आज ही होली है।”

“ओह ! तब तो मैंने बड़ी भूल की, जो यहाँ चला आया। आज तो मुझे अपने घर पर होना चाहिए था।”

“यह भी तो आप ही का घर है।”

“सो तो ठीक है, किन्तु यहाँ वह रजत कहाँ ?”

“कैसी रजत ?”

“अरे भाई, अपने घर पर होता, तो आनन्द से यह उत्सव मनाता। यहाँ तो रिश्तेदारी में आ पड़ा हूँ। वह नाच-रङ्ग यहाँ कहाँ ?”

“तो नाच-रङ्ग के लिए आप क्यों चिन्तित हैं ? हमारे बाबू साहब कुछ ऐसे-वैसे मनहूस तबीयत के आदमी नहीं हैं। वे सोलहो आने ज़िन्दा दिल हैं। आज मोतीबाई का मुजरा होगा। धन की यही तो शोभा है।”

“मोतीबाई कैसी हैं ? कुछ रूप-रङ्ग भी है, मोती पर आब भी है या खाली मोती ही बाई हैं ?”

“अरे बाह ! आप घबराते क्यों हैं ? मोतीबाई को देखते ही आप समझ सकेंगे कि हमारे बाबू साहब कैसे रत्न-पारखी जौहरी हैं।”

२

दिन भर अवीर उड़ी। गुलाल में असंख्य काले भाल लाल हो गए। तीसरे पहर को मोतीबाई का नृत्य आरम्भ हुआ। मुहफिल पर मस्ती छा गई। अवीर की गर्मी और भाँग के नशे ने बाई जी की बाँकी अदाओं और मतवाले नयनों के सामने शिर झुका लिया। आधी

(४०वें पृष्ठ का शेषांश)

बेचारे अपरिवर्तनवादियों को कलम की नुकीली नोक से कोंचा करते हैं। उधर अपने पुरोहित महाशय ‘आर्यमित्र’ की सलाह से ‘मुण्डन-संस्कार’ से पहले ही आपने ‘भविष्य’ की शादी कर दी है, लखनऊ वाली बुढ़िया ‘माधुरी’ से ! अरे भाई, कम से कम श्रीजगद्गुरु को तो इस मौके पर नेवता दिया होता !

❀

देखा आपने इन रंगे सुधारकों की दशा ? मिल गई होगी तिलक में गहरी रकम और भर गया होगा, मुँह में पानी ! उधर ‘आर्यमित्र’ जी ने भी दृष्टि की रकम सीधी की होगी। बस, फिर क्या ? मढ़ दिया बेचारे के गले में एक पुरानी ढड्डो को लेकर और यह भी न सोचा कि श्रीमती कलकतिया ‘मतवाला’ द्वारा ‘रिजेक्टेड’ की पदवी प्राप्त कर चुकी हैं।

❀

बात यह है, कि उस दिन आगरे वाले ‘आर्यमित्र’ के अखाड़े में एक स्वयम्बर-सभा हुई थी, हज़रत ‘भविष्य’ जी भी तमाशा देखने के लिए पहुँच गए थे और फँस गए दुनियादारी के पचड़े में। अब बताइए, क्या किया जाए ? सर हरिसिंह गौड़ के ‘सिविल मैरेज बिल’ को कौन्सिल वालों ने ठुकरा ही दिया है। ‘डाइवोर्स’ को कोई गुआइश ही नहीं रही। लेहाज़ा अब ‘गले पड़ी ढोल बजाए सिद्ध !’ और दूसरा उपाय ही क्या है ?

❀

रात तक सुख्खियों की मजलिस जारी रही। उसके बाद बाई जी को फुर्तत मिली। वह कुछ खा-पीकर आराम करने की तैयारी कर रही थीं, कि इतने में एक अचानक अवस्था का पुरुष उनके कमरे में आ उपस्थित हुआ। बाई जी पहले तो उसकी ओर देखते ही कुछ स्तम्भित सी हो गईं; परन्तु फिर अपने को सँभाल कर खड़ी हुईं और आगन्तुक को कुर्सी पर बिठाते हुए कहा—कहिए, क्या आज्ञा है ?

उत्तर मिला—क्या बताऊँ ? अपने दर्द-दिल की कहानी सुनाने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। आपके गाए हुए एक शेर के एक मिसरे से शायद मेरे हृदय का भाव कुछ-कुछ झलक जावे।

बाई जी ने हँसते-हँसते पूछा—कौन सा है, वह मिसरा ?

आगन्तुक ने कहा—वही जो आज आपने गाया था—‘तुम्हीं ने दर्द दिया है तुम्हीं दवा देना।’

बाई जी ने मुस्कराने हुए कहा—“ओहो, आप दर्द-दिल की दवा लेने यहाँ आए हैं ?” उसकी मुस्कराहट में प्रसन्नता की अपेक्षा घृणा और व्यङ्ग्य अधिक था।

आगन्तुक ने कहा—हाँ मेरे मसीहा !

बाई जी ने कुछ सोचते हुए कहा—मैं आपकी बाँदी हूँ। आपका इरशाद सर-आँखों पर है, किन्तु आज थक गई हूँ। मेहरबानी करके कल तशरीफ़ लाइएगा।

आगन्तुक ने एक ठण्डा साँस लेकर कहा—कल ?

तेरे वादे पर सितमगर, कुछ और सत्र करते। गर अपनी ज़िन्दगी का, मुझे पेटवार होता ॥

वेश्या ने व्यङ्ग्य से कहा—ऐसी बुरी हालत है आपकी ?

“हाँ, प्यारी !”

“अच्छा तो सुनिए, पहले आपको मेरी एक बात माननी पड़ेगी !”

“हाँ-हाँ, फ़रमाइए ज़रूर मानूँगा। कौन सी बात है वह ?”

“मैं पहले एक कहानी आपको सुनाऊँगी। इसके बाद जो कुछ आप इरशाद करेंगे, बजा लाऊँगी।”

“कहानी ?”

“जी हाँ, इससे आपकी तबीयत भी बहलेगी और मैं भी थोड़ी देर तक अपनी थकावट मिटा लूँगी।”

“अच्छी बात है, सुनाइए।”

३

मोती ने एक बार फिर घृणा-भरी नज़रों से आगन्तुक की ओर देखा और कहने लगी—शोभा एक ग्रामीण गृहस्थ की कन्या थी। वह बड़ी ही सुन्दर थी। माता-पिता ने उसका पालन-पोषण भी बड़े लाड़-प्यार से किया था। बाल्यकाल के सुखमय दिन बड़ी शीघ्रता से बीत गए और युवावस्था ने अपने आगमन की सूचना देकर उसके विवाह के लिए चेतावनी दी। परन्तु दरिद्रता में धन से बढ़ कर कोई प्यारी वस्तु नहीं; फलतः उस बेचारी के सिर एक रोगी मढ़ दिया गया।

आगन्तुक ने बीच ही में प्रश्न किया—क्या कन्या के पिता ने धन लिया था ?

मोती ने कहा—लोग तो ऐसा ही कहते हैं। खैर,

शोभा बड़ी अभागिनी थी। वह चार ही महीने बाद विधवा हो गई !

आगन्तुक ने चिढ़क कर पूछा—चार ही महीने बाद ? हाँ, तो फिर क्या हुआ ?

मोती—और क्या होता ? उस बेचारी की भी वही दशा हुई, जो प्रायः हिन्दू विधवाओं की होती है। माता-पिता ने उसे अभागिनी कहा, पड़ोसियों ने कुल-च्छूनी माना, सास ने डाइन की उपाधि दी और ननदों ने उसका नाम कण्टाइन रक्खा। परन्तु गाँव के नवयुवक भ्रमों का तरह उसके घर के चारों ओर मँडराने लगे। पड़ोसी छोक़ों के लिए एक लावारिस भाभी मिल गई। दुःख भार से लदी हुई उसके जीवन की गाड़ी मरमराती हुई आगे बढ़ने लगी। होली का उत्सव आया। सारा गाँव आनन्दोन्मत्त था, परन्तु शोभा एक कोने में बैठी अपने भाग्य को कोस रही थी। इतने में उसके देवर ने अवीर लिए घर में प्रवेश किया। दोनों में घण्टों तक बातें हुई, होली खेली गई। शायद देवर ने विश्वास दिलाया कि विधवा-विवाह शास्त्र-सम्मत है और वह उसे पत्नी रूप में स्वीकार करेगा। ऐसे आश्वासन पर कौन विधवा आत्म-समर्पण न कर देगी ? परन्तु पाप-कर्म कब तक छिप सकता है ? कुछ दिन के बाद ही पड़ोसियों में काना-फूँबी होने लगी। मामला सज़ीन हो गया। देवर जी एकाएक परदेश चले गए।

आगन्तुक ने उत्सुक होकर पूछा—हाँ, तो उस बेचारी शोभा की क्या दशा हुई ?

मोती ने व्यङ्ग्य की हँसी के बाद कहा—मालूम होता है, आपके हृदय में उस बेचारी के प्रति दया का सञ्चार हो रहा है ?

आगन्तुक ने अधीर हो कहा—हाँ, दया की तो बात ही है।

मोती—अच्छा तो सुनिए, अन्त में वह किसी तरह काशी पहुँची और उसने वेश्यावृत्ति का सहारा लिया।

आगन्तुक ने घबड़ा कर पूछा—वेश्या हो गई ?

उत्तर मिला—और नहीं तो क्या डिप्टी कलेक्टर हो जाते ? हाँ, वह वेश्या हो गई और दो-चार वर्षों में वह एक नामी वेश्या हो गई। जिसकी उपस्थिति से सारा समाज अपवित्र हो जाने वाला था, उसके चरखों पर बड़े-बड़े बाबू साहबों के सिर झुकने लगे।

आगन्तुक ने पूछा—तो फिर क्या हुआ ?

मोती—और क्या होता ? उसका रोज़गार खूब चल निकला। ज़िले भर में शोभा बाई का नाम हो गया। एक दिन होली के अवसर पर वह एक देहाती रहस के यहाँ नाच रही थी और वहीं उसके ससुर जी भी आए थे और जिस तरह दर्द को दवा लेने मेरे पास आप आए हैं, उसी तरह वह भी अपनी पुत्र-बधू शोभा के

मोतीबाई की कहानी अभी पूरी भी नहीं हुई थी, कि एकाएक आगन्तुक के दिमाग में एक चक्कर आया और वह धड़ाम से कुर्सी से नीचे जा गिरा। शायद होली का नशा चढ़ आया था !!

*

*

*

अग्रवाल भाई पढ़ें

एक अच्छे घराने की गुणवती कन्या के लिए, जिसकी आयु १४ से ऊपर है, गोत्र गंग है, वर की शीघ्र दरकार है, जो तन्दुरुस्त, सदाचारी, हैसियतदार व सुशिक्षित हो, उम्र १८ से २४ साल के भीतर। विशेष बातें पत्र-व्यवहार से तै करें।

पता :—अग्रवाल-समिति,

D. बलदेव बिर्हड़ा झाँसी JHANSI.



[श्री० हृदनारायण सरीन, बी० ए०]

आ काश स्वच्छ था—नीला था। चन्द्रदेव अपनी चोड़श कलाओं से विश्व को प्रकाशित कर रहे थे। उनके अमृत से सने होठों पर स्निग्ध हँसी विराजमान थी।

ऐसे ही समय में स्थान-स्थान पर लगे हुए, सूखी लकड़ी के ढेरों में द्विजवरों ने एक घृत की आहुति डाल कर अग्नि लगा दी। अग्नि-शिखाएँ प्रज्वलित होकर ऊपर उठ चलीं। होलिका की लपटें अपने प्रियतम के सज्ज होली खेलने के लिए बड़ी बेकली के साथ ऊपर उठने लगीं। दिशाएँ लज्जा से लाज हो उठीं। चन्द्रदेव और जोर से हँस उठे।

लोगों ने एक-दूसरे को अवीर लगाना और भेंटना आरम्भ कर दिया।

वह अलग खड़े हुए मुस्करा रहे थे। उनके हाथ में अवीर थी। वह किसी को भर-मुँह अवीर लगाने की फिराक में खड़े थे।

मैं भी अलग एक किनारे पर खड़ा हुआ था। मेरे हाथ में भी अवीर थी।

अग्नि-शिखाएँ धीरे-धीरे ऊपर उठ कर सुन्दर शून्य में विलीन होती जा रही थीं। कुछ देर बाद लपटें कम हो गईं। मनुष्य भी सब चले गए। मैं अब भी हाथ में अवीर लिए खड़ा था। अचानक वे मेरे निकट आ गए और बोले—तुम मुझसे होली मिलोगे ?

मैंने कुछ उत्तर न देकर उनके श्यामल गालों पर अवीर पोत दी। वह हँस पड़े। उन्होंने भी अपने हाथ की अवीर मेरे मुख पर पोत दी और फिर मुझे अपने बाहु-पाश में बाँध लिया।

२

मैंने उन्हें नेवता नहीं दिया था। फिर भी वह दूसरे दिवस सबेरे ही रज्ज से भरा हजारा-पिचकारी लिए हुए मेरे द्वार पर आ उपस्थित हुए। कल का मिलन भी आश्चर्यमय था और आज का आगमन भी कौतूहल-प्रद हुआ।

उन्होंने आते ही कुण्डी खटखटाई। मैं भानन्द से पड़ा हुआ खगटे ले रहा था, और उसी अपूर्व, आश्चर्यमय, मधुर मिलन का स्वप्न देख रहा था। “खट-खट” की कठोर आवाज़ से मेरी निद्रा भङ्ग हो गई। मैं दौड़ा हुआ बाहर आया। देखा—वह खड़े हुए थे। मैं अवाक रह गया। मैंने कहा—“तुम-तुम !”

वे मुस्करा पड़े—वही रात वाली मधुर मुस्कान ! बोले—हाँ भाई ! मैं ही हूँ। कल होली मिली थी, आज होली खेलने आया हूँ।

इसके पूर्व कि मैं उनकी बात का कुछ उत्तर दूँ, उन्होंने मेरे ऊपर वार कर दिया। उनके पिचकारे में न जाने कितना रज्ज था ! मैं उस रज्ज में सर से पैर तक सराबोर हो गया। उस रज्ज में अजीब मस्ती थी। मैं दौड़ कर उनके हृदय से चिपट गया। यह मिलन प्रथम मिलन से कहीं अधिक सुखकर और मत्त्वपूर्ण था।

३

हम लोग सारा दिन होली खेलते रहे। कभी वह मेरे ऊपर पिचकारी मारते, और कभी मैं उनके ऊपर। रज्ज न मिलने पर सादे पानी की ही वर्षा होती। सारा प्राण्य तरह-तरह के रज्जों में रज्ज गया था। ‘हा-हा-ही-ही’

से घर गूँज रहा था। मुझे उस समय अपना गृह स्वर्ग-सा मालूम दे रहा था।

हम दोनों को होली खेलने में बड़ा मज़ा मिल रहा था। किसी को भी खाने-पीने की सुझ न थी।

रज्ज निवट जाने पर, और पिचकारी टूट जाने पर हम लोगों की होली का अन्त हुआ। अब हम दोनों ने स्नान-भोजन किया। इसके पश्चात् उन्होंने मेरे, और मैंने उनके कपोलों पर एक बार फिर अवीर लगाया तथा गले मिले। अब उन्होंने जाने की सुनाई। मेरा हृदय भीतर ही भीतर रो उठा। मैंने कहा—अभी नहीं, मन भर कर मिल लेने दो तब जाना।

उन्होंने कहा—अब फिर दूसरे वर्ष।

मैंने कहा—सचमुच दूसरे साल आओगे ?

उन्होंने कहा—“हाँ-हाँ” और चले गए।

मैं उसी प्रकार किर्तव्य-विमूढ़ सा खड़ा रहा। उनका नाम तक न पूछ सका। दूसरे साल फिर आवेंगे—इतना ही जानता हूँ।

* * *

एक नई खबर !

एक नई पुस्तक “हारमोनियम, तबला एण्ड बाँसुरी मास्टर” प्रकाशित हुई है। इसमें ७० नई-नई तर्जों के गायनों के अलावा ११२ राग-रागिनी का वर्णन खूब किया गया है। इससे बिना उस्ताद के हारमोनियम, तबला और बाँसुरी बजाना न आवे, तो मूल्य वापिस देने की गारण्टी है। पहिला संस्करण हाथों-हाथ बिक गया। दूसरी बार छप कर तैयार है। मूल्य ११; डा० खर्च १।

पता—गर्ग ऐण्ड कम्पनी नं० ६, हाथरस



जो लोग जादे के दिनों में ताकत के लड्डू खाने के शौकीन तथा हल्कुक हैं, उन्हीं के आग्रह से यह मोदक बहुत ही स्वच्छतापूर्वक, शाकीय विधि से तैयार कराए हैं। यह मोदक ताकत के सभी मोदकों से श्रेष्ठ है। इसमें विशेषता यह है कि और ताकत की दवाओं की तरह यह क्रिजियत नहीं करता; परन्तु इससे दस साफ होता है और पाचन शक्ति बढ़ती तथा भूख खुल कर लगती है। बल-वीर्य, रक्त और सुन्दरता को बढ़ाता है। शरीर हृष्ट-पुष्ट हो जाता है।

१२ लड्डूओं के १ बक्स की कीमत ११; डा० म० अलग

पता—चन्द्रसेन जैन, वैद्य—इटावा



Jadiki Bhai Narain Singh Modak

पढ़ कर गुप्त विद्या द्वारा जो चाहोगे बन जाओगे जिस की इच्छा करोगे मिल जाये गा मुक्त मंगवाओ पता साक लिखो।

गुप्त विद्या प्रचारक आश्रम, लाहौर

एक अचम्भित दृश्य

जादू को डिब्बो

इस डिब्बी के अन्दर सबके सामने रुपया डाल दो और इसको बन्द करके फिर खोलो तो रुपया गायब हो जावेगा और फिर दुबारा बन्द करके डिब्बी खोलोगे तो रुपया मौजूद होगा। बड़ा आश्चर्यजनक दृश्य है। मूल्य ११, डाक-खर्च १।

पता—फ्रैन्सी जादूघर नं० ५,

मदार दरवाजा, अलीगढ़

एक अजीब पुस्तक

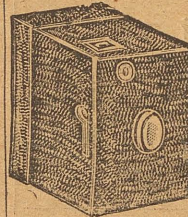
हारमोनियम, तबला व सितार गायक प्रकाशित हुई है, जिसकी मदद से २-३ माह में अनजान आदमी भी हारमोनियम, तबला व सितार बजाना सीख सकता है। क्योंकि इसमें नई-नई तर्जों के गायनों के अलावा राग-रागिनियों का अच्छी तरह से वर्णन किया है। मू० ११) पोस्ट खर्च १) सच्चा इंग्लिश टीचर पृष्ठ २६६; मूल्य डाकव्यय सहित ११।

पता—सत्यसागर कार्यालय नं० २३, अलीगढ़

कम क्रोमती और छोटा केमरा खरोदना रुपया बर्बाद करना है।

फोटोग्राफी सीख कर २००)

मासिक कमा लो



यह नई डिजाइन का रॉयल हैण्ड केमरा अभी आया है। इसमें असली जर्मनी लेंस और स्प्रिङ्ग शटर लगा है और ३।५। इंच के बड़े प्रेस पर टिकाऊ और मनोहर तस्वीर खींचता है। फोटू खींचने में कोई दिक्कत नहीं, स्प्रिङ्ग दबाया कि तस्वीर खिंच गई। फिर भी शर्त यह है कि—

यदि केमरे से तस्वीर न खिंचे तो १००)

नकद इनाम

साथ में प्रेस सैलैक्ट टोनिङ्ग कागज़, प्रेस धोने के तीन मसाले, फोटोग्राफिक लालटेन, २ तश्तरी, तस्वीर छापने का फ्रेम, सरल विधि व स्वदेशी जेबी चर्खा मुफ्त दिया जाता है। मूल्य केवल ४) डाक खर्च १।

पता—माधव ट्रेडिङ्ग कम्पनी, अलीगढ़ नं० ४१

लीजिए

स्वास्थ्य सम्बन्धी उत्तम-उत्तम पुस्तकें लेना हो या शुद्ध अमरीकन होमियोपैथिक औषधि व डॉक्टरी सामान लेना हो या घर बैठे गवर्नमेण्ट रजिस्टर्ड कॉलेज से डिप्लोमा प्राप्त करना हो तो आज ही एक कार्ड भेज कर नियमावली तथा सूचीपत्रादि मंगाइए।

इण्टर नेशनल कॉलेज ऑफ मेडिसिन

३१ बाँसतला गली, कलकत्ता

स्वदेशी हारमोनियम कं० अलीगढ़

देसी रीढ़ का देसी बना हुआ हारमोनियम, मज़बूत, खूबसूरत और सुरीला। पत्र आने पर सूचीपत्र मुफ्त।

हास्यकला का चमत्कार !

हास्योपन्यासों का लकड़दादा !!

श्री० जी० पी० श्रीवास्तव

छप गई !

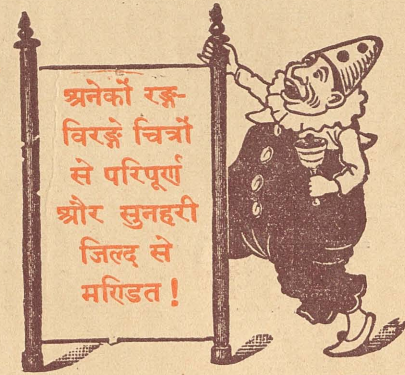
की

प्रकाशित हो गई !!

हास्यमयी लेखनी का अलौकिक चमत्कार !



लतखोरी
लाल



छ: खण्डों में

यह वही उपन्यास है, जिसके लिए हिन्दी-संसार मुदतों से छुटपटा रहा था, जिसके कुछ अंश हिन्दी-पत्रों में निकलते ही अङ्ग्रेजी, गुजराती, उर्दू आदि भाषाओं में अनुवाद हो गए। क्योंकि इसके एक-एक शब्द में वह जादू भरा है कि एक तरफ हँसाते-हँसाते पेट में बल डालता है, तो दूसरी तरफ नौजवानी की मूर्खताओं और गुमराहियों की खिल्ली उड़ा कर उनसे बचने के लिए पाठकों को सचेत करता है। तारीफ है साट-बन्धन की, कि कोई भी बात, जो नवयुवकों पर अपना बुरा प्रभाव डालती है, “श्रीवास्तव जी” के कटाक्ष से बचने नहीं पाई है। हँसी-हँसी में बुराइयों की सुन्दरता और सफ़ाई से धज्जियाँ उड़ा कर ज्ञान और सुधार की धारा बहा देना, कला की गोद में शिक्षा का छिपाए हुए ले चलना बस “श्रीवास्तव जी” ही की महत्वपूर्ण लेखनी का काम है। कहीं फ़ैशन और शान की छीछालेदर है, कहीं स्कूली बदकारियों पर फटकार है, कहीं वेश्यागमन का उपहास है। प्रकृति की अनोखी छुटा निरखनी हो तो इसे पढ़िए, हास्य का आनन्द लूटना हो तो इसे पढ़िए, कला की पहार देखनी हो तो इसे पढ़िए, स्वाभाविकता और सरसता का मज़ा लेना हो तो इसे पढ़िए, बुराइयों से बचना हो तो इसे पढ़िए, गुप्त लीलाओं का रहस्य जानना हो तो इसे पढ़िए, उत्कण्ठा और कुतूहल के समुद्र में डूबना हो तो इसे पढ़िए, भावों पर मुग्ध होना हो तो इसे पढ़िए और ज्ञान पर चकित होना हो तो इसे पढ़िए। इससे बढ़ कर हास्यमय, कौतूहलपूर्ण, आश्चर्य-जनक, रोचक, स्वाभाविक और शिक्षाप्रद उपन्यास कहीं ढूँढ़ने से न मिलेगा। फ़ौरन ऑर्डर भेजिए, हजारों ही ऑर्डर रजिस्टर हो चुके हैं। जल्दी कीजिए, वरना बाद को पछताना होगा।

बड़ो खण्ड एक ही पुस्तक में; मूल्य ४) मात्र ! स्थायी ग्राहकों से ३)

मूल-लेखक—

महात्मा काउण्ट टॉल्स्टॉय

पुनर्जीवन

अनुवादक—

प्रोफ़ेसर खन्नारायण जी
अग्रवाल, बी० ए०

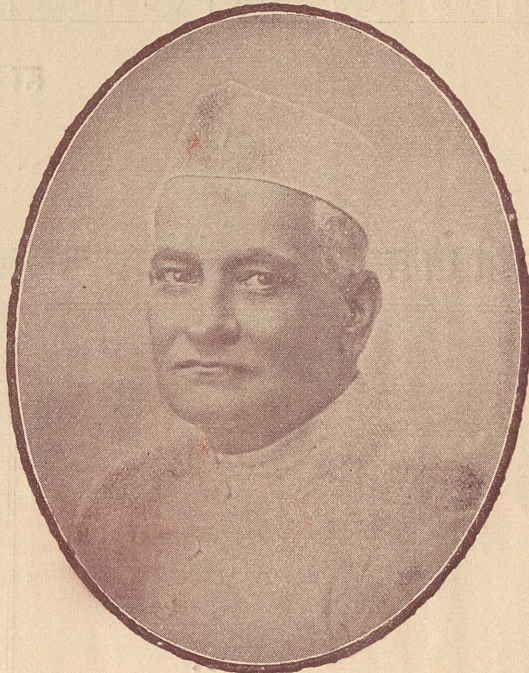
यह रूस के महान् पुरुष काउण्ट लियो टॉल्स्टॉय की अन्तिम कृति है। यह उन्हें सब से अधिक प्रिय थी। इसमें दिखाया गया है कि किस प्रकार कामान्ध पुरुष अपनी अल्प-काल की लिप्सा-शान्ति के लिए एक निर्दोष बालिका का जीवन नष्ट कर देता है; किस प्रकार पाप का उदय होने पर वह अपनी आश्रयदाता के घर से निकाली जाकर अन्य अनेक लुब्ध पुरुषों की वासना-तृप्ति का साधन बनती है; और किस प्रकार अन्त में वह वेश्यावृत्ति ग्रहण कर लेती है। फिर उसके ऊपर हत्या का भूटा अभियोग चलाया जाना, संयोगवश उसके प्रथम भ्रष्टकर्ता का भी ज़ुर्रों में सम्मिलित होना, उसकी ऐसी अवस्था देख कर उसे अपने किए पर अनुताप होना, और उसका निश्चय करना कि चूँकि उसकी इस पतित दशा का एकमात्र वही उत्तरदायी है, इसलिए उसे उसका घोर प्रायश्चित भी करना चाहिए—सब एक-एक करके मनोहारी रूप से सामने आते हैं, और वह प्रायश्चित का कठोर निर्दय-स्वरूप, वह धार्मिक भावनाओं का प्रबल उद्रेक, वह निर्धनों के जीवन के साथ अपना जीवन मिला देने की उत्कट इच्छा, जो उसे साइबेरिया तक खींच कर ले गई थी। पढ़िए और अनुकम्पा के दो-चार आँसू बहाइए। इसमें दिखाया गया है कि उस समय रूस में त्याग के नाम पर किस प्रकार मनुष्य-जाति पर अत्याचार किया जाता था। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय, सजिल्द पुस्तक का मूल्य लागत मात्र केवल ५) स्थायी ग्राहकों से ३।।)

व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, कन्दलोक, इलाहाबाद

'चाँद' के असाधारण-सम्मान से लोग क्यों डाह करते हैं ??

स्वर्गीय पण्डित मोतीलाल
नेहरू :

“मैं उर्दू 'चाँद' के प्रका-
शन का स्वागत करता हूँ।
वह देश की कई आवश्यक-



ताओं की पूर्ति करता है। मुझे
आशा है कि हिन्दी 'चाँद' ने
देश की जो सेवा की है, वही
उर्दू 'चाँद' भी करेगा। मैं
हृदय से उसकी सफलता की
आकांक्षा करता हूँ !”

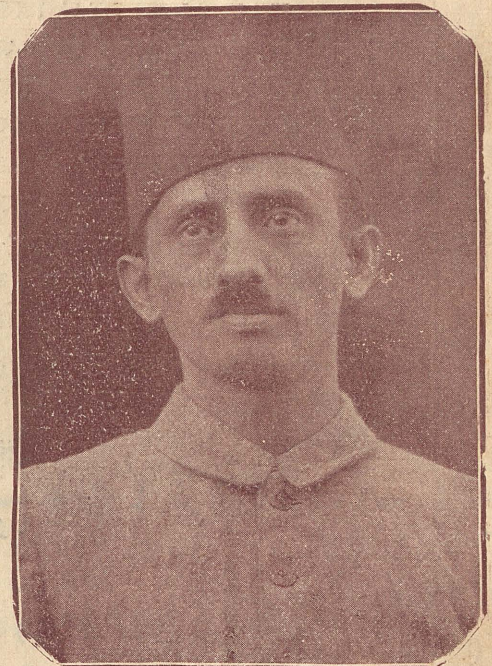
स्वर्गीय पण्डित पं० मोतीलाल नेहरू

श्रीमती सरोजिनी नायडू :

“ईश्वर आपके 'चाँद' की निर्मल प्रभा और
उज्ज्वल ज्योति को सदैव छिटकाए रखें और
सदैव उसकी राहु-असित होने से रक्षा करें।
मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि 'चाँद' स्त्रीत्व के
उन आदर्शों से चमकता रहे, जो हमारी राष्ट्रीय
उन्नति की शक्ति और प्राण हैं।”

बॉम्बे क्रॉनिकल :

“भारत में 'चाँद' ने जो प्रसिद्धि लाभ की है
वह उसी के योग्य है। जो भारतीय सामाजिक
क्रान्ति के पक्ष में हैं, वे 'चाँद' से बहुत लाभ उठा
सकते हैं और साथ ही उसके ग्राहक बन कर
तथा आर्थिक सहायता पहुँचा कर उसके उद्देश्य
की सिद्धि में भी हाथ बटा सकते हैं।”



बॉम्बे क्रॉनिकल के सम्पादक
सैयद अब्दुल्ला ब्रेलवी

श्रीमती सरोजिनी नायडू

दाँता भवानगढ़ के महाराजा,
महाराणा जी श्री० श्री० भवानी-
सिंह जी साहब बहादुर की ओर से
उनके दीवान श्री० सी० एम० भट्ट
लिखते हैं :

“आपने स्त्री-शिक्षा की उन्नति के
लिए जो प्रयास किया है, महाराजा
साहब उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते
हैं। हमारा विचार है, कि जहाँ-जहाँ



हिज़ हाइनेस दाँता भवानगढ़ के महाराज

हिन्दी भाषा बोली जाती है, वहाँ-वहाँ
'चाँद' के स्त्री-शिक्षा सम्बन्धी विचारों
का प्रचार होना अतीव आवश्यक है।
आपने जिस निर्भीकता से सामाजिक
अत्याचारों के विरुद्ध आवाज़ उठा-
कर सुप्त-राष्ट्र की निद्रा भङ्ग की है, वह
अत्यन्त प्रशंसनीय है। स्वयं महाराजा
ने प्रसन्न होकर अगले माह से 'चाँद'
की बारह प्रतियों का ग्राहक होना स्वी-
कार किया है। मेरी हार्दिक इच्छा है कि
आपका पत्र सदैव फूलता-फलता रहे।”

This PDF you are browsing now is in a series of several scanned documents by the Centre for the Study of Developing Societies (CSDS), Delhi

CSDS gratefully acknowledges the enterprise of the following savants/institutions in making the digitization possible:

Historian, Writer and Editor Priyamvad of Kanpur for the Hindi periodicals (Bhavishya, Chand, Madhuri)

Mr. Fuwad Khwaja for the Urdu weekly newspaper Sadaqat, edited by his grandfather and father.

Historian Shahid Amin for facilitating the donation.

British Library's Endangered Archives Programme (EAP-1435) for funding the project that involved rescue, scan, sharing and metadata creation.

ICAS-MP and India Habitat Centre for facilitating exhibitions.

Digital Upload by eGangotri Digital Preservation Trust.

